

43वाँ अंक, अप्रैल 2025 - सितंबर 2025



इंदिरा



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा
पत्रिका

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, राँची



कार्यालय परिसर में ए.डी.ए.आई. एवं पी. डी. महोदय का उनके आगमन पर स्वागत



तत्कालीन सी.ए.जी. महोदय द्वारा लेखापरीक्षा-II भवन का उद्घाटन



सभागार में प्र. महालेखाकार द्वारा चिकित्सीय जांच शिविर का उद्घाटन



प्र. महालेखाकार के साथ ए.डी.ए.आई. एवं पी.डी. (ई.आर.) द्वारा कार्यालय प्रांगण में पौधारोपण



त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण



राजभाषा पत्रिका

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती इन्दु अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संरक्षक

श्री सदानंद नरकर
उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशक परामर्शदातृ समिति

श्रीमती माया कुमारी
उप महालेखाकार

सुश्री अभिरुचि
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

डॉ. मंजेश परासर
सहायक निदेशक (राजभाषा)
(लेखापरीक्षा)

श्री शैलेन्द्र कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)
(एल.ए.डी.)

श्री सुबोध कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमर आनंद मिंज
कनिष्ठ अनुवादक

श्री राजेश साह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक





43वाँ अंक, अप्रैल 2025 - सितंबर 2025

स्वत्वाधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची

प्रकाशन

‘उदयाचल’ (राजभाषा पत्रिका), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची

अंक

43वाँ

आवरण एवं पत्रिका साज-सज्जा

शिवाय इन्टरप्राइजेज, राँची

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं जिनसे ‘उदयाचल’ परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

-संपादक मंडल





मुख्य संरक्षक की कलम से....

हमारे कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका "उदयाचल" का 43वाँ अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी एक ऐसी शक्ति है, जो इस देश की मिट्टी से उपजी है एवं यहीं पुष्पित-पल्लवित हुई है। यह अन्य भारतीय भाषाओं से अपनी शब्द-संपदा, भावनात्मक गहराई एवं साहित्यिक वैशिष्ट्य को समृद्ध करते हुए सभी भाषाओं का प्रतिनिधित्व करती है। राजभाषा हिंदी संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने हेतु संवाद का एक मात्र उत्कृष्ट माध्यम है।

भारत सरकार द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाने वाली अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन राजभाषा के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से पूरे भारत की एकता, अखंडता एवं संप्रभुता के लिए हिंदी की भूमिका के महत्व को प्रदर्शित किया जा रहा है। इसी क्रम में हमारी पत्रिका "उदयाचल" कार्मिकों की सृजनशीलता एवं स्वभाषा के माध्यम से रचनात्मक अभिव्यक्ति का परिचायक है।

पत्रिका के संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएँ !

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा)



संरक्षक की कलम से....

हमारी राजभाषा हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी चेतना, संस्कृति और सभ्यता का आधार भी है। यह वह सेतु है, जो हमारे हृदय के भावों को दूसरों तक पहुँचाती है और हमारी संस्कृति को अगली पीढ़ियों तक संप्रेषित करती है। यह भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विश्व मंच पर भी हमारी पहचान का प्रतीक है। "उदयाचल" इसी दिशा में एक अनवरत प्रयास है। पिछले 42 अंकों की यात्रा के बाद अब यह अपने 43वें पड़ाव पर आ पहुँची है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा का हिस्सा है। यह उन सभी कर्मठ कार्मिकों, रचनाकारों, संपादकों और मार्गदर्शकों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने कार्यालय में हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया है।

आशा करता हूँ कि सुधी पाठकगण अपने अमूल्य सुझावों से पत्रिका की सतत प्रगति में अपना सहयोग देंगे। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु उदयाचल परिवार को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ!

२०/०८/२५

उप महालेखाकार
(प्रशासन)



संपादक की कलम से....

भाषा हमारे अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है, परन्तु इसमें सटीकता या भावों का सही संप्रेषण तभी संभव होता है, जब संप्रेषण अपनी भाषा में हो। हिंदी जो न केवल हमारी भाषा है वरन् यह वैश्विक स्तर पर राष्ट्र का नेतृत्व भी करती है। इसके प्रयोग से हम अपने देश की एकता एवं अखंडता को प्रदर्शित करते हैं। हिंदी का प्रयोग करते समय हमें गौरव की अनुभूति होनी चाहिए क्योंकि यह हमारी पहचान है। आम जीवन के साथ-साथ कार्यालय के कार्यों में हिंदी का प्रयोग न केवल संविधान व देश के प्रति निष्ठा को दर्शाता है बल्कि यह हमारे स्वाभिमान व गौरव को प्रदर्शित करता है। भारत की सभी भाषाएँ हिंदी की सहेलियाँ हैं। हिंदी सबों को साथ लेकर चलती है और सभी के साथ से ही विकसित होती है। इसका सामान्य सा अर्थ है कि हमें अपनी भाषा को अपनाना चाहिए और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। अपनी भाषा और हिंदी सीखने और प्रयोग करने के पश्चात् ही अन्य विदेशी भाषाएँ सीखनी चाहिए, तभी सही मायने में हम विकसित हो पाएंगे।

"उदयाचल" के 43वें अंक का प्रकाशन कार्यालय के कार्मिकों में हिंदी के प्रति अभिरुचि को दर्शाता है तथा इसका सतत् प्रकाशन पत्रिका की लोकप्रियता एवं कार्मिकों की सृजनशीलता को प्रतिबिंबित करता है।

आशा है पत्रिका का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा। पत्रिका के सभी रचनाकारों व संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

मंजेश

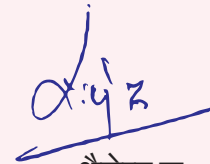
डॉ. मंजेश परासर
सहायक निदेशक (रा.भा.)
(लेखापरीक्षा)



संपादकीय

भारत विविधताओं का देश है। पूरे विश्व की तुलना में यह भाषा, संस्कृति, धर्म और परंपराओं में अद्वितीय रहा है। इन विविधताओं के बीच एकता स्थापित करने में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। इस भूमिका को उत्कृष्टता से निभाने का कार्य हिंदी ने ही किया है और इस कारण यह संपर्क भाषा के पद पर पदस्थापित हो गई। हिंदी का प्रचार-प्रसार भारत के प्रत्येक नागरिक अथवा प्रतिष्ठान का कर्तव्य है। इस क्रम में हमारे कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "उदयाचल" एक सूक्ष्म सहयोग है। पत्रिका में हमने वैश्विक माहौल, पर्यावरण, मानव व्यवहार, लेखापरीक्षा, आध्यात्म, हिंदी सिनेमा इत्यादि विभिन्न पहलुओं वाले लेखों को समाहित करने का प्रयास किया है एवं आगे भी ऐसा करने हेतु प्रतिबद्ध है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए आदरणीय प्रधान महालेखाकार एवं सभी उप महालेखाकारों द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। साथ ही, पत्रिका में अपनी रचनाओं द्वारा दिए गए विशेष सहयोग हेतु मैं सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। मुझे उम्मीद है पाठकगण को "उदयाचल" की कृतियां पसंद आएंगी और वे हमें अपनी प्रतिक्रियाओं से अवश्य अवगत कराएंगे।



शैलेन्द्र कु.
सहायक निदेशक (रा.भा.)
(एल.ए.डी.)



अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	लोकतंत्र में लेखापरीक्षा का महत्व	निरंजन कुमार	8
2.	स्वर्ग - सा पहाड़	शम्भू शरण भारती	9
3.	आज के परिदृश्य में विश्व युद्ध की संभावनाएँ	चंद्र भूषण कुमार	10
4.	मुसाफिर	सदानंद नस्कर	13
5.	अधूरी किताब	रीचा कुमारी	13
6.	ई-वेस्ट: एक पर्यावरणीय चुनौती	सोनू कु.सिंह	14
7.	कच्ची मिट्टी	अमर आनंद मिंज	17
8.	खामोशी -एक संवाद	शिप्रा शालिनी आईद	20
9.	पैदाइशी मिडिल क्लास	अजीत कु. तिवारी	22
10.	फलां ऑफिस, चिलां कमरा	मुकेश कुमार झा	23
11.	मन एवं ज्ञान	राजेश साह	25
12.	माँ-बाप: ईश्वर का प्रत्यक्ष रूप	अमित कुमार रवि	28
13.	हमारी श्रीनगर यात्रा	किशोर कुमार राही	30
14.	एग्रीमेंट (दो इंसानों के बीच बनते-बिगड़ते रिश्तों की कहानी)	बिनोद कुमार प्रभात	35
15.	सिंदूर	कुंदन कुमार	37
16.	विषाक्त कार्य संस्कृति	शैलेन्द्र कुमार	40
17.	हिंदी फिल्मों का सामाजिक प्रभाव: स्त्री दशा के परिप्रेक्ष्य में	इंद्र कुमार झा	43



लोकतंत्र में लेखापरीक्षा का महत्व



निरंजन कुमार
स.लेखापरीक्षा
अधिकारी

लोकतंत्र की सफलता सिर्फ चुनाव कराने तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि शासन व्यवस्था कितनी पारदर्शी और जवाबदेह है। जब जनता सरकार को कर के रूप में अपना धन देती है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि वह धन जनहित में ईमानदारी से और सही दिशा में खर्च किया जाए। इसी कार्य को सुनिश्चित करना लेखापरीक्षा की

जिम्मेदारी है। लेखापरीक्षा लोकतंत्र की आत्मा है, जो सरकार और उसकी नीतियों को सही दिशा में ले जाने का कार्य करता है।

भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में जहां योजनाओं और खर्चों का दायरा बहुत बड़ा है, वहां लेखापरीक्षा सरकार की कार्यप्रणाली की जांच और मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है। यह न केवल वित्तीय अनुशासन को बढ़ावा देता है बल्कि जनता के विश्वास को बनाए रखने में भी सहायक होता है।

लेखापरीक्षा एक स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी संस्था के वित्तीय लेन-देन, परियोजनाओं एवं क्रियाकलापों का मूल्यांकन किया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि सभी कार्य निर्धारित नियमों और दिशा-निर्देशों के अनुसार हो रहे हैं या नहीं। सार्वजनिक धन का उपयोग उचित, प्रभावी और पारदर्शी तरीके से हो रहा है या नहीं, यह चीजें लेखापरीक्षा के माध्यम से सामने आता है।

भारत में यह कार्य मुख्य रूप से नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा किया जाता है। यह संस्था संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 तक के अंतर्गत स्थापित है और इसकी रिपोर्टें संसद और राज्य विधानसभाओं में समय-समय पर प्रस्तुत की जाती हैं।

लोकतंत्र में लेखापरीक्षा के निम्न महत्व हैं :

- सरकारी जवाबदेही सुनिश्चित करना :** लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सरकारें जनता के प्रति उत्तरदायी होती हैं। लेखापरीक्षा यह स्पष्ट करता है कि सरकारी विभागों, योजनाओं और परियोजनाओं में बजट का कितना सही और प्रभावी उपयोग हुआ। यदि किसी योजना में धन का दुरुपयोग या गलत आवंटन होता है, तो लेखापरीक्षा उस पर प्रकाश डालता है और संबंधित अधिकारियों से जवाबदेही तय करता है।
- पारदर्शिता को बढ़ावा देना :** पारदर्शिता लोकतंत्र की नींव है। लेखापरीक्षा की प्रतिवेदनों के माध्यम से जनता को यह पता

चलता है कि सरकार ने किस योजना पर कितना खर्च किया और उसके क्या परिणाम आए। यह पूरी प्रक्रिया शासन को पारदर्शी बनाती है। जब जानकारी खुलकर जनता के सामने आती है, तो अनियमितताएं करना कठिन हो जाता है।

- भ्रष्टाचार पर नियंत्रण :** लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा भ्रष्टाचार है। लेखापरीक्षा सरकारी योजनाओं, निविदा, परियोजनाओं और खरीद प्रक्रियाओं में हुए भ्रष्टाचार को उजागर करता है।

भारत में कई बड़े घोटाले सी.ए.जी. के प्रतिवेदन के माध्यम से ही सामने आए हैं जैसे - 2G स्पेक्ट्रम घोटाला, कोयला आवंटन घोटाला। इससे यह साबित होता है कि लेखापरीक्षा भ्रष्टाचार की रोकथाम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- संसदीय निगरानी को सशक्त बनाना :** भारत में संसद की लोक लेखा समिति (Public Accounts Committee-PAC) लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों का अध्ययन करती है और संबंधित मंत्रालयों से जवाब मांगती है। इससे कार्यपालिका पर विधायिका का नियंत्रण बना रहता है।

लेखापरीक्षा के प्रकार:

- वित्तीय लेखापरीक्षा (Financial Audit):** इसमें यह देखा जाता है कि आय और व्यय का लेखा सही तरीके से रखा गया है या नहीं।
- निष्पादन लेखापरीक्षा (Performance Audit):** इसमें यह जांचा जाता है कि किसी योजना या कार्यक्रम ने निर्धारित लक्ष्य को हासिल किया या नहीं।
- अनुपालन लेखापरीक्षा (Compliance Audit):** यह सुनिश्चित करता है कि सभी कार्य कानून, नियम और प्रक्रियाओं के अनुसार हो रहे हैं या नहीं।

भारत में लेखापरीक्षा की संवैधानिक व्यवस्था

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 में वर्णित किया गया है। यह संस्था पूरी तरह स्वतंत्र होती है और इसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। इसकी रिपोर्टें संसद और राज्य विधानसभाओं के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं।

सी.ए.जी. को संविधान के द्वारा इतना अधिकार दिया गया है कि वह केंद्र और राज्य सरकारों के सभी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र की



कंपनियों और स्वायत्त संस्थाओं के खातों की जांच कर सकता है। यह इसकी निष्पक्षता और प्रभावशीलता को दर्शाता है।

लेखापरीक्षा के समक्ष कुछ चुनौतियां भी हैं, जैसे-

1. **कार्रवाई में देरी:** प्रतिवेदन आने के बाद अक्सर संबंधित मंत्रालय या विभाग समय पर कार्रवाई नहीं करते जिससे लेखापरीक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो पाता।
2. **सीमित संसाधन:** सी.ए.जी. के पास सभी विभागों और योजनाओं का समय पर और गहन लेखापरीक्षा के लिए पर्याप्त संसाधन और मानवबल नहीं होता।

लेखापरीक्षा में कुछ सुधार के सुझाव

1. **प्रतिवेदनों को सरल भाषा में प्रस्तुत करना:** जिससे कि आम जनता भी इसे समझ सके और जागरूक हो सके।
2. **डिजिटल तकनीक का उपयोग:** लेखापरीक्षा में आधुनिक तकनीकों जैसे डेटा एनालिटिक्स, AI और मशीन लर्निंग का उपयोग किया जाए।
3. **समय पर कार्रवाई सुनिश्चित करना:** लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर आधारित सुझावों को लागू करने के लिए समय सीमा निर्धारित की जाए।
4. **जनता की भागीदारी बढ़ाना:** आरटीआई, जनसुनवाई और सोशल मीडिया के माध्यम से नागरिकों की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।
5. **स्वतंत्रता को बनाए रखना:** सी.ए.जी. जैसी संस्थाओं की स्वतंत्रता को हर स्थिति में सुनिश्चित की जानी चाहिए।

लेखापरीक्षा लोकतंत्र की नींव को मजबूत करता है। यह शासन को पारदर्शी, जवाबदेह और जनोन्मुखी बनाता है। यह न केवल सरकारी कार्यों की जांच करता है, बल्कि उन्हें दिशा भी देता है। भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने, संसाधनों के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करने और नीतियों में सुधार लाने में लेखापरीक्षा की भूमिका अतुलनीय है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जहां करोड़ों लोगों की उम्मीदें सरकार से जुड़ी होती हैं, वहां लेखापरीक्षा ही वह माध्यम है जो सरकार को सचेत करता है कि वह जनता के धन का सदुपयोग करे। यह न केवल शासन की गड़बड़ियों को उजागर करता है बल्कि उसे सुधारने की दिशा भी दिखाता है।

इसलिए कहा जा सकता है कि यदि लोकतंत्र को सच्चे अर्थों में सफल बनाना है, तो लेखापरीक्षा की व्यवस्था को और मजबूत, पारदर्शी और जवाबदेह बनाना होगा तभी हम एक न्यायपूर्ण, सशक्त और समावेशी लोकतंत्र की दिशा में बढ़ सकते हैं।



शम्भू शरण भारती
से.नि.व.लेखापरीक्षा
अधिकारी

स्वर्ग-सा पहाड़

स्वर्ग-सा पहाड़, सबका स्वप्न होता है, जिसका दीदार।

दरकती दीवारें, घसकती जमीन
सैलाबों में समाता ज़िंदगी

हर पल कयामत से डरती ज़िंदगी।।

टेढ़ा होता आँगन, तिरछी होती छत

अधटूटे घर जिसमें, रहता है दिनभर अंधेरा
दरारों से भी झाँकता रहता है, मौत का बसेरा।

आता है जैसे ही बरसात, बहता सैलाब

दिखता है मिसाइल्स से भी भयावह

वर्षा की बूँद सदा देता रहता है

मौत की आहट, मन में रहता सदा भय व घबराहट।।

जरा सी हलचल पर, टूटती रहती है नींद

दरकती दीवारें, घसकती ज़मीन,

सदा टूटती उम्मीद, कर... कर... करती

चीखती व सिसकती पहाड़,

जैसे उसमें समाया रेत व बवंडर।।

पहाड़ की चढ़ाई-उतराई में खप चुकी सारी ज़िंदगी

ना गुस्सा ना डर, सिर्फ मलाल ही मलाल।

तिनका-तिनका जोड़कर बनाया था छोटा-सा महल

आज उसे देख ढहते व दरकते

सदा रहता सहमा-सहमा सा दिला।।

आकुल पुकार, एकदम चुप

जैसे रो-रोकर थक गई हो ज़िंदगी।

दरकती दीवारें, सिसकता पहाड़

धसकती ज़मीन, स्वर्ग-सा पहाड़।।





आज के परिदृश्य में विश्व युद्ध की संभावनाएँ



चंद्र भूषण कुमार
लेखापरीक्षक

भूमिका

वर्तमान विश्व एक अत्यंत संवेदनशील मोड़ पर खड़ा है। 20वीं शताब्दी में दो भीषण विश्व युद्धों ने मानवता को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया था। आज, 21वीं शताब्दी में जबकि विज्ञान, तकनीक और वैश्विक जुड़ाव ने अद्भुत ऊँचाइयाँ छू ली हैं। वहीं दूसरी ओर, विभिन्न देशों के बीच बढ़ते राजनीतिक तनाव, क्षेत्रीय संघर्ष, सैन्य प्रतियोगिता और वैचारिक मतभेदों ने तीसरे विश्व युद्ध की आशंका को जन्म दे दिया है।

1. ऐतिहासिक दृष्टिकोण: अतीत से वर्तमान तक

(अ) प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध: एक झलक

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) और द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) ने यह सिद्ध किया कि जब वैश्विक शक्तियाँ संघर्ष में लिप्त होती हैं तो न केवल सैन्य बल प्रभावित होता है, बल्कि आम जनमानस, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण भी उसका शिकार बनते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत 28 जून, 1914 को ऑस्ट्रियाई आर्कड्युक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या से हुई थी। इस हत्या के बाद, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया पर युद्ध की घोषणा कर दी, जिससे यूरोप में तनाव बढ़ गया और कई देशों को युद्ध में शामिल होना पड़ा।

द्वितीय विश्व युद्ध की नींव हिटलर की विस्तारवादी नीति और वर्साय संधि की कठोर शर्तों में छिपी थी। आमतौर पर, द्वितीय विश्व युद्ध 1 सितंबर 1939 को शुरू माना जाता है। एडॉल्फ हिटलर के नेतृत्व में नाजी जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया, जिसके बाद यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। इन दोनों युद्धों से यह स्पष्ट हुआ कि वैश्विक संतुलन बिगड़ने पर मानवीय विनाश अवश्यभावी है।

(ब) शीत युद्ध में छिपा हुआ युद्ध:

अमेरिका और सोवियत संघ के बीच 1945 के बाद आरंभ हुआ यह युद्ध सीधे युद्ध न होकर विचारधारा, राजनीति और शक्ति प्रदर्शन का मुकाबला एवं तकनीकी, वैचारिक और कूटनीतिक प्रतिस्पर्धा का भी प्रतीक था। इस दौरान भी विश्व एक वैश्विक युद्ध के मुहाने तक पहुँच चुका था, विशेषकर क्यूबा मिसाइल संकट (1962) के दौरान। क्यूबाई मिसाइल संकट (क्यूबा में अक्टूबर संकट के रूप में जाना जाता है) शीत युद्ध के दौरान अक्टूबर, 1962 में सोवियत संघ, क्यूबा और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच एक टकराव था। यह युद्ध 13 दिनों तक चला एक गंभीर टकराव था। यह संकट तब शुरू हुआ जब अमेरिकी खुफिया जानकारी ने क्यूबा में सोवियत परमाणु मिसाइलें स्थापित करने का खुलासा किया था। क्यूबा, अमेरिका का पड़ोसी देश, सोवियत संघ का सहयोगी था। जिससे दोनों देशों के बीच परमाणु युद्ध का खतरा मंडराने लगा।

2. वर्तमान परिदृश्य: नई चुनौतियाँ और तनाव

(अ) रूस-यूक्रेन युद्ध:

2022 में शुरू हुआ रूस-यूक्रेन युद्ध न केवल दो देशों के बीच का सैन्य टकराव है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति का केंद्र बन चुका है। यह युद्ध रूस द्वारा यूक्रेन के “विमुद्रीकरण” और “अनाज़ीकरण” की मांग करने वाले “विशेष सैन्य अभियान” की घोषणा पर शुरू हुआ था। अमेरिका और नाटो का समर्थन यूक्रेन को मिल रहा है, वहीं रूस अपनी शक्ति के प्रदर्शन हेतु प्रतिबद्ध है। इस युद्ध से निम्नलिखित खतरे उत्पन्न हो चुके हैं:

- (क) यूरोप में अस्थिरता
- (ख) ऊर्जा आपूर्ति में संकट
- (ग) वैश्विक महँगाई
- (घ) परमाणु युद्ध की अप्रत्यक्ष धमकी



(ब) इजराइल-गाजा संघर्ष:

इजराइल और हमास के बीच वर्षों से चला आ रहा टकराव एक बार फिर भड़क चुका है। हमास के कब्जे के जवाब में, इजराइल ने गाजा में लोगों और सामानों के आने-जाने पर कड़ी पाबंदी लगा दी। गाजा के लगभग 70% कर्मचारी बेरोजगार हो गए या उन्हें वेतन नहीं मिला और लगभग 80% निवासी गरीबी में जी रहे थे। हमास के कब्जे के बाद से, गाजा और इजराइल में फिलिस्तीनी सशस्त्र समूहों के बीच संघर्ष जारी रहा। इस संघर्ष के पीछे धार्मिक, राजनीतिक और क्षेत्रीय विवाद हैं। यदि यह संघर्ष मध्य-पूर्व के अन्य देशों को अपनी चपेट में लेता है, तो यह एक व्यापक युद्ध का कारण बन सकती है।

(स) चीन-ताइवान विवाद:

चीन द्वारा ताइवान को अपना अंग मानना और ताइवान की स्वतंत्रता की आकांक्षा वैश्विक भू-राजनीति का बड़ा संकट बन गई है। चीन, ताइवान को अपना विद्रोही राज्य मानता है। एक ओर जहां ताइवान स्वयं को स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र मानता है, वहीं चीन का मानना है कि ताइवान को चीन में शामिल होना चाहिए और फिर इसके लिए चाहे बल प्रयोग ही क्यों न करना पड़े। अमेरिका सहित कई देश ताइवान को समर्थन दे रहे हैं। यदि यह तनाव सशस्त्र संघर्ष में बदलता है तो अमेरिका और चीन जैसी दो महाशक्तियाँ आमने-सामने युद्ध के लिए खड़ी हो जाएंगी।

3. वैश्विक राजनीति और महाशक्तियों की भूमिका

(अ) अमेरिका बनाम चीन:

चीन की "वन बेल्ट वन रोड (One Belt One Road - OBOR) या बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (Belt and Road Initiative - BRI)" नीति, चीन की एक महत्वाकांक्षी बुनियादी ढांचा और निवेश परियोजना है। इसका उद्देश्य चीन को सड़क, रेल और समुद्री मार्गों के नेटवर्क से एशिया, अफ्रीका और यूरोप के देशों से जोड़ना है। यह चीन की विदेश नीति का एक प्रमुख हिस्सा माना जाता है। चीन की "वन बेल्ट वन रोड" दक्षिण चीन सागर में सैन्य विस्तार और तकनीकी वर्चस्व की चाह अमेरिका के लिए एक चुनौती बन गई है।



अमेरिका, जापान, भारत और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर "क्वाड" के माध्यम से चीन को संतुलित करने का प्रयास कर रहा है। यह शक्ति संतुलन बिगड़ने की स्थिति में युद्ध/संघर्ष को जन्म दे सकती है।

(ब) भारत-पाकिस्तान संबंध:

भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से तनाव बना हुआ है, विशेष रूप से कश्मीर के मुद्दे को लेकर। इसके अतिरिक्त, सीमा पार आतंकवाद, सिंधु जल संधि और सर क्रीक जैसे मुद्दे भी दोनों देशों के बीच तनाव का कारण हैं। दोनों देशों के पास परमाणु हथियार हैं। किसी भी आतंकवादी घटना या सैन्य टकराव से क्षेत्रीय युद्ध और वैश्विक टकराव की संभावना बन सकती है।

4. आधुनिक युद्ध: स्वरूप में बदलाव

(अ) पारंपरिक युद्ध बनाम आधुनिक युद्ध:

अब युद्ध केवल सीमाओं पर लड़े जाने वाले टैंकों और बंदूकों तक सीमित नहीं रह गया है। आधुनिक युद्ध के स्वरूप निम्नलिखित हैं:

- (क) साइबर युद्ध: देशों की रक्षा प्रणालियों, वित्तीय संस्थाओं और मीडिया नेटवर्क पर साइबर हमले।
- (ख) सूचना युद्ध: सोशल मीडिया के माध्यम से दुष्प्रचार और मनोवैज्ञानिक युद्ध।
- (ग) ड्रोन युद्ध: रिमोट-नियंत्रित हथियारों द्वारा हमले।
- (घ) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित हथियार: निर्णय लेने की स्वचालित क्षमता वाले घातक हथियार।

(ब) जैविक और रासायनिक युद्ध:

- (क) कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने यह सवाल उठाया कि क्या भविष्य के युद्ध जैविक हथियारों से लड़े जाएंगे?
- (ख) चीन पर यह आरोप भी लगे कि वायरस एक प्रयोगशाला से निकला जो एक नए प्रकार के जैविक युद्ध की शुरुआत हो सकती है।

5. परमाणु युद्ध: संभावनाएँ और खतरे

दुनिया में लगभग 12,000 से अधिक परमाणु हथियार हैं। ये हथियार नौ देशों के पास हैं: रूस, अमेरिका, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन, भारत, पाकिस्तान, इजरायल और उत्तर कोरिया। जिनमें अधिकांश अमेरिका, रूस, चीन, भारत, पाकिस्तान और उत्तर कोरिया के पास हैं। परमाणु युद्ध के संभावित परिणाम:

- (क) लाखों की तात्कालिक मृत्यु
- (ख) दीर्घकालिक रेडिएशन प्रभाव



- (ग) पर्यावरणीय असंतुलन
- (घ) वैश्विक तापमान में गिरावट ("न्यूक्लियर विंटर")
- (ङ) खाद्य और जल संकट

एक छोटी सी चूक या उत्तेजना परमाणु युद्ध को जन्म दे सकती है जो मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा है।

6. अंतरराष्ट्रीय संगठन और शांति प्रयास

(अ) संयुक्त राष्ट्र (UNO):

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना का उद्देश्य ही था, विश्व शांति बनाए रखना। परंतु सुरक्षा परिषद में वीटो की शक्ति महाशक्तियों के बीच पक्षपात को जन्म देती है। अनेक संघर्षों में संयुक्त राष्ट्र की निष्क्रियता प्रश्नचिह्न उत्पन्न करती है।

(ब) क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहल:

- (क) G20: आर्थिक स्थिरता हेतु वैश्विक सहयोग
- (ख) BRICS: विकासशील देशों की आवाज उठाना।
- (ग) SCO (शंघाई सहयोग संगठन): एशियाई सुरक्षा और विकास।
- (घ) नोबेल शांति पुरस्कार और वैश्विक आंदोलनों: जैसे "यूएन पीसकीपिंग", "ग्लोबल सीजफायर मूवमेंट"।

ये सभी पहल सराहनीय हैं, परंतु इनकी प्रभावशीलता तब बढ़ेगी जब महाशक्तियाँ स्वयं संयम बरतें।

7. युद्ध से मानवता को होने वाले नुकसान

- (अ) जनहानि और मानवीय पीड़ा: लाखों लोगों की मौत, विस्थापन और बाल अधिकारों का उल्लंघन।
- (ब) आर्थिक विनाश: युद्ध में शामिल देशों की GDP गिरती है, बेरोजगारी बढ़ती है और महंगाई चरम पर होती है।
- (स) सांस्कृतिक और शैक्षणिक हानि: स्कूल, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय नष्ट हो जाते हैं। सभ्यता के केंद्र ध्वस्त होते हैं।
- (द) प्राकृतिक संसाधनों पर असर: जल, वायु, भूमि सभी प्रदूषित होते हैं। वन और जीव-जंतु समाप्त हो जाते हैं।

8. समाधान: संभावित रास्ते और नीतियाँ

(अ) संवाद और कूटनीति:

- (क) देशों को सैन्य ताकत के बजाय कूटनीतिक संवाद पर बल देना चाहिए।
- (ख) बैक-चैनल डिप्लोमेसी और टेबल टॉक को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

(ब) शिक्षा और जन-जागरूकता:

- (क) युद्ध-विरोधी विचारों को शिक्षा में स्थान देना।

- (ख) शांति, सहिष्णुता और वैश्विक नागरिकता का प्रचार-प्रसार।

(स) हथियार नियंत्रण और निरस्त्रीकरण:

- (क) परमाणु निरस्त्रीकरण समझौते जैसे START (Strategic Arms Reduction Treaty), CTBT (Comprehensive Nuclear-Test-Ban Treaty) को पुनर्जीवित करना या इन संधियों को फिर से लागू करना या उनका नवीनीकरण करना। START एक द्विपक्षीय समझौता है जो अमेरिका और रूस के बीच परमाणु हथियारों की संख्या को कम करने के लिए बनाया गया था।

CTBT, एक बहुपक्षीय समझौता है जो सभी प्रकार के परमाणु परीक्षण विस्फोटों पर प्रतिबंध लगाता है। इन संधियों को पुनर्जीवित करने से परमाणु हथियारों की दौड़ को रोकने और वैश्विक सुरक्षा को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

- (ख) हथियारों की होड़ पर अंकुश लगाना।

(द) वैश्विक सहयोग:

- (क) जलवायु परिवर्तन, महामारी, गरीबी जैसे साझा विषयों पर सहयोग को प्राथमिकता देना।
- (ख) आर्थिक असमानता दूर कर संघर्ष की जड़ें खत्म करना।
- (ग) विभिन्न देशों, संगठनों, या व्यक्तियों का एक साथ मिलकर काम करना ताकि साझा चुनौतियों का समाधान किया जा सके और सामान्य लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। यह सहयोग व्यापार, विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य और शांति जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो सकते हैं।

निष्कर्ष:

तीसरा विश्व युद्ध एक कल्पना नहीं, बल्कि संभाव्यता है। यदि हमने इतिहास से सबक न लिया तो आज की दुनिया आपस में इतनी जुड़ी हुई है कि एक देश की समस्या, दूसरे की त्रासदी का कारण बन सकती है। यदि सभी देशों द्वारा संयम, संवाद और सह-अस्तित्व की भावना को नहीं अपनाया गया तो देश का भविष्य केवल विनाश और अंधकार से भर जाएगा। विचारों, व्यवहारों और नीतियों में शांति की स्थायी स्थापना ही मानवता को बचा सकती है, इसलिए हम सभी को समय रहते जागना होगा।





मुसाफ़िर



सदानंद नरस्कर
उप महालेखाकार

मिलेगा एक चौराहा ज़िंदगी के हर मोड़ पर
चुन लो सही रास्ता घर बार सब छोड़ कर ॥
चुन ली जो गलत राह,
अग्नि सागर में करना होगा दाह ॥

बाल्यावस्था में थी बड़े होने की आस,
सोचता था तब पूरी होगी सारी प्यास ।
बड़े होने पर लगता है अब,
कश्मकश भरे दिन से बचपन ही अच्छा था तब ॥

मिलन और विरह है ज़िंदगी का अटूट भाग,
एक है पाला तो दूजा लगाए आग ।
फिर भी ज़िंदगी की है अपनी धुन
आप, मैं और सब लो इसको सुन ॥

जीवन में सुख और दुख पहिए का चक्र है
सुख में रखना है लगाम, होना न दुःख में वक्र है
जो सुख में लगाम रखे और दुख में सुखसृति को याद करे
वही मुसाफ़िर – जो हमेशा
आलोक के रास्ते पर चले ।



अधूरी किताब



रीचा कुमारी
लेखापरीक्षक

मैंने लिखी है एक किताब, जिसमें कुछ पन्ने मोड़ रखी है
कुछ पन्ने खाली ही छोड़ रखी है।
सुना है अधूरी किताबें कोई पढ़ता नहीं,
शायद पढ़ ना ले कोई, इसलिए आगे कुछ लिखा नहीं।

पर तुम पढ़ना इसे, अपना वक्त निकाल के,
रखी है अपने तकिए के नीचे इसे संभाल के।

शुरुआत के कुछ पन्ने भीगे होंगी, कुछ लिखावटें धुंधली मिलेगी,
छलके होंगे आँसू जिनमें, वो बातें अनकही, अधूरी मिलेगी।
तीसरे पन्ने में लिखी तुम्हारी एक शायरी मिलेगी,
सूखे गुलाब के नीचे एक खत और तस्वीर हमारी मिलेगी।

याद है वो पल जब तुम मुझसे मिलने आये थे,
खत और गुलाब चुपके से मुझे पकड़ाए थे।
उसे पल्लू में छुपाये अंजान खड़ी थी,
क्या लिखा है तुमने, सब जानकर भी नादान खड़ी थी।

छोड़ो ये सब, पुरानी बातें अक्सर बहका देती है,
लिखने बैठूँ जब भी, तुम्हारी यादें सब भूला देती है।

एक बात कह दूँ, इस बार मान लेना,
मुड़े हुए पन्नों को मुड़ा ही छोड़ देना।
एक भी पन्ना खुला तो जान जाओगे,
मेरी झूठी हंसी को पहचान जाओगे।

हो ना जाए तुम्हें तकलीफ़, इसलिए पन्नों को मोड़ रखा है,
यादों की किताब में कुछ लम्हों को छोड़ रखा है।

कुछ खाली पन्ने, चलो तुम ही लिख दो,
गलतियाँ हमारी ना छुपाओ, मन में जो हो वो सब कह दो।

पर आखिरी पन्ना खाली ही छोड़ देना,
शिकायतें अगर ज्यादा हो तो बीच में ही कलम तोड़ देना।

आखिरी पन्ना साथ लिखेंगे या इसे अधूरा ही छोड़ देंगे,
अगर हो गई किताब पूरी, तो इसके सारे पन्नों को मोड़ देंगे।



ई-वेस्ट: एक पर्यावरणीय चुनौती



सोनू कु.सिंह

आ.प्रविष्टि प्रचालक

प्रस्तावना

आज के तकनीकी युग में मानव जीवन तेजी से डिजिटल हो रहा है। हर दिन नए-नए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल, कंप्यूटर, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन आदि बन रहे हैं और पुराने उपकरण अनुपयोगी हो रहे हैं। इन अनुपयोगी उपकरणों को जब फेंका जाता है तो ये ई-वेस्ट (E-Waste) कहलाते हैं। ये ई-वेस्ट पर्यावरण और मानव जीवन के लिए एक गंभीर समस्या बनते जा रहे हैं।

ई-वेस्ट एक ऐसा कचरा है जो सामान्य घरेलू कचरे से अलग होता है। इसमें जहरीले रसायन, धातुएँ और प्लास्टिक शामिल होते हैं, जो जल, वायु और मिट्टी को प्रदूषित करते हैं। अतः इसका सही प्रबंधन नितांत आवश्यक है।

ई-वेस्ट क्या है?

ई-वेस्ट का पूर्ण रूप है "इलेक्ट्रॉनिक कचरा"। यह उन इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को कहा जाता है जो या तो खराब हो चुकी हैं या अब उपयोग में नहीं ली जाती।

इनमें शामिल हैं:

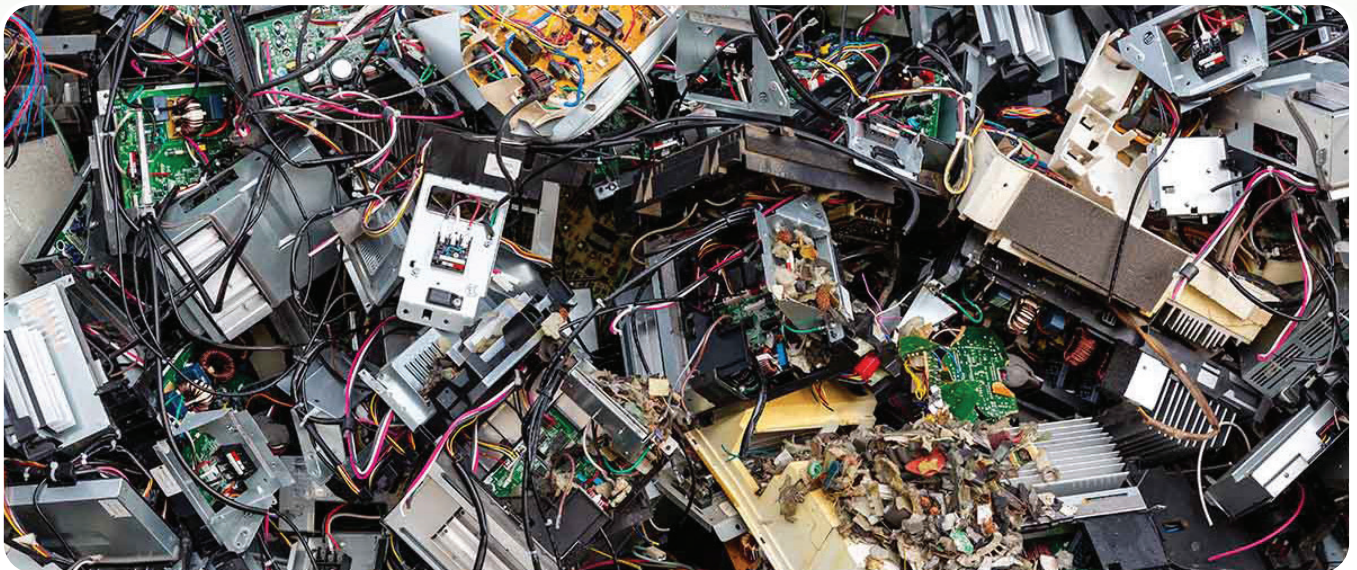
पुराने मोबाइल फोन, टूटे हुए टीवी या कंप्यूटर, खराब फ्रिज, माइक्रोवेव, प्रयोग में न आने वाले चार्जर, बैटरी, केबल्स इत्यादि जैसे ई-वेस्ट के अंदर कई प्रकार की धातुएँ होती हैं – जैसे कि सीसा, पारा,

कैडमियम, आर्सेनिक और प्लास्टिक जो पर्यावरण के लिए अत्यंत हानिकारक हैं।

ई-वेस्ट के स्रोत

ई-वेस्ट की उत्पत्ति के कई स्रोत हैं। आधुनिक जीवनशैली और तकनीकी विकास ने इसकी मात्रा को कई गुना बढ़ा दिया है। प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:

- घरेलू उपकरण
- पुराने मोबाइल, रेडियो, मिक्सर, टीवी, फ्रिज, वॉशिंग मशीन इत्यादि।
- लोग जैसे ही नया मॉडल खरीदते हैं, पुराने को फेंक देते हैं।
- वाणिज्यिक व औद्योगिक संस्थान (Commercial & Industrial Sources)
- कार्यालयों में उपयोग किए जाने वाले कंप्यूटर, प्रिंटर, फोटोकॉपी मशीनें इत्यादि।
- बैंकों और स्कूलों से भी बड़ी मात्रा में ई-वेस्ट निकलता है।
- चिकित्सा उपकरण (Medical Equipment)
- प्रयोग में नहीं आने वाली एक्स-रे मशीन, स्कैनर, वेंटिलेटर आदि।
- इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण इकाइयाँ (Manufacturing Units)
- निर्माण प्रक्रिया के दौरान अनुपयोगी पुर्जे, खराब सर्किट बोर्ड, चिप्स इत्यादि।





ई-वेस्ट के घटक

ई-वेस्ट में कई प्रकार के भौतिक और रासायनिक घटक होते हैं, जिनमें से कुछ मूल्यवान होते हैं और कुछ अत्यंत विषैले।

मुख्य घटक: घटक विवरण

- सीसा (Lead) कंप्यूटर मॉनिटर और बैटरी में पाया जाता है; तंत्रिका तंत्र के लिए हानिकारक।
- पारा (Mercury) एलसीडी स्क्रीन और स्विच में; जल और मछलियों को विषाक्त करता है।
- कैडमियम (Cadmium) बैटरियों में; गुर्दों को नुकसान पहुँचाता है।
- क्रोमियम (Chromium) धातु को जंग से बचाने के लिए प्रयोग; कैंसरकारी हो सकता है।
- प्लास्टिक और पीवीसी जलाने पर डाइऑक्सिन उत्पन्न करता है जो हवा को जहरीला बनाता है।
- सोना, चांदी, कॉपर मूल्यवान धातुएँ होती हैं, जिन्हें फिर से प्राप्त किया जा सकता है।

ई-वेस्ट के पर्यावरणीय प्रभाव (Environmental Impact of E-Waste)

ई-वेस्ट का अनुचित निपटान (जैसे खुले में जलाना, जमीन में गाड़ना या नदी में फेंकना) हमारे पर्यावरण को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।



मुख्य प्रभाव:

मिट्टी प्रदूषण: ई-वेस्ट में मौजूद भारी धातुएँ और रसायन जमीन में रिसकर उसे जहरीला बना देते हैं। इससे खेती की जमीन बंजर हो जाती है।

जल प्रदूषण: जब यह कचरा पानी में बहाया जाता है या बारिश से रसायन जमीन से रिसते हैं, तो वे भू-जल और सतही जल स्रोतों को विषाक्त बना देते हैं।

वायु प्रदूषण: ई-वेस्ट को जलाने से डाइऑक्सिन, फ्यूरोन और अन्य विषैली गैसों निकलती हैं, जो सांस लेने की समस्या पैदा करती हैं और वातावरण को दूषित करती हैं।

जैव विविधता को खतरा: प्रदूषित मिट्टी और जल, जीवन चक्र को बाधित करता है। इससे पौधे, जानवर और सूक्ष्मजीवों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

ई-वेस्ट से निकलने वाले रसायनों का मानव शरीर पर गहरा असर पड़ता है, विशेष रूप से तब जब इसका निपटान खुले में या बिना सुरक्षा उपायों के किया जाए।

प्रमुख स्वास्थ्य प्रभाव:

रासायनिक प्रभाव: सीसे से मस्तिष्क विकास में बाधा, बच्चों में मानसिक दुर्बलता होती है। पारे से तंत्रिका तंत्र को नुकसान होता है तथा स्मरण शक्ति में भी कमी आती है। कैडमियम के दुष्प्रभाव से गुर्दे और हड्डियों को क्षति पहुँचती है। क्रोमियम कैंसर उत्पन्न कर सकता है। डाइऑक्सिन और फ्यूरोन श्वसन तंत्र पर बुरा असर, त्वचा और आंखों की जलन पैदा कर सकता है।

विशेष रूप से प्रभावित लोग:

असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक जो सुरक्षात्मक उपकरणों के बिना ई-वेस्ट को छांटते और जलाते हैं। बच्चों और गर्भवती महिलाओं पर रसायनों का असर अधिक गहरा होता है।

भारत में ई-वेस्ट की स्थिति

भारत दुनिया में तीसरे स्थान पर है जहाँ सबसे ज़्यादा ई-वेस्ट उत्पन्न होता है। तेजी से बढ़ता डिजिटलीकरण और सरस्ते इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की अधिक उपलब्धता इसका मुख्य कारण है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

- भारत में हर साल लगभग 20 लाख टन ई-वेस्ट उत्पन्न होता है (2024 के अनुमान के अनुसार)।



- महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, दिल्ली जैसे राज्य सबसे अधिक ई-वेस्ट उत्पन्न करते हैं।
- भारत में केवल 10-12% ई-वेस्ट ही औपचारिक रूप से रिसाइकल होता है।
- बाकी ई-वेस्ट अनौपचारिक क्षेत्र में छोटे कबाड़ी, रीसाइक्लिंग वर्कशॉप्स आदि के ज़रिए बिना सुरक्षा उपायों के निपटाया जाता है।

चुनौतियाँ:

- जागरूकता की कमी।
- रीसाइक्लिंग के लिए पंजीकृत इकाइयों की सीमित संख्या।
- प्रभावी कानूनों का अनुपालन नहीं होना।
- असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों को प्रशिक्षण व सुरक्षा उपकरणों की कमी।

ई-वेस्ट प्रबंधन के उपाय

ई-वेस्ट की समस्या से निपटने के लिए सामूहिक और बहु-स्तरीय प्रयासों की आवश्यकता है।

पुनः उपयोग (Reuse): पुराने उपकरणों को मरम्मत कर फिर से उपयोग में लाना। उपयोगी पुर्जों को अलग कर नए उपकरणों में लगाना।

पुनरावर्तन (Recycling): ई-वेस्ट को मान्यता प्राप्त पुनरावर्तन इकाइयों में भेजना। धातुओं जैसे सोना, तांबा आदि का दोबारा प्रयोग करना।

जन जागरूकता (Public Awareness): लोगों को यह सिखाना कि ई-वेस्ट को कैसे अलग रखें और कहाँ जमा करें। स्कूल, कॉलेज और टीवी के माध्यम से ई-वेस्ट प्रबंधन का प्रचार किया जाए। कंपनियों को अपने बेचे गए उपकरणों का वापस संग्रहण और पुनरावर्तन सुनिश्चित करना चाहिए।

संग्रह केंद्र (Collection Centres): हर नगर/शहर में ई-वेस्ट के लिए अलग संग्रहण केंद्र स्थापित होने चाहिए।

सरकार की नीतियाँ और कानून (Government Policies & Laws) :

भारत सरकार ने ई-वेस्ट के प्रबंधन के लिए कुछ महत्वपूर्ण कानून और दिशा-निर्देश बनाए हैं:

ई-वेस्ट (प्रबंधन) नियम, 2016: कंपनियों पर Extended Producer Responsibility (EPR) लागू की गई। प्रत्येक निर्माता को अपने उत्पाद के जीवनचक्र के अंत में उसे इकट्ठा करने और पुनरावर्तित कराने की जिम्मेदारी दी गई।

अधिकृत पुनरावर्तन इकाइयाँ: सरकार ने पंजीकृत रिसाइकलर्स को अनुमति दी है कि पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ई-वेस्ट को पुनरावर्तित किया जाए।

अनौपचारिक क्षेत्र पर नियंत्रण: खुले में जलाना, खतरनाक तरीके से ई-वेस्ट छांटना प्रतिबंधित है।

डिजिटल इंडिया और स्वच्छ भारत मिशन से जोड़ना: ई-वेस्ट प्रबंधन को इन अभियानों से जोड़ा गया है ताकि जागरूकता बढ़ाई जा सके।

व्यक्तिगत स्तर पर समाधान

हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह ई-वेस्ट प्रबंधन में अपना योगदान दे। कुछ सुझाव:

- इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का सोच-समझकर प्रयोग करें। जरूरत से ज्यादा गैजेट्स न खरीदें। मरम्मत करवाकर फिर से उपयोग करें।
- सही तरीके से ई-वेस्ट का निपटान करें। नजदीकी ई-वेस्ट कलेक्शन सेंटर पर जमा करें।
- दूसरों को जागरूक करें। अपने मित्रों, परिवार और समाज को ई-वेस्ट के खतरों और समाधान की जानकारी दें।
- ई-वेस्ट रिटर्न ऐप्स और वेबसाइट्स का उपयोग करें। जैसे: Karo Sambhav, Namo E-waste, Attero Recycling इत्यादि।

निष्कर्ष

ई-वेस्ट एक नवीन और तेजी से बढ़ती हुई पर्यावरणीय चुनौती है। यह न केवल हमारे परिवेश को, बल्कि मानव स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। यदि हम अभी भी सजग नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ियाँ इसके दुष्परिणाम झेलेंगी। सरकार, उद्योग, नागरिक और संस्थान - सभी को मिलकर एक जिम्मेदार और सतत ई-वेस्ट प्रबंधन की ओर कदम बढ़ाना होगा। तकनीक के साथ संतुलन बनाकर ही हम एक सुरक्षित और स्वच्छ भविष्य की ओर अग्रसर हो सकते हैं।



कच्ची मिट्टी



अमर आनंद मिश्र
कनिष्ठ अनुवादक

“वह राजा का बेटा है। उसे सज़ा नहीं मिलेगी।”- महाराज धृतराष्ट्र ने घोषणा किया। भीष्म पितामाह ने धृतराष्ट्र को बताया था कि उसके बेटे दुर्योधन ने अपने चचेरे भाई भीम को ज़हर दिया था। यह एक गंभीर अपराध था, जो न केवल दुर्योधन की ईर्ष्या की भावना को दर्शाता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि उसका चरित्र बचपन से ही गलत दिशा में जा रहा था। यह न्याय

के हिसाब से सही था कि धृतराष्ट्र को अपने नौ साल के बेटे को सज़ा देना चाहिए था ताकि वह भविष्य में ऐसी गलती दोहराने से पहले हजार बार सोचें। लेकिन हुआ इसके विपरीत। धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को सज़ा नहीं दिया।

दशकों बाद, दुर्योधन की आकांक्षा भी बदल गई। वह पांडवों को राज्य से ही हटा देना चाहता था। उसने पांडवों से आपसी मित्रता मजबूत करने के लिए पासे के खेल के लिए बुलाया। छल से वह पासे के खेल के साथ-साथ पूरा राज्य व द्रौपदी को भी जीतने में सफल हो गया। फिर वही हुआ जो सभा में उपस्थित कोई भी सोच नहीं सकता था। दुर्योधन के आदेश पर दुःशासन ने भरी सभा में द्रौपदी का वस्त्रहरण करने का प्रयास किया था। धृतराष्ट्र ने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन अब दुर्योधन कोई बच्चा नहीं था जिसे डाँटकर समझाया जा सकता था।

उपर्युक्त घटना से पता चलता है कि दुर्योधन अब हाथ से निकल चुका था। यदि बचपन से ही उसे सही शिक्षा दी जाती, तो उसे सुधारने की उम्मीदें बरकरार रहती। वह शरीर से शक्तिशाली पर इंसानियत से काफी कमजोर या कहें भीतर से टूटा हुआ व्यक्ति बन चुका था।

अब वर्तमान में आते हैं। मजबूत बच्चे और भीतर से टूटे हुए व्यक्ति कैसे बनते हैं? आईए इसपर चर्चा करते हैं।

मजबूत बच्चों का अर्थ केवल शरीर से मजबूती नहीं होता है। बल्कि इसका अर्थ मानसिक रूप से मजबूती भी होता है। कुछ बच्चे होते हैं जिन्हें बचपन से ही सही और गलत में फर्क पता होता है।



ऐसे बच्चे बड़े होकर मजबूत या कहें शक्तिशाली व्यक्ति बनते हैं। इसके विपरीत, टूटे हुए व्यक्ति बचपन में नैतिकता के अभाव के कारण बनते हैं। ऐसे लोग शारीरिक रूप से मजबूत हो सकते हैं, लेकिन उनकी विचारधारा लोगों के हितों के विपरीत होती है। फलस्वरूप नैतिकता रहित बचपन से ही टूटे हुए व्यक्ति बनते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि भीतर से टूटे हुए व्यक्ति को सुधारने की अपेक्षा मजबूत बच्चों का निर्माण करना ज्यादा क्यों आसान है? मजबूत बच्चों का निर्माण करना ज्यादा आसान है क्योंकि कोई भी बच्चा बिना नैतिकता के पैदा नहीं होता है। जैसे नर्सरी के बच्चे रंग या जात देखकर मित्रता नहीं करते हैं। उनका मन कच्ची मिट्टी जैसा होता है जिसे कुम्हार आकार देता है। यदि अच्छा कुम्हार मिले तो वह अच्छी तरह से मिट्टी को आकार देगा। इसे हम अच्छी शिक्षा से तुलना कर सकते हैं। जैसे- एक बीज को खाद, पानी, सूर्य का प्रकाश एवं अन्य पोषक तत्व की आवश्यकता होती है, ताकि वह बीज भविष्य में एक मजबूत वृक्ष या पौधा के रूप में बड़ा हो। उसी प्रकार, अच्छी शिक्षा से बच्चों को बचपन में ही सींचा जाना अनिवार्य होता है। इससे समान उदाहरण हार्पर ली के द्वारा रचित उपन्यास “टु किल ए मॉकिंगबर्ड” में देखा जा सकता है। उपन्यास 18वीं सदी में अमेरिका के एक गाँव के इर्द-गिर्द घूमती है। इसमें मुख्य पात्र एटिकस (पिता) अपने बच्चे स्काउट और जेम को रंगभेद नीति से परे मानवता का ज्ञान देते हैं। फलस्वरूप उनके बच्चे अपने पिता के सिद्धांत के अनुरूप ही ढल जाते हैं।

एक और उदाहरण स्वामी विवेकानंद जी का है। बचपन में नरेंद्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानंद का बचपन का नाम) काफी जिद्दी और शरारती थे। उनकी जीवनी में बताया गया है कि वे अपने दोस्तों के साथ गलत संगत में पड़ गए थे और कई बार गलत कामों में लिप्त हो गए थे। लेकिन उनकी माँ भुवनेश्वरी देवी और उनके पिता विश्वनाथ दत्त ने उन्हें सही रास्ता दिखाया। उनकी माँ ने उन्हें संस्कार और नैतिकता का महत्व सिखाया और पिता ने उन्हें तर्क और ज्ञान की राह दिखाई। उनकी सख्ती और मार्गदर्शन की वजह से नरेंद्रनाथ का रास्ता सुधरा। अगर ये मार्गदर्शन न मिला होता तो शायद नरेंद्रनाथ वो स्वामी विवेकानंद न बन पाते, जिन्होंने विश्व मंच पर भारत की आध्यात्मिकता का परचम लहराया। यह उदाहरण दर्शाता है कि छोटी उम्र में गलत मूल्यों को सुधारना आसान है अगर सही मार्गदर्शन और अनुशासन मिले।

दूसरी ओर, टूटे हुए इंसान को सुधारना मुश्किल है।



क्योंकि इसमें पुरानी सोच को भूलकर नई सोच सीखनी पड़ती है। इसके लिए समय और मेहनत चाहिए। यही वजह है कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के मुताबिक ज्यादातर गंभीर अपराधी पहले भी कोई न कोई अपराध कर चुके होते हैं। उन्हें सुधारना और भी मुश्किल होता है।

इसके अलावा, जब आपराधिक प्रवृत्ति वाले बच्चे बड़े होते हैं तो उनमें अहंकार आ जाता है। वे दूसरों की बात सुनना पसंद नहीं करते। उदाहरण के लिए मंदोदरी रावण की पत्नी और लंका की रानी थी। रामायण में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने कई बार रावण को गलत रास्ते से हटाने की कोशिश की, खासकर, भगवान राम की पत्नी सीता के हरण के मामले में। उनकी विनती और रावण की जिद का यह प्रसंग इस बात का प्रतीक है कि कैसे टूटे हुए इंसान की सोच को बदलना मुश्किल होता है, खासकर जब वह अहंकार और अपनी गलत सोच में डूबा हो।

इसी तरह, आइंस्टीन ने कहा था, “हमारा संसार परमाणु दिग्गजों और अनैतिक बच्चों का है।” आज की दुनिया टूटे हुए मूल्यों और भागदौड़ भरी जिंदगी से भरी हुई है। “और चाहिए, और चाहिए....” की सोच लगातार बढ़ते उपभोक्तावाद के साथ, हर मिनट टूटे हुए इंसान बन रहे हैं।

ध्यातव्य हो कि स्वामी विवेकानंद का कथन भी इसी से संबंधित है, “अपनी दृष्टि खोना, आंखें खोने से भी बदतर है।” यह हमें याद दिलाता है कि समाज की असली ताकत उसके नैतिक और वैचारिक दृष्टिकोण में होती है। मणिपुर की वह घटना जिसमें कुछ असमाजिक तत्वों द्वारा दो महिलाओं को नग्न अवस्था में सार्वजनिक रूप से घुमाया गया। ऐसे दुःखद प्रसंग हमें चेतावनी देते हैं कि टूटे हुए इंसानों से भरा समाज अपनी मानवता और दृष्टि खो देता है। इसे रोकने के लिए हमें बच्चों को मजबूत बनाना होगा। साथ ही, टूटे हुए इंसानों को सुधारने के लिए एक सहानुभूतिपूर्ण और सुधारात्मक व्यवस्था बनानी होगी। केवल तभी हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जो मानवता के मूल्यों को जीवित रखे।

आचार्य प्रशांत के शब्दों में कहे तो तकनीक स्वयं में न तो अच्छी है और न ही बुरी; यह उस मनुष्य की चेतना पर निर्भर करती है जो इसका उपयोग करता है। ऐसे टूटे हुए इंसान अपने अहंकार, लालच और स्वार्थ में डूबे होते हैं। ये अपनी बुद्धि और संसाधनों का उपयोग ऐसी तकनीकों के विकास में करते हैं जो मानवता और प्रकृति के लिए विनाशकारी साबित होती हैं। इसका उदाहरण है, परमाणु बम, हाइपरसोनिक मिसाइलें और बड़े पैमाने पर जंगल काटने वाली मशीनों का निर्माण।

टूटे हुए इंसान, जो अपनी नैतिक मूल्यों को खो चुके होते हैं, देश

की आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बन सकते हैं। उनकी बुद्धिमत्ता और शिक्षा, जो समाज के कल्याण के लिए उपयोग होनी चाहिए, लालच और स्वार्थ के कारण अनैतिक कार्यों में बदल जाती है। नीरव मोदी और हर्षद मेहता जैसे लोग इसके स्पष्ट उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी शिक्षा और बुद्धि का दुरुपयोग कर भारत की अर्थव्यवस्था को करोड़ों रुपये का नुकसान पहुंचाया।

“हालांकि बच्चे विश्व की 40% आबादी हैं, लेकिन वे हमारे भविष्य का 100% हैं।” यह कथन गहराई से इस सत्य को रेखांकित करता है कि बच्चों का निर्माण न केवल समाज की वर्तमान स्थिति को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों और पूरी मानवता के भविष्य को आकार देने का आधार है। जब तक हम बच्चों को सत्य, करुणा और नैतिकता की नींव पर मजबूत नहीं बनाते, तब तक समाज में टूटे हुए इंसानों का चक्र टूट नहीं सकता। मजबूत बच्चों का निर्माण एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज को नैतिकता, सहानुभूति और जागरूकता की ओर ले जाती है। इसे हासिल करने के लिए हमें कई स्तरों पर काम करना होगा-घर से लेकर स्कूल और सामाजिक व्यवस्था तक।

निम्नवत तरीकों से हम मजबूत बच्चों का निर्माण कर सकते हैं, जो न केवल अपने लिए, बल्कि समाज और विश्व के लिए एक सकारात्मक भविष्य का निर्माण करेंगे-

1. घर: पहली पाठशाला- बच्चे का पहला स्कूल उसका घर होता है। घर वह जगह है जहां बच्चे के मूल्य, विश्वास और चरित्र की नींव पड़ती है। यदि घर में प्यार, सहानुभूति और सम्मान का माहौल हो, तो बच्चा स्वाभाविक रूप से इन गुणों को आत्मसात करता है। इसमें माता-पिता बच्चों को केवल आदेश देने के बजाय उनके विचारों और भावनाओं को सुनते हैं। बच्चे को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल किया जाता है, जिससे उनमें आत्मविश्वास और जिम्मेदारी का भाव विकसित होता है। उदाहरण के लिए, बच्चे से पूछना कि वह अपने दोस्तों के साथ समय कैसे बिताना चाहता है या उसे स्कूल प्रोजेक्ट में क्या करना पसंद है, उसे स्वतंत्र सोचने की क्षमता देता है। इसके अतिरिक्त बच्चों को उसकी मातृभाषा में ही प्रारंभिक शिक्षा देने पर जोर देनी चाहिए।

2. प्यार और सहानुभूति का महत्व- प्यार और सहानुभूति वह आधार हैं जो बच्चे को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाते हैं। जब बच्चे को यह महसूस होता है कि उसकी भावनाओं को समझा और सम्मान दिया जाता है, तो वह दूसरों के प्रति भी वैसी ही संवेदनशीलता दिखाता है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चा स्कूल में किसी बात से परेशान है, तो माता-पिता को उसे



डांटने की बजाय उसकी बात सुनकर समाधान सुझाना चाहिए। यह बच्चे को यह सिखाता है कि समस्याओं का समाधान हिंसा या गुस्से से नहीं, बल्कि समझदारी और सहानुभूति से किया जा सकता है।

3. बौद्धिक विकास- बौद्धिक विकास केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए। बच्चों को तर्क, विश्लेषण और रचनात्मक सोच सिखानी चाहिए। उदाहरण के लिए, स्कूलों में डिबेट और प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधन करने की कला सिखानी चाहिए। सहानुभूति, करुणा और दूसरों के प्रति सम्मान जैसे मूल्य उन्हें भावनात्मक रूप से मजबूत बनाते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता बच्चों को सही और गलत के बीच अंतर समझने में मदद करती है।

4. आध्यात्मिक विकास- यह बच्चे को सत्य और आत्म-जागरूकता की ओर ले जाता है। बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और सत्य की खोज है। ध्यान, दर्शन और नैतिक कहानियों के माध्यम से यह संभव है।

उदाहरण के लिए, एनईपी 2020 में समग्र शिक्षा पर जोर दिया गया है, जिसमें बच्चों को न केवल विज्ञान और गणित, बल्कि कला, नैतिकता और पर्यावरण के प्रति जागरूकता भी सिखाई जाती है।

5. सकारात्मक उदाहरण- बच्चे अनुकरण करते हैं। बच्चे स्वाभाविक रूप से अनुकरण करने वाले होते हैं। वे अपने आसपास के लोगों खासकर माता-पिता, शिक्षकों और समाज के अन्य सदस्यों-के व्यवहार को देखकर सीखते हैं। इसलिए, हमें बच्चों को ऐसा कुछ देना होगा जो अनुकरण करने योग्य हो।

6. निरीक्षण द्वारा सीखना- बच्चे अपने आस-पास के परिवेश से सीखते हैं। अगर समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा और स्वार्थ को बढ़ावा मिलता है, तो बच्चे भी वही सीखेंगे। इसके विपरीत, अगर समाज में नैतिकता और सहानुभूति को महत्व दिया जाता है, तो बच्चे इन मूल्यों को आत्मसात करेंगे।

हमें अपने व्यवहार से बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल बनना होगा। अगर हम चाहते हैं कि बच्चे मजबूत बनें, तो हमें स्वयं सत्य, करुणा और नैतिकता का उदाहरण प्रस्तुत करना होगा।

टूटे हुए इंसानों को सुधारना एक कठिन कार्य है, लेकिन असंभव नहीं। इसके लिए हमें एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनानी होगी जो सजा देने के बजाय सुधार पर जोर दे। वर्तमान में हमारी सामाजिक और कानूनी व्यवस्था अक्सर सजा पर केंद्रित होती है। लेकिन सजा से ज्यादा महत्वपूर्ण है व्यक्ति को अपनी गलतियों का एहसास कराना और उसे सही रास्ते पर लाना। उदाहरण के लिए, जेलों में सुधार कार्यक्रम, काउंसलिंग और शिक्षा के माध्यम से अपराधियों को समाज में पुनः स्थान दिया जा सकता है।

अब दुर्योधन की कहानी पर पुनः लौटते हैं। यदि धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को भीम को जहर देने के लिए सजा दी होती, तो वह एक मजबूत बच्चा बन सकता था। यह सजा उसे नैतिकता, करुणा और जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाता और वह टूटा हुआ इंसान न बनता। इसके परिणामस्वरूप महाभारत जैसे विनाशकारी युद्ध को टाला जा सकता था और कौरव वंश का नामो-निशान भी नहीं मिटता।





खामोशी - एक संवाद



शिखा शालिनी
कनिष्ठ अनुवादक

व्यक्ति खामोश कब होता है, जब उसे लगता है कि उसकी बात या तो सुनी नहीं जा रही है या उसकी बात का उत्तर नकारात्मक ढंग से मिल रहा है या उसकी बात पर कोई हंगामा, हो-हल्ला और लड़ाई-झगड़ा होने की संभावना होती है। अधिकांशतः तब व्यक्ति खामोश हो जाता है।

कहा गया है कि खामोशी की भी अपनी एक जुबान होती है। कभी किसी खामोशी में नाराजगी और गुस्सा होता है, तो कभी किसी खामोशी में आस्था और प्यार होता है। कभी किसी खामोशी में श्रद्धा होती है तो कभी किसी खामोशी में जल्दबाजी और आतुरता होती है। कभी यह खामोशी बहुत सारे सवाल और बहुत सारी समस्याओं से बचने के लिए होती है। खामोशी भी बहुत कुछ कहती है, पढ़ने वाला और समझने वाला चाहिए। यदि आपमें समझदारी है, तो आप किसी की खामोशी का मतलब और अर्थ निकाल सकते हैं और वह भी वही मतलब और वही अर्थ जो वास्तव में सत्य है। पाकीज़ा फिल्म के गाने में एक लाइन आती है- “जो कही गई ना हमसे वह जमाना कह रहा है”। मतलब आप समझ गए होंगे। हमारी उम्र की परिपक्वता, हमारी समझदारी, हमारी शिक्षा, हमारी सोच जब तक अपनों की खामोशी को नहीं पढ़ सकती, तब तक हमारी समझदारी और हमारी शिक्षा व्यर्थ है। जरूरी नहीं कि हर बात लफ्जों की गुलाम हो- खामोशी भी खुद में एक जुबान होती है। खामोशी किसी बात को समझने का तरीका है, किसी विचार पर, किसी समस्या पर चिंतन मनन की अवस्था है, खामोशी अकेलेपन से एकांत की यात्रा भी हो सकती है। जिसमें व्यक्ति कभी भी अपने आप को अकेला नहीं समझता, उसका संबंध परमात्मा ईश्वर से जुड़ जाता है और वह खामोशी के माध्यम से चिंतन मनन और विचारों के माध्यम से अकेलेपन से एकांत की ओर यात्रा करने लगता है।

किंतु साधारणतया खामोशी डर से भी होती है कि हमारे कुछ कहने से कोई हंगामा ना हो जाए, इसलिए चुपचाप रहो। ना सच बोलो, ना झूठ सुनो। ना अच्छा बोलो, ना बुरा सुनो। ना अच्छी सलाह दो, ना बुरी सलाह सुनो, ना अपना अभिमत दो, ना उसका विरोध सुनो। शायद इसलिए भी कई लोग खामोशी धारण कर लेते हैं। लेकिन जो लोग खामोश होते हैं, उनके मनन-चिंतन और विचारों के घोड़े मन के अंदर दौड़ते रहते हैं और वह किसी ना किसी निर्णय पर पहुंचकर सीधे कदम उठाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

वैसे, वास्तविक जीवन में खामोशी का होना भी बहुत जरूरी है,

जिसे अंग्रेजी में वॉइस रेस्ट भी कहा जाता है। आप कम से कम बोलें, अच्छा बोलें, मीठा बोलें, काम की बात बोलें तो ज्यादा अच्छा है। अनावश्यक शब्दों का, अपशब्दों का, खराब शब्दों का, जो सुनने में बुरे लगे इत्यादि शब्दों का इस्तेमाल ना करें तो ज्यादा अच्छा है। कहा गया है कि मुख से निकला हुआ शब्द और धनुष से निकला हुआ तीर कभी वापस लौट कर नहीं आता। फिर भी हमारे पास एक विकल्प होता है अपने कहे हुए शब्दों के दर्द को कम करने का, जिसे हम क्षमा और प्रायश्चित्त कहते हैं। हम इस क्षमा और प्रायश्चित्त के मलहम से दूसरों को लगे शब्दों के घाव को कम कर सकते हैं और खामोश रहकर अपने स्वयं के क्रियाकलापों पर एक दिन या दो दिन नहीं अपने स्वयं के संपूर्ण जीवन काल पर, अतीत पर चिंतन मनन करें। और आगे की योजनाओं के विषय में सोचें कि हमने क्या किया, हमने किस तरह के कर्म किए। हमें ऐसे कर्म करना चाहिए था कि नहीं, हमने किसी को व्यर्थ में परेशान किया या नहीं। हमने किसके प्रति व्यर्थ के शब्दों द्वारा चोट पहुंचाई, जो हमें नहीं करना चाहिए था या हमने सही किया। हमारे साथ लोगों ने क्या किया, हमारे साथ लोगों का व्यवहार कैसा रहा, हमें अपने आप को किस प्रकार से आने वाले जीवन में सावधानीपूर्वक और स्थिर रहने की आवश्यकता है। यही चिंतन मनन हमारे भविष्य के सुधार की औषधि है।

कहा गया है कि हथियारों के घाव तो भर जाते हैं किंतु शब्दों के घाव जीवन भर रह-रह कर दर्द देते हैं। हमें शब्दों और विचारों की दरिद्रता से बचना चाहिए। इसलिए, अपने शब्दों को सोच समझकर बोलें, अनावश्यक शब्दों का इस्तेमाल ना करें। क्योंकि, यदि आप अनावश्यक शब्दों का इस्तेमाल करेंगे, तो उसके प्रतिउत्तर में आपको



भी अनावश्यक शब्द सुनने को मिल सकते हैं। यह सामने वाले की समझदारी पर निर्भर करता है, हम जो कहते हैं, उस पर जो प्रतिक्रियाएं होती हैं, उनसे हमारा जीवन प्रभावित होता है। हम जो कहते हैं और हम जो करते हैं इसी से हमारे आचरण का भी निर्माण होता है। कहा गया है कि जो व्यक्ति जैसा सोचता है और अगर वह वैसा ही करता है, तो वह वैसा ही बन जाता है। इसलिए हमें खामोशी में भी सकारात्मकता का ध्यान रखना अति आवश्यक है, वरन् हमारी खामोशी भी विध्वंस और नकारात्मक परिणाम दे सकती है। हमारे मन में क्या चल रहा है, इस पर भी हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारा चिंतन मनन सदैव दूसरों की भलाई के लिए हो। इसीलिए कहा गया है कि सोच अच्छी रखो यदि हम अपने खामोशी में अपनी सोच को अच्छा रखेंगे, तो हम जब भी बोलेंगे वह सकारात्मक ही होगा नकारात्मक नहीं। अपनी खामोशी का सदुपयोग मानवता और प्राणियों के हित में करें। समाज में फैली बुराइयों और कुरीतियों के विरुद्ध में करें। अपनी खामोशी को बुराई से दूर ले चलें। अपनी खामोशी को अकेलेपन से एकांत की ओर ले चलें। अपनी खामोशी को परमपिता ईश्वर के श्री चरणों में ले चलें। अपनी खामोशी को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर ले चलें। अपनी खामोशी को प्रार्थना, दुआ और निवेदन की ओर ले चलें। खामोशी की भी आवाज होती है जो सबको सुनाई नहीं देती। किंतु उसका परिणाम दिखाई देता है। अपने खामोशी के परिणाम को सकारात्मक बनाएं, ताकि लोगों का भला हो सके। मानव जाति और समस्त जीव-जंतुओं की भलाई के लिए घर-परिवार वालों, बच्चों की भलाई के लिए ईश्वर के श्री चरणों से अपनी खामोशी के द्वारा प्रार्थना करें। यही हमारे जीवन की सच्चाई हो और यही हमारी खामोशी की सच्ची आवाज हो। जो किसी को सुनाई दे या ना दे लेकिन उसके परिणाम हमेशा

सकारात्मक हो। यही हमारे समाज की, हमारे घर परिवार की, हमारे देश की और सारे विश्व की भलाई की ओर एक तुच्छ सेवा है। छोटा ही सही नन्हा ही सही एक प्रयास तो करें।

इस संदर्भ में एक प्रसंग है कि एक संत ऐसे गांव से गुजरे जहां एक प्रतिष्ठित विद्वान रहते थे। उनके शिष्यों ने यह तय करने के लिए एक वाद-विवाद की योजना बनाई कि दोनों में से किसका दिमाग ज्यादा तेज है। एक तीखी बहस की उम्मीद में भीड़ जमा हो गई। सभी को इस बात पर हैरानी हुई कि उन दोनों ने एक-दूसरे को प्रणाम किया और अपने-अपने घर लौट गए। बाद में, एक युवा शिष्य ने पूछा कि उन्होंने वाद-विवाद क्यों नहीं किया? इस पर संत बोले, “वह जानता था कि मैं जानता हूं मैं जानता हूं कि वह जानता था।” दोनों महापुरुषों ने उस छोटी सी मुलाकात में ही एक-दूसरे की योग्यता को पहचान लिया था और समझ लिया था कि सिर्फ दिखावे के लिए कोई बात साबित करने की जरूरत नहीं है। शालीन मौन ने सब कुछ कह दिया।

शब्द का महत्व:

“शब्द” भाषा की मूलभूत इकाई है। शब्द का उपयोग करके, हम अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त कर सकते हैं। शब्दों के सही और उचित उपयोग से हम दूसरों से प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं।

निष्कर्ष:

“शब्द” भाषा का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह हमें अपनी बात कहने और दूसरों की बात समझने में मदद करता है। शब्दों के विभिन्न प्रकार और उनके उपयोग को समझकर, हम अपनी भाषा कौशल में सुधार कर सकते हैं।





पैदाइशी मिडिल क्लास



अजीत कु. तिवारी
स.लेखापरीक्षा
अधिकारी

हम मिडिल क्लास लोग हैं। ऐसा नहीं है कि हम पहले अमीर थे या पहले गरीब थे। हम तो पैदाइशी मिडिल क्लास हैं। हमारे दादा भी मिडिल क्लास थे, हमारे पिताजी भी मिडिल क्लास हैं। हम भी मिडिल क्लास हैं। ससुरे हमारे बच्चे भी मिडिल क्लास ही होंगे।

हमने बीघा को बिस्सा में बदलते हुए देखा है, बिस्सा को डिसमिल में बदलते हुए देखा और डिसमिल को फुट में बदलते

देख रहे हैं। हमारे जीवन का सबसे बड़ा बदलाव यही है कि हमारे हाथ में आज मोबाइल है जिसे हम आधुनिकता का परिचय मानते हैं, लेकिन हमारे उम्र में हमारे बाबूजी के हाथ में समाचार पत्र हुआ करता था। दादाजी के हाथ में रेडियो हुआ करता था। मुझे नहीं पता कि मेरे बेटे के हाथ में लैपटॉप होगा या फिर कोई और गैजेट। लेकिन सच यही है कि हम सब ने अपने-अपने लेवल से अपने मनोरंजन का साधन ढूँढ लिया था।

खैर, मनोरंजन के अलावा भी हमारी ज़िंदगी में कुछ जरूरी चीजें हैं। जैसे कि हमें गोवा जाना जरूरी नहीं लगता है, हमारे लिए अपने गांव का मकान बनवाना ज्यादा जरूरी है। हमको एप्पल का लैपटॉप नहीं चाहिए, छोटी बहन का फीस भरना हमारे लिए पहले जरूरी है। हम तो टू बीएचके के मकान के लिए अपने पुरखों का हवेली छोड़ देते हैं।

नहीं नहीं नहीं, ज्यादा सेंटी होने की जरूरत नहीं है। पुरखों की हवेली छोड़ने का सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारे पास रोजगार नहीं है। बाप दादा परदादा सब किसान थे। धीरे-धीरे परिवार बढ़ता गया, खेत कम होते गए और हमारे हिस्से में आई 2 बीघा जमीन। अब दो बीघा जमीन से हम अपने बच्चों को पढ़ाएं, हम पढ़ें, परिवार चलाएं कि क्या करें, आप ही बताइए! परिवार चलाने के लिए, बच्चों को पढ़ाने के लिए हमको प्रदेश आना पड़ता है।

हम कायदे से प्रेम भी नहीं कर सकते हैं, अगर हम मिडिल क्लास फैमिली के लड़के हैं तो हमें परिवार चलाना है। अगर हम मिडिल क्लास फैमिली की लड़की हैं तो हमें परिवार की इज्जत देखनी है, मान सम्मान देखना है, सोसाइटी देखनी है, चार लोग क्या कहेंगे यह भी सोचना है। हमारे यहां शादी के बाद पति, पत्नी को घुमाने के लिए, हनीमून मनाने के लिए, कहीं दूर नहीं ले जाता है। काहे कि बाहर घूमने के लिए हमारा पॉकेट ही अलाउ नहीं करेगा। हम तो

अपने पुश्तैनी मकान में अपनी पत्नी से दिल खोलकर बात भी नहीं कर पाते हैं कि उससे पहले ही पता चलता है कि शादी में जो कर्जा लिया था वह कर्जा चुकाना है। हमारी पत्नी भी अपनी सारी ख्वाहिशों को अलमारी में रखकर कहीं भूल जाया करती है और मात्र 21 साल की लड़की परिवार की मुखिया बनकर परिवार चलाने लगती है।

हम ना कभी बाबूजी को हैप्पी फादर्स डे बोलते हैं, ना ही माई को हैप्पी मदर्स डे बोलते हैं, ना ही कभी बहन को हैप्पी सिस्टर बोले और भाई सब की हमको देखकर हवा टाईट हो जाती है। उधर तो ब्रदर डे वाला कोई कांसेप्ट ही नहीं है। हम मिडिल क्लास के लोग कोई प्याज लहसुन डे नहीं मनाते हैं, लेकिन बिना कोई दिन मनाए गजब प्यार है हम लोगों के परिवार में। खासकर हम बात करें तो आज भी एक 80 वर्ष के उम्र के पिता के सामने एक 60 वर्ष का लड़का तेज आवाज में बात नहीं कर सकता है। वैसे ही एक 60 वर्ष के पिता के सामने एक 40 वर्ष का लड़का कोई गुस्ताखी करने की हिम्मत नहीं कर सकता है। एक 40 वर्ष के पिता के सामने 15 वर्ष का लड़का सिर उठा कर बात नहीं कर सकता है। यह डर नहीं है, हमारे यहां के लड़के डरते तो अपने बाप से भी नहीं हैं। यह इज्जत है, लेकिन उम्र के किसी भी दौर में चाहे 80 साल हो या 60 साल हो या 40 साल हो या 20 साल हो, अगर परिवार के ऊपर कोई भी आफत आती है तो सभी छोटे-बड़े परिवारजन एक होकर उस विपत्ति का सामना करते हैं।

इन तमाम अच्छाइयों और बुराइयों को समेटे हुए हमारा परिवार चलता है। आज भी घर में पैसा रहे ना रहे, बाबूजी का सिर हमेशा कॉन्फिडेंस से ऊपर उठा रहता है। आज भी रसोई में कुछ रहे ना रहे माँ के हाथों के खाने में गजब का स्वाद होता है। आज भी हम मिडिल क्लास फैमिली के परिवार में राखी में बहनों को पांच रुपया मात्र देने से उनके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। आज भी छोटे भाइयों के साथ खड़े हो जाने से छोटे भाइयों का सिर गर्व से ऊंचा हो जाता है। हमारी छोटी-छोटी ख्वाहिशें हैं, छोटा परिवार है, छोटी दुनिया है लेकिन साहब हमारा दिल बहुत बड़ा है, है कि नहीं।



“फलां ऑफिस, चिलां कमरा”



मुकेश कुमार झा
लेखापरीक्षक

कार्यालय एक जीवंत जीवाश्म होता है जहाँ फाइलें साँस लेती हैं, कुर्सियाँ सोचती हैं और कंप्यूटर मोनिटर आँखें तरेरती हैं। सुबह नौ बजते ही कार्यालय भवन अंगड़ाई लेने लगती है और पूरे ऑफिस में शाम के साढ़े पाँच बजते ही अजीब-सी फुर्ती आ जाती है। यहाँ समय ठहरता नहीं है बल्कि पसीना बनकर बहता है।

फुरफुरी के फलां ऑफिस के चिलां कमरे में कुल आठ जीवधारी हैं, जिनमें दो अधिकारी, पांच कर्मचारी और एक टेक्निकल बाबा शामिल हैं। दिन के मूड का बैरोमीटर बॉस का चेहरा होता है। बाकी पुरातनकालीन आत्माएँ (पूर्व अधिकारीगण) तो कभी भी दीवारों से प्रकट होकर “मेमे (अरे भैया मीम)” सुना सकती हैं।

पहले अधिकारी साहब जिनका नाम गोपनीय रहे (चुपके से बोलूँ तो ‘बुजुर्ग साहब’)। इन्हें अभी-अभी पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। कहने का मतलब है कि अब वे ‘सरकारी पिता’ भी बन चुके हैं। ऑफिस के बाद डायपर ड्यूटी भी इनका कार्यक्षेत्र है। वैसे मज़ेदार इंसान हैं, पुत्र रत्न की प्राप्ति पर जितनी खुशी उन्हें है, उतनी ही चिंता अगले फ़ॉर्मूला दूध की कीमत की भी है। उन्होंने बताया, बालों में चाँद का दायरा बड़ा हुआ है, लेकिन अभी बाल तो बच्चे से भी ज्यादा नाजुक हैं। जाहिर है उम्र का असर कुछ तो दिखना ही चाहिए। बालों को लेकर थोड़े संजीदा हैं। जो बचे हैं, वो उनकी शान हैं। उनके जूतों की कीमत से ऑफिस के प्रिंटर की टोनर भरवाई जा सकती है। सिर्फ जूतों के मामलों में ही नहीं, साहब खुद सोल (soul) वाले इंसान हैं। नज़रिये से काफी तार्किक हैं पर आध्यात्मिकता के चश्मे की चमक उम्र के साथ बढ़ती जा रही है। सच है जैसे-जैसे पेट का दायरा बढ़ता है, इंसान दर्पण की जगह दर्शन की ओर आकर्षित होते हैं। चूँकि तार्किक हैं तो पराठे एवं मोक्ष में संबंध ढूँढ़ रहे हैं।

दूसरे अधिकारी साहब एक ओर जानकारी का ज्ञानकुंभ, तो दूसरी तरफ ‘साफ-सफाई’ के ब्रांड एंबेसडर हैं। मुँह खोलें तो जैसे रजिस्ट्रेशन ऑफिस का डेटा-बेस ही बाहर आ जाए, किस ज़मीन पर केस चल रहा है, कौन सा एग्रीमेंट कहाँ से बनेगा, रजिस्ट्रेशन के लिए कौन-सा बाबू कितना धूरेगा, सब कुछ इनके पास रेडी रेफरेंस के रूप में उपलब्ध है। हाल ही में इनका स्थानांतरण पैरेंट ऑफिस में हुआ है और इस यज्ञ में आहुति दिए जा रहे हैं, पर दिल हमारे साथ ही है। खैर, छठ पूजने वालों के लिए सूर्य की महिमा उगने या डूबने से नहीं उसके होने से है। इनके बिना ऑफिस कुछ ऐसा कि जैसे अर्जुन के

बिना महाभारत में उतर गए हो। इनकी आवाज़ में वो गरिमा है जो रेलवे स्टेशन के उद्धोषक में भी नहीं मिलती। अगर ये कह दें, “बैठ जाइए,” तो कुर्सी खुद पीछे खिसक जाती है। हालाँकि एक दिन कुर्सी सच में खुद पीछे खिसक भी गयी थी और अब जब ये कुर्सी से उठते हैं तो बाकी कुर्सियाँ भी सावधान हो जाती हैं। साफ़ सफाई से ऐसा नाता है कि अगर मेज पर कोई फाइल तिरछी रख दिख जाए तो हल्का सांस लेते हुए उसे सीधी कर देंगे, जैसे दुनिया को उसके अक्ष पर वापस ला रहे हों।

अब आते हैं पहले कर्मचारी पर, हमारे वीसी चैम्पियन, हँसी के हथियार वाले हमारे ‘वन-मैन आर्मी’। सुबह ऑफिस आते हैं तो साथ में चुटकुले और एक नई वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग की तकनीक भी लाते हैं। इनके बिना ऑफिस की मीटिंग ऐसे है जैसे गुलाब जामुन बिना चाशनी के। ऑफिस में जब कभी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग होती है, तो सबसे पहले खोज इन्हीं की होती है और सबसे आखिरी तक वे ही पकड़े जाते हैं। काम में तेज़ हैं, बातों में इतने चतुर कि “हाँ” और “ना” के फर्क को भी मज़ाक में उड़ा दें। इनकी पत्नी भी इसी शहर में नौकरी करती हैं जो पारिवारिक जीवन संतुलन का आदर्श उदाहरण है और “मेरी बीबी, मेरी सुविधा” वाली स्थिति बनी हुई है। वैसे भैया जी बात अगर मेरी माने तो यही कहूँगा “ज़िंदगी में मज़ा चाहिए तो फॉर्मेटिंग सीखो”।

सफ़ेद शर्ट के साथ फॉर्मल पतलून की सेटिंग वाले दूसरे कर्मचारी दफ्तर में ऐसे प्रवेश करते हैं जैसे जमीन की रजिस्ट्री के साथ आत्म-सम्मान भी प्रेस करके आये हों। ऑफिस वाले इन्हें ‘आधे अरबपति’ कहते हैं। हालाँकि ये बात आधी सच है या पूरी, यह तो भविष्य के गर्त में है। जमीन से जुड़े व्यक्ति हैं, मतलब शाब्दिक एवं प्रयोगात्मक दोनों रूप में, फ़र्क सिर्फ इतना है कि हम धरती पर अपना पाँव जमाये रखते हैं और ये धरती को ही अपने नाम (रजिस्ट्री) पर टिकाये रखते हैं। मतलब जमीनें इतनी हैं कि ड्रोन से नापनी पड़े, इनको होम टाउन जाने के लिए भी एलटीसी लेकर निकलना पड़ता है। कोई भी भू-स्वामित्व का कागज़ निकले, तो लोग आंख मूंदकर इनका नाम ले लेते हैं। जब बोलते हैं, तो लगता है कि कोई प्रॉपर्टी की वेबसाइट लाइव हो गई है।

तीसरे कर्मचारी के नाम की समानता चौथे से है, लेकिन शरीर में नहीं, मतलब, जब कोई “फ़लां बाबू” कहकर पुकारता है, तो ये दोनों एक साथ गर्दन घुमा लेते हैं। ये स्पोर्ट्स फील्ड से आए हैं, शरीर से लंबे-चौड़े हैं, पर अब “चौड़ाई” ने भी थोड़ी गंभीरता से विस्तार लेना शुरू कर दिया है। जब रिमाइंडर आती है कि “अटेंडेंस देना है”, तो दिखते हैं और चूँकि स्पोर्ट्स कोटे से हैं तो हाज़री लगाते ही इन्हें छुट्टी की अर्जी भी लिखनी होती है। जब कोई काम समय पर न हो पाए



तो इनका मानना है कि “भाई, आराम भी खेल का हिस्सा ही है।” खिलाड़ियों का अनुशासन इनमें अब भी है, हर काम में टाइमिंग का ध्यान रखते हैं, खासकर लंच का। हर सरकारी खेलकूद प्रतियोगिता में हिस्सा लिया है और अगर जीते हैं तो मिठाई खुद ही खा गए हैं।

चौथे कर्मचारी को भी हाल ही में पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है और बेटा साहब अब इतने हक से ऑफिस जाने से रोकते हैं कि कभी-कभी लगता है, पिता नहीं, बेटा साहब है। अब ऑफिस आना एक युद्ध जैसा लगता है, सुबह बच्चे से जंग, दोपहर को नींद से जंग और शाम को ऑफिस के पेपरवर्क से। पत्नी किसी दूसरे शहर में पोस्टेड है, और इनका रिश्ता अब विडियो कॉल और वीकेंड की वेटिंग लिस्ट पर टिका है। इसलिए बेचारे सप्ताहांत के लिए बंसी बजाते रहते हैं लेकिन ऑफिस में सबको लगता है कि महोदय ‘परीक्षा-परिकल्पनाओं’ में उलझे हुए हैं। सवालियों के विकल्पों को चुनने में इनकी स्थिति का अंदाजा इससे लगाया जाए कि एक बार फुरफुरी उतरना था, पर ट्रेन की मेहरबानी से चार स्टेशन आगे पहुंच गए। जीपीएस से ज्यादा भरोसा इन्हें अब चायवाले के दिशा-निर्देशों पर है। छुट्टी मांगते वक़्त इनके आवेदन पत्र में भावना इतनी गाढ़ी होती है कि अधिकारीगण को भी अफसोस होता है कि “इतना दुःखी क्यों है बंदा? अब कोई क्या बताये कि इन्हें इनका बेटा भी रोकता है और सपना भी।

अब आते हैं टेक्निकल बाबा पर, ये तकनीकी मामलों के विशेषज्ञ हैं। दिखने में सीधे-साधे, बोलने में नरम, लेकिन इनकी उपयोगिता ठीक वैसी ही है जैसे टीवी का रिमोट जिसके बिना चैनल बदल ही नहीं सकते। प्रिंटर फंसे, इंटरनेट लुका-छिपी खेले, यूपीएस घनघनाने लगे, इनका बुलावा आना तय है। हालांकि अगर कभी टेक्निकल राय मांगो तो दिल्ली जाने वालों को कोलकाता की ट्रेन पकड़वा देंगे और साबित भी कर देंगे कि यही बेहतर था। लेकिन जितनी चर्चा इनके तकनीकी ज्ञान की होती है, उससे ज्यादा इनकी शादी की होती है। “अब कब है बैंड बाजा?” बेचारे हर बार मुस्कुरा कर कहते हैं – “टेंडर प्रोसेस में है, 2027 में क्लियर होगा।” कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे इनकी शादी तय करने के लिए एक कर्मचारी समिति बन जाए, जो प्रस्ताव तैयार करे, जगह तय करे और बायोमेट्रिक के साथ इनकी बारात का टाइम भी फाइनल कर दे। हमारा मानना है कि अभी नेटवर्क स्ट्रॉंग नहीं है इसलिए मैच कनेक्ट नहीं हो पा रहा।

अक्सर कमरे की पुरानी आत्माएं (पूर्व सेक्शन इम्प्लॉई) भले ही किसी और सेक्शन में ट्रांसफर हो चुके हैं, पर खाली समय में दिल और कुर्सी से यहीं जमे रहते हैं। वैसे देखा जाए तो सरकार ने उन्हें दूसरी टेबल दे दी है, लेकिन दिल ने आज्ञा नहीं दी। पांच-छह लोग मिलकर आइसक्रीम की चुस्की के साथ पुराने किस्सों में डूब जाते हैं। ऐसा लगता है मानो भारत के संविधान के निर्माण में भी इनकी कोई

भूमिका रही हो। इस कमरे में कभी कोई रिटायर नहीं होता, वे बस ‘व्हाट्सएप फॉरवर्ड’ के रूप में विद्यमान रहते हैं। कभी-कभी स्वयं आकर बैठकर करते हैं और ‘मेमे टॉक्स’, (अरे भाई मीम) चलती हैं। इनके बिना ऑफिस की बातचीत अधूरी रहती है, और इनके “तकिया कलाम” तो इतने लोकप्रिय हैं कि नए कर्मचारी पहले इन्हें रटते हैं, उसके बाद नियम-कायदे। “जो लाना भैया, दो लाना...” मतलब, खुद तो नहीं लाना, लेकिन लाने वाले से दो की उम्मीद जरूर। “अभी करके देता हूँ” कभी-कभी लगता है इस वाक्य को सुनकर ही कंप्यूटर खुद अपडेट हो जाए। “कभी-कभी लगता है, अपुन ही भगवान हैं...” यह वाक्य गंभीर चर्चा के बाद कहा जाता है, ताकि हँसी और ज्ञान दोनों साथ-साथ चलें। “सच पूछिए तो भूषण भाई...” यह वाक्य बस बोल दें तो फिर हँसी के ऐसे झरने बहते हैं कि पानीपत की लड़ाई भी शांत हो जाए। इन वाक्यों में जितनी गहराई है, उतनी तो अज्ञेय की कविताओं में भी नहीं।

जिंदगी तेज है, लक्ष्य बड़े हैं, जिम्मेदारियां भारी हैं लेकिन हर फलां कार्यालय का एक चिलां कमरा सिखाता है कि काम के बीच हँसी, सहयोग और अपनापन भी जरूरी है। हो सकता है कि कल सब अलग-अलग जगहों पर हों, लेकिन ये यादें, हमेशा हँसी की तरह मन में गूँजती रहेंगी। संक्षेप में कहूँ तो ऑफिस का कमरा सिर्फ एक स्थान नहीं, एक अनुभव है, एक जीवनशैली है, एक ‘मिनी-वेब सीरीज़’ है, जिसका हर एपिसोड पहले से मजेदार होता है। और हाँ, अगली बार जब आप ऑफिस में तनाव महसूस करें, तो याद कीजिए ऑफिस के इस कमरे को, जहाँ हर दिन हँसी के साथ-साथ काम भी चलता है। क्योंकि आखिरकार, जिंदगी में काम जरूरी है और उससे भी जरूरी है खुश रहना। सच है “सरकारी नौकरी सिर्फ सेवा नहीं, सेहत भी देती है।”

हर ऐसी कहानी चल देती है फलां कार्यालय के भाषा अनुभाग के एक वरिष्ठ महाशय को हस्तगत होने, जिनका चश्मा स्थायी सदस्य की तरह नाक पर टिका रहता है। विवाह अभी-अभी हुआ है, वो भी इस शर्त पर कि पत्नी को भी ‘भाषिक त्रुटियों’ से परहेज हो, चूँकि जो चश्मा है वो सिर्फ शब्दों की गलतियों को पकड़ता है, पत्नी के भावों को नहीं। संपादन तो चल ही रहा था, अब जीवन सम्पादित हो रहा है। सर की शादी नहीं हुई है, इन्होंने गृह समीक्षा हेतु बस एक स्थायी पाठक ढूँढ लिया है।

और कोई लेखक, इन सब में ही कोई, इस ‘कॉमिक वर्कस्टेशन’ का रिपोर्टर, अब भी प्रतियोगी परीक्षा की किताबें पलटते हुए, इक नई कहानी लिख रहा है। शायद कभी वो भी हिट हो जाए और अगर भगवान ने चाहा तो जल्द ही चार स्टेशन आगे नहीं बल्कि सही स्टेशन फुरफुरी पर पहुंच जाये।

मन एवं ज्ञान



राजेश साह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हमलोगों के शरीर मूल प्रकृति, पाँच महाभूत, मन, बुद्धि, अहंकार आदि चौबीस तत्वों से बना हुआ है। मन पाँच महाभूतों से उत्पन्न होता है और स्वयं किसी का कारण नहीं है, इसलिए इसे विकृति कहा जाता है। यह इंद्रियों पर नियंत्रण रखता है। इसके बिना इंद्रियाँ विषयों का भोग नहीं कर सकतीं। यही इंद्रियों से कर्म करवाता है। इसी प्रकार, योगी को भी मन पर भरोसा

नहीं करना चाहिए, अन्यथा मन काम, क्रोध आदि शत्रुओं को आक्रमण का अवसर देकर योगी को नष्ट-भ्रष्ट कर सकता है। हम जानते हैं कि मनुष्य का दिमाग एक बगीचे की तरह होता है, जिसे चाहे तो समझदारी से सजाया-संवारा जा सकता है। यदि आप अपने मस्तिष्क रूपी इस बगीचे में शुद्ध विचार से बीज नहीं बोएंगे, तो बहुत-सी खरपतवार उग आएंगी। दिमाग में जिस तरह के बीज बोए जाते हैं, उसी प्रकार के फूल और फल मिलते हैं। शुद्ध विचारों से अच्छे फल प्राप्त होते हैं, जबकि खराब विचारों से बुरे फल मिलते हैं। भय, क्रोध, ईर्ष्या, हताशा, चिंता, अपराधबोध, आत्म-निंदा, स्वार्थपरता इत्यादि सभी नकारात्मक भाव हैं, जो पहले हमारे मन की स्थिति को बिगाड़ते हैं और फिर शरीर को प्रभावित करते हैं। ये खराब विचार हमारे विवेक को क्षीण करते हैं, फिर हमारी ऊर्जा, ज्ञान प्राप्ति के उत्साह, आनंद भाव और प्रेम को अवरुद्ध करते हैं। मन ही बंधन और मोक्ष का कारण है। जब तक मन है, तब तक जागृत अवस्था का व्यवहार दृश्य रूप में जीव के सामने आता है। अपने नकारात्मक भावों से जितना अधिक आप लड़ने और उन्हें दबाने की कोशिश करेंगे, उतना ही वे खराब विचार प्रतिरोध करेंगे और अधिक वेग से आपके दिमाग पर छा जाएंगे। इसका एकमात्र उपाय यह है कि सजग रहें। प्रतिपल, प्रत्येक

क्षण सजग रहें कि नकारात्मक भाव आपको जीवन में कुछ नहीं देते, बल्कि आपके जीवन का एक बड़ा हिस्सा छीन लेते हैं। यही निरंतर सजगता अंततः आपके नकारात्मक भावों से उबरने की औषधि बन सकती है। जब आप नकारात्मक भावों की व्यर्थता को समझ जाएँगे, तो आप उन्हें कभी भी अपने मन में स्थान नहीं बनाने देंगे। इसीलिए मन को मोक्ष और बंधन का कारण बताया गया है। हमें आगे समझना चाहिए कि मन, मिथ्या होने के बावजूद, आत्मस्वरूप को ढक लेता है। मन को केवल भगवान और गुरु की उपासना से ही जीता जा सकता है।

आत्मा निष्क्रिय है, परंतु मन ही सारी चेष्टा करता रहता है। उज्जैन निवासी ब्राह्मण के संबंध में श्रीकृष्ण उद्धव से कहते हैं कि उस उपभोगी ने जान लिया कि उसके सुख और दुख का कारण न मनुष्य है, न देवता, न शरीर, बल्कि मन ही इसका बड़ा कारण है। मन ही सारे संसार चक्र को चला रहा है। जब जीव मन को स्वीकार करके उसके द्वारा विषयों का उपभोगी बन जाता है, तब कर्मों के प्रति आसक्ति के कारण वह उनसे बंध जाता है। इसलिए यह समझा जा सकता है कि सुख और दुख का कारण न मनुष्य है, न देवता, न शरीर, न ग्रह, केवल मन ही है। क्योंकि नियमित ध्यान से मस्तिष्क के दर्पण पर जमने वाली धूल को यदि हम प्रतिदिन अच्छे विचार से साफ करते रहें, तो यह दर्पण उज्ज्वल बना रहेगा। जब शुद्धता की बात आती है, तो इसका अभिप्राय मन की स्वच्छता से है। मन में भगवान का स्मरण हो, तो यह मन को अच्छा करने वाला होता है। मन नाम-जप से शुद्ध होता है और शुद्ध मन में भगवान का वास होता है। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार मन ही आनंद और ब्रह्म जैसा है।

संकल्प करना ही मन का लक्षण है; मन संकल्प रूप में रहता है। इसलिए जो संकल्प है, वही मन है। संसार में सारा इंद्रजाल मन के द्वारा ही फैलाया गया है। जब तक मन की बात चलती रहती है, तब तक मोक्ष नहीं हो सकता। लोग सड़क पर चलते समय रास्ते में मिला हुआ दस रुपये का नोट तो उठा लेते हैं, लेकिन फटे-पुराने अखबार के टुकड़े की ओर देखते भी नहीं। क्यों? क्योंकि उन्हें उस टुकड़े की व्यर्थता का एहसास होता है। इसी प्रकार, हमें सजग रहना चाहिए कि खराब विचार न केवल हमारे दिमाग, बल्कि मन और अंततः शरीर को भी रोगग्रस्त करते हैं। जब हम सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण होते हैं, तो हमारा रोग प्रतिरोधक तंत्र ऐसे हार्मोन और रसायन उत्पन्न करता है, जो रोगों से लड़ने की हमारी शक्ति को बढ़ाकर स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसके विपरीत, यदि हम लंबे समय तक नकारात्मक विचारों से घिरे रहते हैं, तो तंत्र में ऐसे हार्मोन और रसायन बनने लगते हैं, जो हमारी कार्यक्षमता और स्वास्थ्य पर





बुरा प्रभाव डालते और बर्बाद कर देता है। इस प्रकार, जैसे ही हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि नकारात्मक विचार हमारे स्वास्थ्य और मानसिक शांति दोनों के लिए हानिकारक हैं, उसी क्षण हमें इसकी व्यर्थता का एहसास हो जाता है और हम सजग रहते हैं कि ऐसे नकारात्मक विचारों को अपने मन-मस्तिष्क के आसपास भी न भटकने दें। जैसे ही कोई नकारात्मक विचार मन में उठने का आभास हो, तुरंत उसके स्थान पर सकारात्मक विचार लाने का प्रयास करना चाहिए। ठीक वैसे ही जैसे पैर के नीचे कंकड़ आते ही हम उसे तुरंत हटा देते हैं। हम यह प्रतीक्षा नहीं करते कि और कंकड़ आएँ, तब हटाएँ। उसी प्रकार, मन में नकारात्मक विचार आते ही उसे न बढ़ने-फैलने देना चाहिए।

महोपनिषद के अनुसार, बंधन और मोक्ष के दो ही कारण हैं: ममता और ममता-शून्यता। “मैं ब्रह्म नहीं हूँ” इस संकल्प के सुदृढ़ हो जाने से मन बंधन में पड़ता है। “सब कुछ ब्रह्म ही है” इस संकल्प के दृढ़ होने पर मन को मुक्ति प्राप्त होती है। जब मन शरीर की भावना करता है, तब आत्मा शरीर के रूप में प्रतीत होती है। मन एक कल्प को क्षण में बदल देता है और क्षण में ही कल्प जैसे विशाल समय का भान कराता है-यह संसार केवल मन का भोग विलास मात्र है। मन नेत्र, त्वचा, शब्द आदि इंद्रियों से अधिक प्रभावशाली है। यह हर जगह विचरण करता है और वहाँ भी पहुँच जाता है, जहाँ इंद्रियाँ या उनके विषय नहीं पहुँच सकते।

ब्रह्मबिंदु उपनिषद में मन को दो प्रकार का बताया गया है: शुद्ध मन और अशुद्ध मन। वह मन जिसमें कामनाएँ अर्थात् विषय-भोग के संकल्प उत्पन्न होते हैं, अशुद्ध कहलाता है। दूसरी ओर, जिसमें कामनाओं का अभाव है, वह शुद्ध मन है। इस तरह मन बंधन का कारण है, जबकि विषय-संकल्प-रहित मन मोक्ष का कारण माना जाता है। जो मन विषयों से मुक्त है और जिसमें विषय-भोग के संकल्प नहीं हैं, वह मन हृदय में समाहित हो जाता है-यही ज्ञान और मोक्ष है। सुख और दुख में डूबने वाला भी यही मन है। मनुष्य को बंधन में डालने और मुक्त करने में देह, जीवात्मा, या इंद्रियाँ कोई कारण नहीं हैं; केवल मन ही मात्र है। मन के शुद्ध हो जाने पर सभी इंद्रियों में विकारों की कमी हो जाती है। यदि मनुष्य अपना मन किसी में लगा दे, तो उसे उसी वस्तु का रूप प्राप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए, मन को भगवान में लगाकर प्राणी भगवान का स्वरूप का अनुभव कर सकता है। आध्यात्मिक जगत में मन के महत्व को हम वेदों, पुराणों, और महापुरुषों के उपर्युक्त वचनों से समझते हैं। आवागमन के चक्र से मुक्ति के लिए मन को नियंत्रित करना आवश्यक है।

अर्जुन का मत था कि मन पर काबू पाना वायु को नियंत्रित करने जैसा कठिन है। कृष्ण ने समझाया कि यह कठिन है, परंतु असंभव नहीं है। अभ्यास और वैराग्य से मन को नियंत्रित किया जा

सकता है। विश्व के सभी धर्मों में मन को वश में करने के साधन बताए गए हैं। इनमें से मुख्य हैं:

1. **नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि द्वारा ध्यान करना।**
2. **प्राणायाम के द्वारा:** भागवत में श्रीकृष्ण उद्धव को समझाते हैं कि प्राणायाम से मन भगवान में स्थिर हो जाता है। प्राणायाम को किसी योग गुरु के सान्निध्य में ही सीखना चाहिए। प्राणों और मन का गहरा संबंध है। जब मन किसी स्थान पर स्थिर होता है, तब श्वास गहरी चलती है। इसी प्रकार, जब श्वास गहरी होती है, तब मन को किसी स्थान पर स्थिर करना सरल हो जाता है। हमारे ऋषियों ने इस आधार पर प्राणायाम की खोज की। उन्होंने पाया कि जैसे-जैसे प्राण नियंत्रित होते हैं, वैसे-वैसे मन भी नियंत्रित होने लगता है और धीरे-धीरे इसे पूर्ण रूप से वश में करना सरल हो जाता है। ऋषि पतंजलि ने भी अपने योग प्रदीप में श्वासों पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी है। उन्होंने आती-जाती श्वास के साथ जप करने और श्वास को स्थिर करने (कुंभक) पर बल दिया है।
3. **साम-दाम-दंड-भेद नीति से मन को नियंत्रित करना:** कुछ स्वामियों ने सिखाया है कि बुद्धि मन से श्रेष्ठ है, इसलिए बुद्धि द्वारा मन को समझाया जा सकता है। सबसे उत्तम उपाय यह है कि साधक अपने हृदय में यह बात दृढ़तापूर्वक स्थापित कर ले कि यह संसार मेरे लिए नहीं है और इसमें मेरे लिए सुख नहीं है। ऐसा करने से मन संसार से विमुख हो जाता है। दूसरी ओर, यह संकल्प करें कि मेरे लिए केवल भगवान हैं। इस भावना के साथ अपने सर्वस्व को, यहाँ तक कि अपने अस्तित्व को भी भगवान में समर्पित कर दें। ऐसा करने से मन सहज ही भगवान की ओर प्रवृत्त होगा। जब भी मन संसार की ओर भटकेगा, तब आत्मग्लानि होगी, और हम स्वतः ही मन को बार-बार भगवान की ओर ले जाएँगे।
4. **चौथा प्राणायाम के द्वारा:** पातंजल योग प्रदीप के साधनपाद के 51वें सूत्र के अनुसार, चौथा प्राणायाम मन को स्थिर करता है। इसमें केवल रेचक और पूरक होता है, कुम्भक नहीं होता।
5. **हृदय की धड़कनों के साथ भगवान का ध्यान करना:** साँसों के साथ भगवान का जप करना, आती-जाती साँस को देखते रहना और उसके साथ ही अपने इष्ट देव के नाम का जप करना। मंत्र का अर्थ है वह जो मन को वश में कर ले, इसलिए मंत्र जप करें। सबसे बढ़िया मंत्र भगवान का नाम है।
6. **मन को मित्र बनाना और भगवत्प्राप्ति में साधन के रूप में इसका अच्छा से प्रयोग करना:** इस पर लगाम बुद्धि की डालें। बुद्धि को भगवत्प्राप्ति के लिए एकनिष्ठ रखें। यदि बुद्धि बहुशास्त्री

हुई, तो मन जगह-जगह भटकता और एक स्थान पर स्थिर नहीं रह पाएगा। इसलिए मन को भगवान में लगाने के लिए भगवत्प्राप्ति की एकनिष्ठ बुद्धि आवश्यक है। ऐसी बुद्धि न होने पर मन संसार में ही भटकता है, क्योंकि उसे संसार के विषय-भोगों का अनंत काल से अभ्यास है। विषयों के भोग से बंधन है और त्याग से मोक्ष का मार्ग खुलता है। मन को लघु न समझें। यह एक साथ समस्त विश्व का भान करा सकता है।

7. भगवान के इष्ट देव या गुरुदेव के चित्र या मूर्ति पर एकाग्रता से ध्यान लगाना।

8. मुक्ति उपनिषद् के अनुसार: जैसे हाथी अंकुश के बिना वश में नहीं होता, वैसे ही मन बिना आध्यात्मिक विद्या के ज्ञान, सत्संग, वासनाओं के त्याग और प्राणायाम के द्वारा वश में नहीं किया जा सकता। अर्थात्, इन चारों के एक साथ प्रयोग द्वारा ही मन को वश में किया जा सकता है। बलपूर्वक मन को वश में करने का प्रयास करना वैसा ही है, जैसे दीपक के प्रकाश को छोड़कर अंधकार में जाना।

9. मन को ध्यानपूर्वक एकाग्रता करके: कितना ही चंचल हो, मन एक समय में केवल एक ही स्थान पर रह सकता है। स्थान दो ही हैं-या तो संसार या भगवान। संसार का कार्य इंद्रियों से करते रहें, परंतु मन को भगवान में रखें। मन को भगवान में रखने से भगवान की ही प्राप्ति होगी। इसके लिए भगवान, उनका नाम, रूप, कथा, लीला, धाम, परिकर और जन-इनका ही कीर्तन, श्रवण और स्मरण करें।

10. पुराणों की कथाएँ अपने अंदर संयोजन कर: भागवत आदि पुराणों व अन्य ग्रंथों में बहुत-सी कथाएँ दी गई हैं। ये कथाएँ मन को भगवान में लगाने के लिए ही बताई गई हैं। इन कथाओं के अंत में प्रायः लिखा होता है कि जो इन्हें पढ़ेगा, सुनेगा, सुनाएगा अथवा इनका प्रचार करेगा, उसे मनचाही वस्तु, स्वर्गादि लोक और भगवान की प्राप्ति होगी अथवा भगवान की परा भक्ति प्राप्त होगी। ऐसा इसलिए, क्योंकि भगवान से संबंधित कथाएँ सुनने और सुनाने से मन भगवान में लगता है, जिससे भगवान की प्राप्ति होती है। यही बात भगवान ने गीता में समझाया है: “तू मेरा भक्त हो जा, मुझमें मन वाला हो जा, मेरा पूजन करने वाला हो जा और मुझे नमस्कार करा। ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा-यह मैं तेरे सामने सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ, क्योंकि तू मेरा अत्यंत प्रिय है।”

मन की शांति प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक समान नहीं हो सकती। अलग-अलग व्यक्तियों को अलग-अलग कार्य करके शांति मिलती है। वास्तव में, आत्मसंतोष और संतुष्टि ही मन की शांति है। जिसे जो

कार्य करके संतुष्टि मिले, उसके लिए वही मन की शांति है। मनुष्य की इच्छाओं का पेट आज तक कोई नहीं भर सका है। जैसे जल द्वारा अग्नि को शांत किया जाता है, वैसे ही ज्ञान द्वारा मन को शांत किया जा सकता है। क्योंकि, ज्ञान प्राप्ति पर ही हम जानते हैं कि वास्तव में मन की शांति क्या है। यह ज्ञान न केवल सही और गलत का अंतर बताता है, बल्कि जीवन में सही निर्णय लेने में भी मदद करता है। सारा खेल इच्छा, आसक्ति अथवा मन का है। मन का विकास करो और उसका संयम करो। इसके बाद जहाँ इच्छा हो, वहाँ इसका प्रयोग करो-इससे अति शीघ्र शांति की प्राप्ति होगी। यह है यथार्थ आत्मोन्नति और मनोशांति का उपाय। एकाग्रता सीखो और जिस ओर इच्छा हो, उसका प्रयोग करो। ऐसा करने पर तुम्हें कुछ खोना नहीं पड़ेगा। जो समस्त को प्राप्त करता है, वह अंश को भी प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार, मैं कह सकता हूँ कि मन की शांति प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग है। उदाहरण के लिए, टैगोर जी का एक कथन है: “जब मैं स्वयं पर हँसता हूँ, तो मेरे मन का बोझ हल्का हो जाता है।” यह उनके लिए कुछ हद तक मन की शांति है। इसी प्रकार, सभी लोगों के लिए यह अलग होती है। इसी विषय से संबंधित कबीर का एक दोहा याद आता है: “मन के हारे हार है, मन के जीते जीता।” सही ज्ञान का अर्थ है ऐसी जानकारी या समझ जो सटीक, तर्कसंगत और सत्य पर आधारित हो। मन कभी शुद्ध नहीं होता; मन निर्मल होता है, मन शांत होता है, मन दुखी होता है, मन खुश होता है। सही ज्ञान केवल सूचनाओं का संग्रह करना नहीं है, बल्कि उनका विवेकपूर्ण उपयोग और व्यवहार में लागू करना चाहिए।





माँ-बाप: ईश्वर का प्रत्यक्ष रूप



अमित कुमार रवि
स.लेखापरीक्षा
अधिकारी

माँ-बाप इस धरातल पर स्वयं भगवान के रूप हैं। भगवान ने भी माँ-बाप की पूजा खुद से भी पहले बताई है। माँ का कर्ज तो मरकर भी नहीं उतारा जा सकता, माँ केवल एक शब्द नहीं, बल्कि भावनाओं, समर्पण और असीम प्रेम का प्रतीक है। माँ वह शक्ति है, जो खुद के सपनों को त्यागकर अपने बच्चों के लिए एक बेहतर भविष्य बनाती है।

माँ हमारे जीवन की पहली शिक्षिका होती है। वह हमें बोलना, चलना, व्यवहार करना, अच्छे-बुरे की पहचान और संस्कार सिखाती है। माँ ही वह पहली इंसान होती है, जिसे हम जन्म लेते ही पहचानते हैं। उसकी आवाज़, उसकी गोद और उसका स्पर्श हमें सुरक्षा का अहसास दिलाते हैं। माँ की ममता की कोई तुलना नहीं। वह अपने बच्चे के लिए हर वह दुख सहती है, जिससे बच्चे के चेहरे पर मुस्कान बनी रही।

माँ बड़ी अद्भुत होती है, बच्चा बीमार होता है तो नींद माँ को नहीं आती। वह बच्चे के रोने के अंदाज से समझ जाती है कि बच्चा भूखा है या पेट में दर्द हो रहा है। कहा जाता है प्रसव पीड़ा इस दुनिया की सबसे बड़ी पीड़ा है जो हर माँ खुशी-खुशी सहन करती है ताकि एक नवीन जीवन धरा पर आ सके। कहा जाता है एक माँ बच्चे को जन्म देते समय लगभग 20 हड्डियों के एक साथ टूटने के बराबर दर्द का सहन करती है।

भारतीय भाषाओं में माँ को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। भारत में 4 भाषा परिवार हैं इंडो-आर्यन, द्रविड़, ऑस्ट्रोएशियाटिक एवं तिब्बतो-बर्मन। भारतीय भाषाओं में 'माँ' शब्द इन्हीं भाषा परिवारों से बना है।

माँ, माता- ये इंडो-आर्यन परिवार की संस्कृत भाषा के 'मातृ' शब्द से बने हैं।

अम्मा- द्रविड़ियन भाषाओं में माँ के लिए 'अम्मा' शब्द बना है।

आई, माई- मराठी में 'आई' और भोजपुरी/ मैथिली में 'माई' शब्द है जो प्राकृत का अपभ्रंश है।

ईजा- उत्तराखंड में माँ को 'ईजा' कहते हैं। ये वैदिक संस्कृत के 'ईय' या 'ईया' से बना है।

माय, मेई- संथाली, मुंडारी और खासी जैसी आदिवासी भाषाओं में ये शब्द मिलते हैं।

माँ 9 महीने बच्चों को कोख में रखकर सींचती है। पिता तमाम उम्र उसकी परवरिश खुशी-खुशी करता है। पिता जो जीवन में शायद सबसे अधिक कुर्बानी देता है और जिसे जीवन में सबसे कम क्रेडिट नसीब होता है। पिता आखिर कौन होते हैं, पिता वह हैं जो नौकरी पर जाता तो जवान है पर लौटता बूढ़ा होकर है। यदि घर की चहारदीवारी माँ होती है तो पिता घर की छता। त्योहारों पर सभी घरवालों को नए कपड़े दिलाकर खुद सबसे पुरानी कमीज पहनने वाले होते हैं पिता।

विज्ञान की भाषा में समझें तो सोचें क्या होता अगर धूप की रोशनी सीधी धरती पर आती? धूप और धरती के बीच हमारी रक्षा करने वाली ओजोन लेयर की तरह 'रक्षक' होते हैं पिता। किसी के लिए बेस्ट फ्रेंड होते हैं पापा, तो किसी के लिए डांट लगाने वाले 'हिटलर' होते हैं पापा। किसी के लिए प्रिंसिपल से कम नहीं होते पापा तो किसी के लिए मम्मी की डांट से बचाने वाले होते हैं पापा।

एक पिता अपनी पूरी ज़िंदगी अपने बच्चों के सपने पूरे करने और घर को ठीक से चलाने में निकाल देता है। उसके जेब में पैसे हो या ना हो पर दिल में हौसला जरूर होता है। पिता के ऊपर किसी ने बहुत अच्छा लिखा है कि-

“पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है।

पिता नन्हे से परिंदे का बड़ा आसमान है।

पिता है तो घर में प्रतिपल राग है।

पिता से माँ की चूड़ी बिंदी और सुहाग है।

पिता है तो बच्चों के सारे सपने हैं।

पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं।”

माँ से तो हम अपने प्यार और लड़कपन का इजहार कर लेते हैं, लेकिन पिता से उतना खुलकर जाहिर नहीं कर पाते। लेकिन हर बच्चे की नजर में पापा ही उनके पहले 'सुपर हीरो' होते हैं। एक ऐसे सुपर हीरो, जो किसी बैटमैन या स्पाइडर मैन की तरह हवा में तो उड़ते नहीं हैं, ना ही उनके पास कोई सुपर पॉवर होता है, लेकिन फिर भी हमारी सारी इच्छाएं झट से पूरी कर देते हैं।

पिता हर बच्चे के जीवन में एक ऐसी भूमिका निभाते हैं, जिसे कोई और नहीं निभा सकता। यह भूमिका बच्चे पर बहुत गहरा असर डालती है और उसे एक इंसान के रूप में ढालने में मदद करती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पिता बच्चों की ज़िंदगी में सांचे की तरह होते हैं। उनका ज्ञान, उनकी सीख और परवरिश ही हमें आकार देती है। पिता बचपन से लेकर बड़े होने तक ढाल की तरह खड़े रहते हैं। पिता पूरा जीवन हमारे लिए गुजार देते हैं। पिता से सीखना हो तो

- घर की जिम्मेदारी कैसे निभाना है ये सीखें
- बिना घबराए चुनौतियों से कैसे करें सामना, ये सीखें
- हारकर भी कैसे जीतना हैं, ये सीखें
- निःस्वार्थ होने की भावना सीखें
- सम्मान देने की भावना सीखें
- अपनों के लिए जीवन समर्पण कर देना सीखें

इस दुनिया में सिर्फ माँ-बाप का रिश्ता ही है जो बिना स्वार्थ का होता है। अपने बच्चों के साथ उनका सिर्फ इतना ही इंटरैक्ट होता है कि उनके बच्चे कामयाब बने, नेक बने इसके अलावा उनका कोई सेल्फ इंटरैक्ट कभी नहीं होता। माँ-बाप बच्चे के जन्म से ही उसकी सारी जिंदगी की चिंताओं को अपने सर ले लेते हैं। पढ़ाई-लिखाई से लेकर शादी-विवाह तक सबकी फिक्र उसी पल से होने लगती है। माँ-बाप उसी समय से अपने बच्चे के लिए थोड़ा-थोड़ा पैसा जमा करना शुरू कर देते हैं। एक बाप अपने जीवन भर की कमाई एक झटके में हंसते-हंसते अपने बच्चों को दे देता है। माँ-बाप अपने बच्चों के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं।

आइए, अब बात करते हैं उस समय का जो जीवन का सबसे मजेदार एवं सबसे महत्वपूर्ण पल होता है। यह वही समय होता है जिसमें बच्चों का भविष्य बनता है या बर्बाद होता है। यह समय जीवन का निर्णायक समय होता है। जो 14 वर्ष से 25 वर्ष की उम्र होती है। इसमें बच्चों के दिमाग से लेकर शरीर में बहुत ज्यादा बदलाव देखने को मिलता है। यह वही उम्र होता है जिसमें इनके हार्मोस जंप करने लगते हैं और इसका सबसे गंभीर असर यह होता है कि यह हार्मोस बच्चों को पेरेंट से दूर करने लगते हैं क्योंकि इस उम्र में बच्चों को चाहिए आजादी और माँ-बाप वो आजादी देते नहीं क्योंकि वह जानते हैं इस तरह की आजादी के लिए यह उम्र सही नहीं है। इसलिए

अभिभावक उन्हें रोकते हैं, समझाते हैं। उनको पता है यह उम्र फिसलने वाली है। अब यहाँ बच्चों को ऐसा लगता है कि यही दो लोग हैं जो मेरे दुश्मन हैं जो मेरे कामों में रोक-टोक करते रहते हैं। अब यहाँ बच्चे माँ-बाप से झूठ बोलना शुरू कर देते हैं चीजें छुपाना शुरू कर देते हैं। बच्चों को अब दोस्तों के साथ रहने में ज्यादा मजा आने लगता है। अपने ही माँ-बाप अब दुश्मन दिखाई पड़ने लगते हैं। अगर किसी बात पर माँ-बाप डांट दें, तो आजकल के



बच्चों का एक पसंदीदा डायलॉग है “Our Parents are outdated” “पापा आप सठिया गए हो।” अगर बच्चे ऐसा कर रहे हैं तो इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, यह प्राकृतिक है सभी के साथ होता है। मैं भी इस उम्र के पड़ाव से गुजरा था तो मुझे भी माँ-पिता एवं बड़ों की ज्ञान की बातें अच्छी नहीं लगती थी। उनकी बहुत सी बातें गलत लगती थी और जो हम बोलते थे वही सही लगता था। लेकिन जब जीवन का असली मतलब समझ में आने लगा, तब पता चला कि नहीं, वो जो बताते थे वह सही था ना कि मैं। हमारे माँ-बाप, बड़े-बुजुर्ग जो हमें बताते हैं उन्होंने उस जीवन को जिया है, समझा है, परखा है। जो हमें किताबों में पढ़ाया जाता है, वे उसे अपने जीवन में करके आगे बढ़े हैं, अनगिनत समस्याओं, परिस्थितियों का सामना किये हैं, तब उन्होंने जो अपने जीवन से सीखा वे ही हमें बताते हैं, जो 100% सही होता है, जो हमारे जीवन को आसान बनाता है, उनके पास हर परिस्थितियों से निपटने एवं सामना करने का सहज उपाय होता है।

माँ-बाप की सबसे बड़ी चिंता यही होती है कि उनके अपने बच्चे किसी गलत संगत में पड़कर कोई गलत रास्ता ना ले लें क्योंकि, कुछ रास्ते ऐसे हैं जिस पर वापसी करीब-करीब नामुमकिन होता है जैसे नशे का रास्ता जहां एक बार इंसान चला जाए तो फिर वापस नहीं लौटता। कोई ऐसा कदम ना उठाए जिसका पछतावा उन्हें सारी उम्र हो। एक शेर है कि “एक गलत कदम उठा था राहें शौक में - एक गलत कदम उठा था राहें शौक में और मंजिल तमाम उम्र मुझे ढूंढती रही” आदमी एक ही गलती करता है और फिर रास्ता कभी मिलता नहीं।

आज के अभिभावकों को अपने बच्चों की परवरिश ऐसी करनी चाहिए कि बच्चे को कोई भी या किसी भी तरह के समस्या हो तो वे अपने अभिभावक से इन बातों को बेझिझक साझा कर सकें। ये तब संभव होगा जब अभिभावक अपने बच्चों के साथ एक दोस्त की तरह व्यवहार स्थापित करें, ना कि कठोर अभिभावकों की तरह। यानी एक ऐसा माहौल जिसमें बच्चों को अपने अभिभावकों के साथ अपने बातों को साझा करने के लिए डर ना हो और वे बेझिझक अपनी बातों को रख सकें, क्योंकि अक्सर यह देखा जाता है कि बच्चे अभिभावक के डर से अपने बातों को साझा ही नहीं कर पाते हैं। लेकिन हाँ बच्चों के मन में एक ऐसा भी बीज जरूर बोना चाहिए कि बच्चे कोई भी गलत काम करने से पहले अपने अभिभावकों के बारे में जरूर सोचें और जानबूझकर गलत काम ना करें।

इसमें स्कूल टीचर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं यदि कक्षा के पाठ्यक्रम के साथ-साथ जीवन के पाठ्यक्रम को भी समझाएँ बच्चों को बताएँ कि कुछ भी छुपाएँ नहीं और अपनी सभी छोटी-बड़ी बातें अपने टीचर से या अभिभावक से चर्चा जरूर करें, उन्हें समझाएँ कि अगर कोई भी समस्या है तो उसका हल भी जरूर है।



हमारी श्रीनगर यात्रा



किशोर कुमार राही
व.लेखापरीक्षा
अधिकारी

जीवन की आपाधापी, भागदौड़ या यूँ कहें कि व्यस्त जीवनशैली के बीच जब मन और शरीर दोनों थक जाते हैं, तब यात्रा न केवल नए अनुभवों की सौगात लाती है, बल्कि हमें आत्मिक रूप से भी ताजगी प्रदान करती है। यह न केवल हमारे ज्ञान को बढ़ाती है, बल्कि हमारी आत्मा को भी तृप्त करती है।

उसी ताजगी और शांति के लिए बच्चों व पत्नी सहित मेरा भी मन था कि इस बार किसी ठंड और शांत जगह जाया जाए, जहाँ प्रकृति का भरपूर आनंद मिल सके। काफी सोच-विचार और सुझावों के बाद हम सभी ने एकमत होकर श्रीनगर जाने का निर्णय लिया। श्रीनगर, जिसे कश्मीर का दिल कहा जाता है, प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण, और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संगम है। बचपन से सुनते आए थे कि कश्मीर धरती पर स्वर्ग है, अब समय था इस स्वर्ग को अपनी आँखों से देखने का। कश्मीर की राजधानी श्रीनगर, झीलों, पर्वतों और बागों का शहर है। यह न केवल प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, बल्कि आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह यात्रा, स्वर्ग सरीखी जगह को अपनी आँखों से देखने का सपना साकार होने की कहानी है। यह मेरे जीवन की सबसे सुंदर और अविस्मरणीय यात्राओं में से एक रही। इस यात्रा के दौरान हमने श्रीनगर के साथ-साथ गुलमर्ग, पहलगाम और सोनमर्ग जैसे रमणीय स्थलों का भ्रमण किया, जो हर दृष्टि से अद्वितीय थे।

यात्रा की योजना व तैयारी:

यात्रा के लिए हमने अप्रैल के दूसरे सप्ताह में जाने का निश्चय किया क्योंकि, इस समय कश्मीर में मौसम सुहावना होता है और इस समय बर्फ पिघलने लगती है व हरियाली लौट आती है। हमने यात्रा की तारीखें तय कीं और टिकट, होटल बुकिंग और आवश्यक दस्तावेज की तैयारी में लग गए थे।

राँची से दिल्ली व दिल्ली से श्रीनगर तक का सफर:

सुबह-सुबह उठकर तैयार हुए और राँची एयरपोर्ट से नई दिल्ली की फ्लाइट पकड़ी। यान में बैठते ही यात्रा का उत्साह चेहरे पर दिखने लगा। बैग में गर्म कपड़े, कैमरा और बहुत सारी उम्मीदें थीं।

रास्ते में खिड़की से बाहर झाँकते हुए खेत, पहाड़ और नदियाँ देखकर ऐसा लगा मानो भारत अपने हर रंग में मुस्कुरा रहा हो। लगभग डेढ़ घंटे की उड़ान के बाद हमलोग नई दिल्ली पहुँचे। वहाँ की हवा में गर्मी थी एवं माहौल नया लगा। चूँकि श्रीनगर की फ्लाइट अगली सुबह थी इसलिए होटल में चेक-इन किया, रात का खाना खाया और श्रीनगर की कल्पनाओं में खोए सो गए।

अगली सुबह हमने दिल्ली से श्रीनगर की फ्लाइट ली। जैसे ही विमान ने कश्मीर की वादियों में प्रवेश किया, नीचे बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ, घुमावदार नदियाँ, छोटे-छोटे मकान और हरे-भरे वृक्षों का दृश्य मन मोह लेने वाला था। मानो किसी चित्रकार की कैनवास पर उकेरी गई कोई कल्पना हो। श्रीनगर एयरपोर्ट (शेख उल-आलम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा) पर टैक्सी हमारा इंतजार कर रही थी क्योंकि हमने पहले से ही पैकेज बुक कर रखा था जिसमें होटल के साथ लोकल भ्रमण के लिए वाहन भी शामिल था। एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही ठंडी हवा का झोंका हमें यह एहसास दिला गया कि हम वाकई 'धरती के स्वर्ग' में आ पहुँचे हैं। श्रीनगर एयरपोर्ट से लगभग 19 किलोमीटर दूरी तय कर 2 बजे तक हम होटल में थे। फ्रेश होकर खाना खाया, थोड़ा आराम कर हमारा प्लान लोकल भ्रमण का था, जिसमें श्रीनगर की खासियत मुगल गार्डन, जिनमें निशात बाग, शालीमार बाग और चश्मे-शाही, साथ ही ट्यूलिप गार्डन देखने की लालसा शामिल थी।

(1) मुगल गार्डन – इतिहास और सौंदर्य का संगम:

हमारी यात्रा की सुखद शुरुआत एक खुशनुमा शाम से हुई। श्रीनगर की सड़कों पर हल्की धूप और पहाड़ियों से उतरती ठंडी हवा



के बीच हमारी टैक्सी डल झील के किनारे चलते हुए ज़बरवान पहाड़ियों की ओर बढ़ रही थी। जिसकी तलहटी में मुगल गार्डन स्थित है जो अपने स्थापत्य और प्रकृति के संगम के लिए प्रसिद्ध है। निशात बाग, शालीमार बाग और चश्मा शाही तीनों ही बाग मुगलों द्वारा बनाए गए थे। जो आज भी उतने ही सुंदर और सुव्यवस्थित थे। हमने निशात बाग में घंटों बैठकर प्रकृति की सुंदरता का आनंद लिया। निशात बाग डल झील के पूर्व में स्थित सीढ़ीनुमा मुगल बाग है। यह कश्मीर घाटी का सबसे बड़ा मुगल बाग है। निशात बाग मतलब "हर्ष का उद्यान" अथवा "खुशियों का बगीचा"। रंग-बिरंगे फूलों की कतारें, पानी के फव्वारे, छायादार वृक्ष और बर्फ से ढंके पहाड़ों की छाया में ये बाग किसी स्वर्ग से कम नहीं लग रहे थे।

इसके बाद हम जहाँगीर द्वारा अपनी प्रिय एवं बुद्धिमती पत्नी मेहरुन्निसा (जिसे नूरजहाँ की उपाधि दी गई थी) के लिये बनवाए गये विख्यात शालीमार बाग पहुँचे, इस बाग में चार स्तर पर उद्यान बने हैं एवं इसके बीचों-बीच एक मनोहर जलधारा बहती है। इसकी जलापूर्ति निकटवर्ती हरिवन बाग से होती है। उच्चतम स्तर पर बना उद्यान हरम की महिलाओं हेतु बना था। बाग की पगडंडियों पर चलते हुए हर मोड़ पर नया दृश्य मिलता - कभी छोटे बच्चों की हँसी, कभी कपल्स की तस्वीरें, और कभी एकांत में बैठे जोड़े प्रकृति से बातें करते दिखे। तभी तो इसके पूर्ण निर्माण होने पर जहाँगीर ने एक प्रसिद्ध अभिव्यक्ति कही थी: "यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।"

ट्यूलिप गार्डन की सैर – एक अनुभव

हमारा आज का अंतिम पड़ाव था ट्यूलिप गार्डन। जैसे ही हम ज़बरवान पर्वत की तलहटी में स्थित इंदिरा गांधी ट्यूलिप गार्डन पहुँचे, एक अनोखी रंग-बिरंगी दुनिया हमारे सामने थी। प्रवेश द्वार से ही फूलों की भीनी-भीनी खुशबू मन को बाँधने लगी। चारों ओर ट्यूलिप की लाल, पीली, सफेद, बैंगनी और नारंगी रंगों की कतारें ऐसे बिछी थीं जैसे धरती पर इंद्रधनुष उतर आया हो, या यूँ कहें कि ये एक सजीव कालीन की तरह ज़मीन पर फैले थे, हर कतार एक अलग रंग, हर दिशा एक नई खुशबू। इन फूलों की पंखुड़ियाँ सूरज की रोशनी में चमक रही थीं और उनके बीच चलती ठंडी बयार एक अद्भुत एहसास दे रही थी। एक किनारे बैठ कर गरम कहवा (कश्मीरी चाय) की चुस्कियों के साथ दूर डल झील की झलक मिलना किसी सपने जैसा लग रहा था। जब सूरज ढलने लगा, तब बाग की सुंदरता एक नये रूप में सामने आ रही थी - हल्की सुनहरी रोशनी में ट्यूलिप की पंखुड़ियाँ और भी अधिक जीवंत हो रही थीं। हम धीरे-धीरे उन फूलों के बीच बनी पगडंडी पर चलते गये। हर कदम पर कुछ रुक कर देखना पड़ता था: एक फूल की बनावट, उसके रंगों का मेल, या फिर उसके ऊपर बैठा कोई भंवरा। गार्डन के अंत में एक ऊँचा सा

प्लेटफॉर्म था, जहाँ से पूरा ट्यूलिप गार्डन, डल झील और श्रीनगर का नज़ारा एक साथ दिख रहा था। हमें वहाँ कुछ देर बैठ कर काफी सुकून मिला - न शोर, न भीड़, सिर्फ हवा, फूल और मन की शांति। सूर्यास्त होने पर हम वापस होटल खाना हो गये, रास्ते में एक नर्सरी से हमने तीन ट्यूलिप के पौधे खरीदे- लाल, पीला एवं सफेद।

(2) सोनमर्ग – हिमालय की गोद में स्वर्णिमा घाटियाँ : बर्फ के परे एक स्वर्ग



श्रीनगर की सुबह हमेशा सुंदर होती है, लेकिन उस दिन कुछ खास था। हवा में सर्दी थी और मन में उत्साह - हम सोनमर्ग की ओर निकल पड़े थे। श्रीनगर से लगभग 80 किलोमीटर दूर और 3000 मीटर की ऊँचाई पर जाने के लिए। हमने जैसे ही शहर की सीमा पार की, चारों ओर फैली हिमालय की ऊँचाइयाँ, बर्फ से ढंकी चोटियाँ और सिंध नदी की कल-कल ध्वनि स्वागत कर रही थी। रास्ते दोनों ओर देवदारों से ढंके थे। गगनगीर पहुँचते ही पहली झलक मिली उस सुरंग की, जो आज हजारों लोगों की उम्मीद बन चुकी है - Z- मोर्ह टनल (सोनमर्ग सुरंग)। सुरंग में घुसते ही वातावरण बदल गया। अंदर एलईडी लाइटों से रोशन सुव्यवस्थित सड़कें और सुरक्षा संकेत दिखाई दे रहे थे। यह आधुनिक भारत की इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट उदाहरण थी जो प्राकृतिक सौंदर्य, आधुनिक निर्माण और सांस्कृतिक विरासत का संगम प्रतीत हुई। लगभग 6.5 किलोमीटर व 10-15 मिनट की यात्रा के बाद जब हम सुरंग से बाहर निकले, तो सोनमर्ग का जादुई दृश्य सामने था। यह कोई आम सुरंग नहीं, बल्कि ऐसा मार्ग था जो हमें ठंडी, खतरनाक ढलानों से बचाकर सीधे कश्मीर का स्वर्ग द्वार कहा जानेवाला - सोनमर्ग की धरती तक ले गया। बर्फीले ग्लेशियर और ट्रेकिंग के लिए प्रसिद्ध सोनमर्ग यानी 'सोने की घास' वाला स्थान और सच में, हरियाली और बर्फ पर गिरती धूप उसे सोने-सा चमका रही थी। बर्फ से ढंकी घाटियाँ, हिमाच्छादित पेड़ और नीला आकाश-मानो किसी स्वप्नलोक में प्रवेश कर गए हों। ठंडी हवा चेहरे को छू रही थी और दूर थाजीवास ग्लेशियर की चमकती हुई बर्फ आँखों को चकाचौंध कर रही थी।



हमने एक स्थानीय गाईड से मोलभाव कर घोड़े किराए पर लिए, थाजीवास ग्लेशियर तक घुड़सवारी करते हुए पहुँचना रोमांच से भरपूर रहा। रास्ता थोड़ा कठिन था, लेकिन बर्फीले रास्ते, चट्टानों के बीच बहती नदियाँ, और दूर तक बर्फ से ढंकी चोटियाँ मन को छू रही थीं। घोड़े की पीठ पर ऊँचे-नीचे रास्तों से गुजरते हुए, जब हम ऊपर पहुँचे, हवा में बर्फ की गंध थी और एक अजीब सी नीरवता - न शोर, न भीड़, सिर्फ प्रकृति का मधुर संगीत। चारों ओर फैला बर्फ का मैदान और उस बर्फ में फिसलते बच्चे, स्लेज गाड़ी, स्नोमैन बनाते परिवार और कैमरे क्लिक करते जोड़े व परिवार। वहाँ हमने भी बर्फ पर बहुत ही मौज मस्ती की, ढेरों वीडियो, फोटो, रील्स इत्यादि बनाये। बर्फीले मैदान के बीच नागपुरी गाने पर हमारे डांस की कोशिश वर्षों तक जेहन में रहेगी। हम सब मस्ती के मूड में अठखेलियाँ कर ही रहे थे कि तेज हवा के साथ हल्का बूँदा-बौंदी होने लगी। ठंड से हमारा हाल बेहाल होने लगा। 10-15 मिनट के बाद बारिश रुकने पर हमें वहाँ गरमागर्म मैगी और चाय की गर्माहट से थोड़ा राहत, ताजगी और आनंद मिला। इस दरम्यान वहाँ के स्थानीय लोगों से बातचीत भी हुयी, उनकी सादगी और मेहमाननवाजी हमें बहुत भायी।

शाम ढलते-ढलते हम लौटे। पीछे छोड़ आए उस सोनमर्ग की उस सफेद परियों की घाटी को, लेकिन मन अब भी वहीं था।

(3) पहलगाम: लिह्र नदी, अरु, बेताब और चंदनबाड़ी की वादियों में खोया एक दिन



हम सुबह-सुबह श्रीनगर से पहलगाम की ओर निकले -रास्ते में देवदारों और चिनारों के बीच सेबों के बाग झांकते नज़र आए - हरे पत्तों के बीच उजले-उजले सेब के फूल जैसे पेड़ों पर जड़े हुए आभूषण हों। जब हमने सेब बागान में घूमने की इच्छा जाहिर की तो ड्राइवर ने एक स्थानीय किसान के बाग, जो सड़क के किनारे ही था, के पास गाड़ी रोकी। बागवान ने मुस्कराते हुए हमारा स्वागत किया और

बोला, “अभी तो सेब का मौसम है नहीं, पर सेब का ताजा जूस मिल जायेगा।” हमने देखा वह जूस के साथ-साथ सेब का आचार, मुरब्बा व जैम भी बेच रहा था, कश्मीरी मिर्च के पैकेट भी रखे थे। सेब के बागों में घूमते हुए हमने जाना कि कश्मीर में सेब की कई किस्में पाई जाती हैं - रेड डिलीशियस, गोल्डन, अमरी, महाराजी और हरगामा। पेड़ की हर शाखाओं पर पत्ते कम परंतु सफेद फूलों की भरमार थी। बाग में हमसब फोटो वीडियो रील्स बना ही रहे थे, इसी बीच हमारा जूस बनकर आ गया। जूस का आनंद लेकर तत्पश्चात हमने आगे की यात्रा आरम्भ की। जैसे ही हम सोपोर के नज़दीक पहुँचे, हमारी गाड़ी एक केसर और ड्राई फूट की दुकान के सामने रोक दी गयी। ड्राइवर ने बताया साहब कश्मीर आये हैं तो केसर की दुकान भी देख ही लीजिये, लेना न लेना आपकी मर्जी। दुकानदार ने हमें कहवा पिलाकर स्वागत किया उसने बताया कि एक किलो शुद्ध केसर तैयार करने के लिए लगभग 1,50,000 फूलों की ज़रूरत होती है, क्योंकि हर फूल में सिर्फ तीन महीन लाल धागे (stigma) होते हैं, और वही असली केसर बनते हैं। उन्होंने हमें केसर का फूल भी दिखाया- बैंगनी रंग का। शुद्ध केसर की खुशबू इतनी तेज़ और सजीव थी कि शब्दों में बयान नहीं हो सकती। आगे की यात्रा में कार में केसर की हल्की खुशबू बसी रही। सगम, शोपियां, सोपोर, बडगाम, पुलवामा बिजबेहड़ा और अनंतनाग पार करते हुए खेतों में सरसों के फूलों की मनमोहक छटा बिखेर रही थी।

जैसे ही पहलगाम की सीमा में प्रवेश किया, हवा में एक अजीब सी ताजगी महसूस हुई - देवदारों की खुशबू, नदी की कल-कल ध्वनि और ऊँचे-ऊँचे पहाड़। शहर से लगभग 90 किलोमीटर दूर करीब 2.5 से 3 घंटे का सफर था, लेकिन रास्ते की खूबसूरती ने थकान महसूस नहीं होने दी, कैसे पहुँच गया पता भी नहीं चला। यहाँ घूमने के लिए बैसरन, अरु, बेताब और चंदनबाड़ी घाटियाँ प्रसिद्ध हैं। बैसरन जाने के लिए हमें फिर से घुड़सवारी करनी होती, समय भी सीमित था। अतः हमने बैसरन जाने का विचार त्याग कर अरु, बेताब और चंदनबाड़ी जाने का निश्चय किया।

अरु घाटी: एक चित्र में कैद होती हुई प्रकृति

लोकल यूनिनयन से एक गाड़ी किराये पर ली और पहलगाम से करीब 12 किलोमीटर दूर अरु घाटी की ओर रुख किया। रास्ता एकदम पहाड़ी, थोड़ा संकरा और घुमावदार, हर मोड़ पर बदलता दृश्य, कभी चौड़े पेड़ों के झुरमुट, तो कभी घाटियों में लहराते बादल। लेकिन वहाँ पहुँचते ही जो दृश्य सामने था - वो मेरी कल्पना से परे था। बर्फ से ढंकी चोटियाँ, हरी घास की चादर, बीच-बीच में बहती चुपचाप नदियाँ और हवा में बर्फ की सोंधी-सी खुशबू। यहाँ से कोलाहोई ग्लेशियर, तारसर झील, मार्सर और हरबागवान झील की ट्रैकिंग शुरू होती है। यहाँ का दृश्य इतना मनोहारी था कि हमने

लगभग एक घंटा केवल वहाँ बैठकर पहाड़ों और पेड़ों को निहारते हुए बिता दिया। किसी ने सच ही कहा है “यहाँ की हवा में ही दवा है, लोग यहाँ अपनी थकान धोने आते हैं।” परिवार के सदस्य फोटो, वीडियो रीलस बनाने में लगे थे। यहाँ हमने कश्मीरी पहनावे में तस्वीरें भी खिंचवाई - फेरेन, सिर पर जरीदार टोपी और हाथ में कांसे का समोवरा। मन तो निकलने का नहीं हो रहा था पर समय को ध्यान में रखते हुए हमलोग चंदनवाड़ी की ओर प्रस्थान किये।

चंदनबाड़ी व बेताब: आस्था और प्रकृति का संगम स्थल

कुछ रास्ते मंजिलों से ज़्यादा खूबसूरत होते हैं। अरु घाटी से चंदनबाड़ी का यह रास्ता उन्हीं में से एक था। रोमांचक, खतरनाक व सर्पिली घुमावदार सड़कें, चारों ओर हरियाली, पीठ पर बर्फीली पहाड़ियाँ और बीच में बहती क्रिस्टल-सी साफ़ लिद्धर नदी - यह जगह किसी स्वप्नलोक से कम नहीं। अरु घाटी से निकला ही था कि बूँदा-बाँदी शुरू हो गयी थी। लगभग 7 किलोमीटर दूर बेताब घाटी आते-आते बारिश तेज हो गयी, बेताब घाटी अमरनाथ गुफा के तीर्थमार्ग पर पहलगाम व चंदनवाड़ी के बीच पड़ती है। बेताब घाटी का नाम पड़ा सनी देओल और अमृता सिंह की फ़िल्म ‘बेताब’ (1983) के नाम पर, जो यहीं फिल्माई गई थी। पहले इसका मूल नाम हजन घाटी (Hajan Valley) था। हम इतनी ऊँचाई पर थे कि घाटी का विहंगम दृश्य गाड़ी से साफ-साफ़ दिख रहा था। हरी-हरी घास मानो जैसे कुदरत ने ब्रश से रंग कर छोड़ा हो। पार्श्व में हिम ग्लेशियर, ओह अद्भुत नजारा “जहाँ के नज़ारे फिल्मी हों, वहाँ दिल भी कुछ ज़्यादा ही धड़कता है..” हमें लगा था चंदनवाड़ी जाना व्यर्थ हो जायेगा। ड्राइवर ने बताया था “यहाँ मौसम अचानक बदल जाता है, हो सकता है वहाँ पहुँचने पर बारिश थम जाये। वैसे वहाँ रेनकोट और छाता भाड़े पर मिलता है।” अंततः हम चंदनवाड़ी पहुँचे तो बारिश थम चुकी थी। पहलगाम से 16 कि.मी. दूर, 2895 मीटर की ऊँचाई पर स्थित देवत्व और प्रकृति का मिलन स्थल चंदनबाड़ी। यह वही स्थान है, जहाँ से अमरनाथ यात्रा की शुरुआत होती है - और जहाँ बर्फ भी आस्था के रंग में रंगी लगती है। हर साल हज़ारों श्रद्धालु यहाँ से शुरू करते हैं अपनी कठिन यात्रा। कुछ जगहें देखने के लिए नहीं होतीं - महसूस करने के लिए होती हैं। चंदनबाड़ी उनमें से एक है। ऊपर बर्फ, नीचे मीठे पानी की ठंडी जलधारा, चीड़ और देवदार के पेड़ घाटी की सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। लगभग 1 घंटा हमने बर्फ पर काफी अठखेलियाँ कीं। शाम होने को थी, हमने वापस पहलगाम की ओर रुख किया। लगभग आधे घंटे बाद हम पहलगाम में थे। हल्का-फुल्का नाश्ता और कुछ खरीदारी कर हमने श्रीनगर वापसी का रुख किया। कार की खिड़की से चाँदनी में चमकती लिद्धर नदी अपनी अलग ही छटा बिखेर रही थी।

(4) गुलमर्ग का रोमांच



आज का दिन रोमांचक था क्योंकि हम श्रीनगर से लगभग 50 किलोमीटर दूर और समुद्र तल से 2730 मी. की ऊँचाई पर बसे गुलमर्ग जा रहे थे। इसका मूल नाम गौरीमर्ग था जिसे 16वीं शताब्दी में युसुफ शाह चक ने बदलकर गुलमर्ग कर दिया। गुलमर्ग मतलब ‘फूलों की घाटी’। रास्ते में सेब के बाग देवदार के घने जंगल, हरी वादियाँ और ऊँचे-बर्फीले पहाड़ हमारा मन मोह रहे थे। गुलमर्ग एक स्कीइंग डेस्टिनेशन है और यहां का गोंडोला राइड बहुत प्रसिद्ध है। यह एक केबल कार है जो ऊपर कांगडोरी और फिर अफरवात चोटी लगभग 13,000 फीट की ऊँचाई तक ले जाती है वहां से पाकिस्तान की सीमा भी दूर नहीं है। गुलमर्ग पहुँचते ही तापमान एकदम गिर गया। हमसब स्वेटर, जैकेट, टोपी पहन चुके थे। चारों ओर बर्फ की चादर बिछी थी। बादल धरती को छू रहे थे, आज गुलमर्ग के मौसम का मिजाज थोड़ा बिगड़ा हुआ था जिससे 10 मीटर से ज़्यादा दूर दिखाई नहीं दे रहा था। तेज हवा के साथ हल्की-हल्की बारिश, ठंड हाड़ कंपाने वाली थी। गोंडोला राइड का मजा भी आज किरकिरा होनेवाला था। हालाँकि जिनका पहले से ऑनलाइन टिकट बुक था। राइड के लिए पंक्तिबद्ध खड़े थे। मौसम को देखते हुए गोंडोला राइड का विचार हमने त्याग दिया लेकिन कसक रह ही गया। सबसे पहले हम गुलमर्ग के सभी कोनों से दिखाई देनेवाली एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित शिव और पार्वती को समर्पित महारानी मंदिर गये। यह मंदिर हिंदू शासक महाराज हरि सिंह द्वारा अपनी पत्नी महारानी मोहिनी बाई सिसोदिया के लिए 1915 में निर्मित करवाया गया था। 1974 की हिंदी फिल्म ‘आप की कसम’ के कुछ लोकप्रिय गीतों जैसे “जय जय शिव शंकर” की शूटिंग यहां की गई थी। तत्पश्चात हमने स्नो स्लेजिंग की, बर्फ में खेला और खूब तस्वीरें खिंचवाईं। आज बर्फ की दुनिया में कुछ घंटों ने ऐसा अनुभव दिया जो शायद उम्र भर न भूलें। गुलमर्ग की खूबसूरती शब्दों में समाहित नहीं की जा सकती - वहां की शांति, प्रकृति विस्तार और हवा में बर्फ की ठंडक आत्मा को छू रही थी। ये



अनुभव अविश्वसनीय और रोमांचकारी था। हमने कुछ देर और वहाँ बिताया और फिर वापसी की तैयारी शुरू की। वापसी में पहाड़ से नीचे उतरते ही तांगमर्ग से मौसम खुशनुमा था। आज श्रीनगर में हमारा अंतिम रात्रि था और हम हाउसबोट में रुकने वाले थे।

(5) हाउसबोट – डल झील के ऊपर तैरता एक सुंदर संसार

श्रीनगर की यात्रा तब तक अधूरी मानी जाती है, जब तक कोई डल झील की गहराइयों पर तैरते हाउसबोट्स (Houseboats) में एक रात न बिता ले। इनकी बनावट बेहद सुंदर होती है – बाहर की ओर नक्काशीदार लकड़ी की सजावट और अंदर कश्मीरी कालीन, गलीचे, कढ़ाईदार पर्दे और पारंपरिक फर्नीचर। शिकारा के ज़रिये जब हम झील के भीतर अपने हाउसबोट तक पहुँचे, तो वह क्षण किसी स्वप्न जैसा था। सामने झील का शांत नीला पानी, दूर-दूर तक बर्फ से ढंके पहाड़ और बीच में हमारा लकड़ी का सुंदर सा घर – एकदम फिल्मी दृश्य। हाउसबोट में पहुँचते ही स्वागत बहुत गर्मजोशी से हुआ। हाउसबोट के डेक पर कहवा के साथ हमारी थकान मिटाई गई। हाउसबोट के अंदर के कमरे किसी होटल से कम नहीं थे – सुंदर बिस्तर, गर्म रज़ाई, हीटर, सुंदर झूमर और हर आधुनिक सुविधा। हाउसबोट में सबसे सुंदर अनुभव होता है – साँझ का। जैसे ही सूरज पहाड़ों के पीछे छिपता है, डल झील पर सुनहरी रोशनी बिखर जाती है। झील की सतह पर पड़ती किरणें, शिकारा की धीमी चाल, पक्षियों की आवाज़ और पानी की सतह पर लहराते प्रतिबिंब – यह सब मिलकर एक स्वर्गिक दृश्य रच रहे थे। रात में हाउसबोट पर एक अलग ही शांति छा जाती है। पानी की हल्की-हल्की आवाज़ें, दूर कहीं से आती कश्मीरी गाने की धुन और सर्द हवाओं के झोंके – यह रात वास्तव में ध्यान जैसी थी। हाउसबोट में खाना भी बहुत स्वादिष्ट और घर जैसा था। लकड़ी से बने ये सुंदर और पारंपरिक घर पानी की सतह पर तैरते हुए न केवल पर्यटकों के ठहरने का ठिकाना बल्कि कश्मीरी जीवनशैली, स्थापत्य कला और मेहमाननवाज़ी के प्रतीक भी थे।

शिकारा – डल झील का तैरता सपना

हाउसबोट में रुकने का एक और आकर्षण होता है – शिकारा राइड। सुबह की शुरुआत शिकारे की सवारी से हुई। यहाँ तैरते रंग-बिरंगे शिकारे सिर्फ एक पारंपरिक नाव नहीं हैं – यह एक अनुभव है, एक एहसास है, जो दिल और आत्मा दोनों को सुकून देता है। शिकारा जैसे ही झील में सरकने लगा, एक अद्भुत शांति छा गई। पानी की सतह बिल्कुल शीशे जैसी थी, जिसमें आसमान, बादल और आस-पास की पहाड़ियाँ साफ़ दिखाई दे रही थीं। शिकारा धीरे-धीरे झील की सतह को चीरता हुआ आगे बढ़ता गया। हर चप्पू के साथ लहरों की हल्की आवाज़ मन को सुकून देती। बगल में हाउसबोट तैरते हुए दिखे और दूर शिकारा में हस्तशिल्प, फूल, सब्जी, और चाय-स्नैक्स

बेचते व्यापारी – मानो एक तैरता शहर हो। शिकारा से गुजरते हुए हमने एक हाउसबोट पर बना भारत का पहला फ्लोटिंग पोस्ट ऑफिस, जिसे दुनिया का एकमात्र तैरता हुआ डाकघर भी कहा जाता है, देखा। शिकारा स्कूल, शिकारा हॉस्पिटल और शिकारा सब्जी बाज़ार – ये सब यहाँ के जीवन का हिस्सा थे। शिकारा कश्मीरी लोगों की संस्कृति, आजीविका और भावनात्मक जुड़ाव का प्रतीक है।



प्रसिद्ध घंटाघर: लाल चौक बाज़ार

यात्रा का अंतिम दिन था और हम घंटाघर, लाल चौक पर थे। घाटी के सार को दर्शाने वाली एक जीवंत जगह जो राजनीतिक प्रदर्शनों से लेकर रंग-बिरंगे बाज़ारों, स्ट्रीट फूड बूथों से लेकर ऐतिहासिक स्थलों के लिए प्रसिद्ध। श्रीनगर की गलियों व बाज़ारों में घूमते हुए खरीदारी करना एक अलग ही अनुभव था। कश्मीरी शॉल, पश्मीना शॉल, अखरोट, बादाम और खुबानी जैसे सूखे मेवे, प्रामाणिक कश्मीरी मसाले, तीखी लाल मिर्च से लेकर सुगंधित केसर, कश्मीरी कहवा चाय, खूबसूरत बक्सों से लेकर फूलदानों तक, कालीन, लकड़ी की नक्काशी, हस्तशिल्प, कश्मीरी कढ़ाई वाले कुर्ते इत्यादि की दुकानें सजी थीं। दुकानदारों की विनम्रता और आतिथ्यभाव ने दिल जीत लिया।

वापसी की घड़ी:

यात्रा का अंतिम दिन मन को भारी कर गया। यह यात्रा न केवल मनोरंजन का माध्यम बनी, बल्कि आत्मिक शांति और जीवन को देखने के दृष्टिकोण को भी बदला। इस यात्रा ने सिखाया कि सच्ची सुंदरता बाहरी नहीं, भीतरी होती है – और प्रकृति में वह शक्ति होती है जो मनुष्य को फिर से जीवंत कर देती है। श्रीनगर, सोनमर्ग, पहलगाम और गुलमर्ग – ये सभी स्थल मेरे स्मृति पटल पर अमिट छाप छोड़ गए हैं। एक सपना जो हमने जी लिया। वहाँ की झीलें, पहाड़, लोग, भोजन और मौन – सब कुछ स्मृति में बस गया। अब जब भी जीवन थका-हारा लगेगा, मैं इन पन्नों को पलटूँगा और श्रीनगर की ठंडी हवा महसूस करूँगा।

एग्रीमेंट (दो इंसानों के बीच बनते-बिगड़ते रिश्तों की कहानी)



बिनोद कुमार प्रभात
पर्यवेक्षक

‘एग्रीमेंट’ एक ऐसी प्रेम कहानी है, जो आज के समय के युवा जोड़ों की बदलती सोच और उनके रिश्तों में बढ़ती व्यावहारिकता को दर्शाती है। यह कहानी दो कॉलेज के छात्रों राज मल्होत्रा और राखी अरोड़ा के इर्द-गिर्द घूमती है। जो प्यार में पड़ते हैं, लेकिन अपने रिश्ते को एक समझौते के रूप में परिभाषित करते हैं। उनकी यह सोच आधुनिकता और

परंपरागत मूल्यों के बीच संतुलन बनाने की एक कोशिश है। राज मल्होत्रा और राखी अरोड़ा की मुलाकात कॉलेज के पहले साल में होती है। वे दोनों पढ़ाई में अच्छे हैं और अपने कैरियर को लेकर बेहद महत्वाकांक्षी हैं। एक-दूसरे के प्रति आकर्षण महसूस करने के बाद, वे जल्द ही एक रिश्ते में आ जाते हैं। हालांकि, दोनों ही अपने भविष्य के लिए काफी गंभीर हैं और किसी भी तरह की जल्दबाजी से बचना चाहते हैं।

एक दिन, उनके बीच एक लंबी चर्चा होती है, जिसमें वे अपने रिश्ते को लेकर कुछ शर्तें तय करते हैं। वे इसे ‘एग्रीमेंट’ का नाम देते हैं, जिसमें वे अपने प्यार को कुछ नियमों के तहत बांधते हैं ताकि दोनों की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत आकांक्षाएं बनी रहें। यह समझौता राज मल्होत्रा और राखी अरोड़ा के बीच एक आपसी सहमति से हुआ है कि उनकी पढ़ाई किसी भी कीमत पर बाधित नहीं होनी चाहिए। वे

तय करते हैं कि पढ़ाई पूरी करने तक शादी नहीं करेंगे। उनकी महत्वपूर्ण शर्तें इस प्रकार हैं -

हम दोनों तय करेंगे कि दोनों में से किसी एक की नौकरी लग जाए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

हम दोनों एक-दूसरे की खुशी को सर्वोपरि मानते हैं और इसे अपने रिश्ते की नींव बनाते हैं।

इस प्रकार दोनों तय करते हैं कि जिसे भी पहले नौकरी मिलेगी, तो फिर दूसरा घर की ज़िम्मेदारी संभालेगा। यदि राज मल्होत्रा की नौकरी पहले लगती है, तो राखी अरोड़ा घर संभालेगी और अगर राखी अरोड़ा की नौकरी लगती है तो राज मल्होत्रा तब तक काम की तलाश करता रहेगा। वे सहमत होते हैं कि स्थायी नौकरी या व्यवसाय स्थापित होने तक बच्चे पैदा नहीं करेंगे।

दोनों ने जीवन भर साथ रहने का निर्णय लिया है तथा प्रेम और खुशी की शर्तों से बंधे हुए साथ रहने की शपथ ली है:-

अपने बाकी दिनों के लिए आपका ईमानदार, वफादार और प्यार करने वाला साथी बनना, हर समय एक अद्भुत और साहसी प्रेमी बनना।

अंधेरे में आपका मार्गदर्शक प्रकाश बनना, ठंड में गर्माहट भरा आराम देना और जब जीवन आपके लिए अकेले सहन करने योग्य न हो जाए तो सहारा देने वाला कंधा बनना।





जीवन के सभी रोमांचों के माध्यम से आपको सम्मान, प्यार और संजोने के लिए हम जहां भी जाएंगे, साथ-साथ जाएंगे।

अपने सपनों को आपके इर्द-गिर्द बनाना और उन्हें एक नंबर बनाना। अगर आप उस सीमा तक पहुँच जाते हैं तो आपको पकड़ने के लिए वहाँ होना, और आपसे हमेशा प्यार करना।

अपने पूरे दिल से आपको प्यार करने के लिए बिना किसी डर के व्यक्त किया गया विस्मय किसी भी शब्द में आपके साथ और आपके लिए यहाँ होना, हमेशा के लिए मैं अपने शेष जीवन के लिए इन नियमों और शर्तों का पालन करने के लिए सहमत हूँ।

शुरुआती दिनों में, उनका रिश्ता इन शर्तों के तहत अच्छी तरह से चलता है। वे दोनों पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अपने-अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश करते हैं। उनका यह समझौता उनके रिश्ते में एक तरह की स्पष्टता लाता है और उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर रखता है। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, परिस्थितियाँ बदलने लगती हैं। पढ़ाई पूरी करने के बाद, राखी अरोड़ा को एक प्रतिष्ठित कंपनी में नौकरी मिल जाती है। वहीं, राज मल्होत्रा को अपनी पसंद के क्षेत्र में नौकरी पाने में मुश्किलें आती हैं। राखी अरोड़ा की नौकरी लगने के बाद, वे अपने एग्रीमेंट के अनुसार तय करते हैं कि राज मल्होत्रा घर की देखभाल करेगा और अपनी नौकरी की तलाश भी जारी रखेगा।

शुरुआत में यह व्यवस्था ठीक लगती है, लेकिन धीरे-धीरे राज मल्होत्रा को इस बात का एहसास होने लगता है कि वह अपनी असफलताओं के कारण खुद को कमजोर महसूस कर रहा है। उसे यह बात चुभने लगती है कि राखी सफल हो चुकी है जबकि वह अभी भी संघर्ष ही कर रहा है। दूसरी ओर राखी अपने काम में व्यस्त होती जा रही है और वह घर की जिम्मेदारियों में भी उलझ जाती है। दोनों के बीच धीरे-धीरे संवाद कम होने लगती है और रिश्ते में खटास आने लगती है। राखी की बढ़ती व्यस्तता और राज की बेरोजगारी के चलते उनके बीच कई बार झगड़े शुरू हो गए। एक दिन, उन दोनों के बीच बहस हो जाती है कि उनके 'एग्रीमेंट' के कारण वे अपने रिश्ते को व्यावसायिक बना रहे हैं, जिसमें भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं बची है। राज को लगता है कि उनकी जिंदगी इस समझौते से बंधी हुई है और वे असली खुशी से दूर होते जा रहे हैं। राखी भी इस बात को महसूस करती है कि उनके रिश्ते में प्यार की जगह एक 'अनुबंध' ने ले ली है। वे दोनों

एक-दूसरे से खुलकर बात करते हैं और अपने रिश्ते की मौजूदा स्थिति पर विचार करते हैं। आखिरकार, दोनों इस बात पर सहमत होते हैं कि जिंदगी किसी एग्रीमेंट के तहत नहीं चल सकती। वे महसूस करते हैं कि एक सफल रिश्ते की नींव आपसी समझ, प्रेम, और खुशियों को साझा करने में है, न कि किसी अनुबंध में बंधे रहने में। वे अपने 'एग्रीमेंट' को खत्म करने का फैसला करते हैं और तय करते हैं कि वे अपनी जिंदगी को खुलकर जियेंगे, एक-दूसरे का समर्थन करेंगे और एक-दूसरे की खुशियों को महत्व देंगे। दोनों अपने रिश्ते को एक नई दिशा में ले जाते हैं, जहां वे एक-दूसरे के सपनों और आकांक्षाओं को समझते हैं और बिना किसी शर्त के एक-दूसरे के साथ खड़े होते हैं।

'एग्रीमेंट' एक ऐसी कहानी है जो हमें यह सिखाती है कि रिश्ते में अनुबंध और शर्तें स्थायी खुशियाँ नहीं ला सकतीं।

राज और राखी की यह यात्रा दर्शाती है कि जीवन में परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं और हमें अपनी प्राथमिकताओं और रिश्तों को समय के साथ ढालना पड़ता है।

इस कहानी का संदेश यह है कि प्यार और खुशी किसी 'अनुबंध' से नहीं, बल्कि आपसी सम्मान, विश्वास, प्यार और समझ से हासिल की जा सकती हैं।



सिंदूर



कुंदन कुमार
व.लेखापरीक्षा
अधिकारी

सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर.....की आवाज लगाता मोतिया, गांव के कुएँ के पास बैठी महिलाओं के निकट से तेजी से गुजर जाता है। मानो, मोतिया कोई सिंदूर बेचने वाला हो।

कुएँ के पास बैठी महिलाएँ, आपस में बातें करती हैं- “भगवान ने मोतिया को क्या जिन्दगी दी है? कई महीने से वह न जाने कहाँ से आकर इस गांव में बस गया है।”

‘हाँ, और केवल सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर....की रट लगाये, इधर-से-उधर भागता-फिरता है। सचमुच मोतिया पागल है।’

“हाँ दीदी, इस गाँव में यदि मोतिया का कोई अपना परिवार होता तो मोतिया के दिमाग का सही से इलाज करवा पाता। तो वह भी एक आम इन्सान की जिंदगी जी पाता।”

एक सिंदूर बेचने वाला- “सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर...। सिंदूर ले लो...। सिंदूर ले लो...। मांग की सिंदूर..., सुहाग की सिंदूर...। सिंदूर ले लो...। सिंदूर ले लो....।”

मोतिया (जोर-जोर से सिंदूर वाले की बात को दुहराता है)- “सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर...। सिंदूर ले लो...। सिंदूर ले लो...। मांग की सिंदूर..., सुहाग की सिंदूर...। सिंदूर ले लो...। सिंदूर ले लो...।”

सिंदूर बेचने वाला (डाँटता हुआ)- “चुप कर, बड़ा सिंदूर बेचने वाला बना है। तू पागल है। हमेशा पागल ही रहेगा। खुद शादी तो किया नहीं, एक चुटकी भर सिंदूर अपनी पत्नी के लिए खरीदने की समर्थ रखता नहीं।”

मोतिया (दुबारा)- “सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर...। सिंदूर ले लो। सिंदूर ले लो....।”

सिंदूर बेचने वाला- “रुक-रुक मैं अभी तुझे बताता हूँ। बड़ा सिंदूर बेचने वाला बना है।”

मोतिया (दुबारा)- “सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर...। सिंदूर ले लो। सिंदूर ले लो....।”

(सिंदूर बेचने वाला मोतिया को पीटने के लिये दौड़ता है।)

(मोतिया, सिंदूर बेचने वाले से उलझ पड़ता है।)

मोतिया (गुस्से में)- “यह ले..., यह ले.. मैंने, तेरे सिंदूर की डिब्बी को जमीन पर फेंक दिया।”

(सिंदूर बेचने वाला मोतिया के डर से, अपनी सिंदूर की पोटली वहीं छोड़, भाग खड़ा होता है।)

एक महिला (डाँटते हुए)- “अरे, अरे.... मोतिया, तूने यह क्या किया? जिस सिंदूर को महिलायें, अपने पति की लंबी आयु व सुखी वैवाहिक जीवन के लिए अपनी मांग में लगाती हैं। उस सिंदूर की डिब्बी को तूने इस तरह रास्ते पे बिखेर दिया।”

दूसरी महिला- “इस तरह, सिंदूर की डिब्बी का जमीन पर फेंकना अशुभ माना गया है। बेचारे सिंदूर वाले का तूने कितना नुकसान पहुंचा दिया है।”

मोतिया-“सिंदूर..., सिंदूर..., सिंदूर...।” (वहां से भाग जाता है।)

पारो की माँ, मोतिया ने सिंदूर बेचने वाले के सिंदूर को जमीन पर पटक कर ठीक नहीं किया। आज के बाद, मोतिया के भय से, वह सिंदूर बेचने वाला क्या? दूसरा सिंदूर बेचने वाला भी इस गाँव में आने की हिम्मत नहीं जुटा पायेगा।

“हाँ, जिन सिंदूर बेचने वाले के चलते, हमारे घर के डब्बे की सिंदूर कभी खत्म नहीं होती थी। गांव की हर माँ-बेटियों की मांग, हर वक्त सिंदूर से लबालब भरी पड़ी रहती थी। मोतिया ने सिंदूर को जमीन पर बिखेर कर अच्छा नहीं किया।

‘अरे मोतिया कोई भविष्यवक्ता तो नहीं...। वह कश्मीर के पहलगाम में हुए अटैक के बहुत पहले से, सिंदूर, सिंदूर, सिंदूर...की आवाज लगाकर, लोगों को सतर्क करने की कोशिश तो नहीं कर रहा था ? कहीं, वह पाकिस्तान का जासूस बनकर, इस गांव में तो नहीं रुका हुआ है।’

‘अरे नहीं नहीं..., वह बेचारा क्या भविष्यवक्ता होगा? वह क्या पाकिस्तान का जासूस होगा? मोतिया तो सचमुच एक पागल है।’

पहलगाम अटैक के एक दिन बाद, मैंने जब उससे कहा था- ‘मोतिया... तू भारत-पाकिस्तान की सीमा पर चला जा। जिन आतंकवादियों ने हमारी माँ-बहनों के मांग की सिंदूर को मिटाने की कोशिश की है। जाकर, उन्हें तू गोलियों से छलनी कर दे। जाकर उन आतंकवादियों को बता दे। यदि, तू हमारा एक मारेगा। हम सब तेरे सौ माँ-बहनों के मांग की सिंदूर उजाड़ देंगे।’

उस दिन, मेरी इन बातों को सुनकर मोतिया बहुत गुस्से में था। वह जोर-जोर से सिंदूर, सिंदूर, सिंदूर....की आवाज लगाता हुआ, मुझे घूरता हुआ, सकरा के घर की तरफ तेज गति से भागता चला गया था। सकरा के घर के पास बैठकर वह और जोर-जोर से सिंदूर, सिंदूर, सिंदूर...की आवाज लगाता रहा।



सकरा से मोतिया का न जाने क्या रिश्ता है। मोतिया दिन-भर, इधर-उधर भटकता फिरता जरूर है। मगर रात में वह सकरा के घर के दरवाजे के बाहर सोने चला जाता है।

“मैंने गौर किया है मोतिया, सकरा के घर के आगे शायद ही कभी सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर..की आवाज लगाता है। वह उसके घर से थोड़ी दूर आगे जब जाता है, तभी वह सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर..की आवाज लगाना शुरू कर देता है। पता नहीं मोतिया का सिंदूर से क्या रिश्ता है” ?

“जैसे गांव के सभी लोग सकरा से डरते हैं। वैसे ही, मोतिया भी सकरा से डरता है। मोतिया को लगता है, यदि उसने सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर.. की आवाज लगाई, तो सकरा उसका भोजन-पानी बंद कर देगा। उसकी खूब पिटाई करेगा। कई बार तो सकरा उसकी पिटाई भी कर चुका है” ।

“फिर भी मोतिया, सकरा के घर से जाने का नाम नहीं लेता। जैसे उसका सकरा के साथ पूर्व जन्म का कोई रिश्ता रहा हो”।

“परन्तु उस दिन जब मैंने उसे सरहद पर जाकर आतंकवादियों को मारने की बात मोतिया से कही। उसके बाद, वह सकरा के घर के बाहर जाकर सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर..की आवाज लगाता रहा”।

“अरे मोतिया पागल है। उसे भला पिटाई से क्या फर्क पड़ने वाला”।

“वैसे सकरा को किसी माँ-बहन के मांग को सिंदूर से भरा होना या नहीं भरा होना से क्या क्या फर्क पड़ता है? चाहे कोई आतंकवादी भारत की सीमा में घुस कर किसी के मांग की सिंदूर मिटा दे। चाहे मोतिया, कितने भी जोर से सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर.. की आवाज लगा ले”।

“हाँ बहन सकरा ने तो खुद दहेज की लालच में अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी। उसने अपनी पत्नी को मारने के बाद उसके मांग में बिना सिंदूर भरे श्मशान घाट के लिये विदा कर दिया था” ।

“उसने तो संपत्ति के लिये, अपने बाप को भी मार डाला था और अपनी माँ के मांग की सिंदूर उजाड़ दिया था। उसकी बूढ़ी माँ बेचारी चुपचाप गांव में इधर-उधर भटकती फिरती है।

“सकरा है ही एक नम्बर का छटा हुआ क्रिमिनल। हमारे पति उससे हमेशा दूरी बनाये रखते हैं। कई बार वह उन्हें अपने साथ इधर-उधर ले जाने की कोशिश करता है। परन्तु, वे हर वक्त किसी न किसी बहाने उससे कन्नी कटवाते फिरते हैं”।

“हाँ दीदी...गांव में सकरा से सभी डरते हैं। कब उसका दिमाग फिर जाये। वह कब किसी की माँ-बहने के मांग की सिंदूर उजाड़ दे।

वह मोतिया से भी बड़ा पागल है। मालूम नहीं आजकल क्या काम-काज करता है ? कई-कई दिनों तक अपने घर से गायब रहता है”।

“बहन...जब सरहद पर आतंकवादियों के द्वारा किसी की हत्या की जाती है, उस वक्त, तुरंत पूरा देश में हौवा-तौवा मच जाता है। सरकार, तुरंत एक्शन में आ जाती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद की चर्चा होने लगती है” ।

“हाँ बहन लेकिन, सकरा को देखो, उसने अपनी बीबी को मार डाला। उसने, अपने माँ के मांग की सिंदूर को मिटा दिया। उसने अपने आतंक से न जाने कितने घरों के बहन-बेटियों के मांग की सिंदूर उजाड़ा है। भला, उसका तो कोई कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता”।

दीदी...’सकरा का राजनीति-पुलिस-प्रशासन में अच्छी पकड़ है। उसके अपराध की चर्चा लोग खुल कर नहीं कर सकते हैं। हमारा देश ऐसे अपराधियों से भरा पड़ा है। सरहद के आतंकवादियों से भी ये खतरनाक हैं”।

“हाँ बहन इनके डर से लोग खुल कर बोल नहीं पाते हैं। देश का कुछ खास तबका, जिनका ऊपर ओहदे वाले तक पहुँच-पकड़ है। वे ही इस देश में आगे बढ़ पा रहे हैं। बाकि लोग तो बस इस देश में रहकर किसी प्रकार अपने जीवन को गुजार रहे हैं”।

“अरे बहन, इसीलिए तो हमारे देश को जिस तेज गति से विकास करना चाहिये, उस तेज गति से विकास नहीं कर पा रहा है। यह देश दिमाग वालों से भरा पड़ा है। लेकिन सभी को बराबर रूप से आगे बढ़ने का मौका नहीं दिया जाता है” ।

“हाँ बहन...’इस तरह के कई अपराधी, इस देश के अन्दर अपनी राज-पाट चला रहे हैं। अपने फायदे की खातिर कई बहन-बेटियों के मांग की सिंदूर मिटा रहे हैं”।

सरकार को उनका सर्वनाश उसी प्रकार करना चाहिये जैसे हमारे सरहद के सिपाही यहाँ के बहन-बेटियों को सरहद के आसपास दूसरे देश की हरकतों से तकलीफ होने पर ईमानदारी से वे वैसे आतंकवादियों को निपटा देते हैं।

“परन्तु बहन, घर के अन्दर के अपराधी जो उन आतंकवादियों से कम नहीं हैं, थोड़े से लालच के चक्कर में यहाँ के पुलिस-प्रशासन-राजनीतिज्ञ के कुछ लोग उनसे निपटने में नाकाम रहते हैं”।

“हाँ बहन, एक बेटी की मांग को भरने में एक बाप का चप्पल घिस जाता है। एक पिता के जिन्दगी की जमा पूंजी दहेज और अन्य प्रकार के खर्च में निकल जाते हैं”।

“एक भाई, एक पति को अपनी बहन-पत्नी को सुहागन बनाये रखने में अपना सारा जीवन गुजार देना पड़ता है। एक माँ के कोख से



पैदा लेने वाली एक बेटी की मांग में सिंदूर भरकर घर से विदा करते वक्त एक माँ का भावुक होना, यह एक भावनात्मक क्षण होता है। एक सकरा है और उसके जैसे अन्य अपराधी, जो मिनटों में एक बहन-पत्नी के सुहाग को बर्बाद कर देते हैं।

सचमुच बहन... “कोर्ट-कचहरी का चक्कर लगा-लगाकर लोग अवसाद का जीवन जीने लगते हैं। कई माँ-बहनों के मांग की सिंदूर इन कारणों से भी उजड़ जाती हैं। काश, सरहद की तरह यहाँ का भी कानून चुस्त-दुरुस्त होता। अपराधियों को उनकी अपराध की सज़ा तुरंत मिल पाती।”

कुछ दिन बाद कुएँ के सामने फिर महिलायें इकट्ठा होती हैं -

“अरे पारो की माँ तुझे पता है कल रात किसी ने सकरा की हत्या कर दी।”

“हत्या... सकरा की हत्या...? किसने...? किसने सकरा की हत्या कर दी...?”

हाँ बहन... “सकरा की हत्या के बाद से मोतिया का कोई अता-पता नहीं है। लोग कह रहे हैं, मोतिया ने ही सकरा की हत्या कर दी है और उसके बाद गांव से फरार हो गया है।”

“मोतिया... भला एक पागल व्यक्ति किसी की हत्या क्यों करेगा? सकरा ने मोतिया का क्या बिगाड़ा था ? उसने तो उसे अपने घर के दरवाजे पर शरण दे रखी थी।”

“ईश्वर का बहुत-बहुत शुक्रिया। जिस पुलिस-प्रशासन को सकरा जैसे अपराधी से निपटना मुश्किल था। उसे मोतिया ने निपटा दिया। सकरा ने न जाने कितने माँ-बेटी के मांग की सिंदूर मिटाया है। सचमुच, कहा गया है ईश्वर के घर में देर है, अंधेर नहीं। आज सकरा को उसके किये की सज़ा मिल गई है।”

एक महिला धीरे से कहती है- “अरे, सुनो-सुनो.... एक बात कहती हूँ। किसी को बताना नहीं। चूँकि यह सकरा की हत्या का मामला है, जिसे अभी पुलिस-प्रशासन देख रही है।”

“अरे मारो पुलिस-प्रशासन को। जब सकरा ने कई लोगों की हत्या की थी। उस वक्त पुलिस-प्रशासन कहाँ थी। अब सकरा की हत्या की जाँच पुलिस....”

“चुप कर...। मेरी बात तो सुनो। मेरे घरवाले कह रहे थे सकरा के घर से एक पत्र बरामद हुआ है। पत्र मोतिया ने लिखा है।”

“मोतिया.... मोतिया ने पत्र लिखा है? मतलब, मोतिया पढ़ा-लिखा था? पागल के वेश में, वह हमसबों को बेवकूफ बना रहा था ?

उसने पत्र में लिखा है-“मैं कोई पागल-बागल नहीं हूँ मेरे दिमाग की इलाज करवाने की कोई जरूरत नहीं है। मैं, हीं सकरा का कातिल हूँ। सकरा जैसे अपराधी का यही हर्ष होना चाहिये था।”

एक बहन- “मोतिया ने बिल्कुल ठीक किया।”

पत्र को पढ़ते हुए- “जिसने मेरे पिता को मारकर, केवल मेरी माँ के मांग की सिंदूर को नहीं उजाड़ा। बल्कि न जाने कई लोगों की हत्या कर, उन माँ-बहनों के मांग को सूना कर दिया है। अब केवल सरहद पर ही नहीं बल्कि इस गांव के आस-पास के माँ-बहन के मांग की सिंदूर भी सुरक्षित रहेगी।”

“वाह मोतिया वाहतूने कमाल कर दिया। तूने हम सब माँ-बहनों को सुरक्षित जीवन प्रदान किया है। हमारे मांग की सिंदूर की रक्षा की है। तेरा बहुत-बहुत शुक्रिया।”

अरे, आगे तो सुन, उसने पत्र में क्या लिखा है –“अब मेरे सिंदूर, सिंदूर, सिंदूर.. की आवाज, इस गांव के लोगों को नहीं सुनाई पड़ेगी। मैं दूर जा रहा हूँ। हो सके तो मेरी हरकतों की वजह से जिन लोगों को तकलीफ हुई है, कृपया मुझे माफ़ कर देना।”

एक महिला- “न मोतिया... न... तू ऐसे मत कह। तूने सकरा की हत्या कर, हम माँ-बहनों पर बहुत बड़ा एहसान किया है।”

(पत्र को पढ़ते हुए) मैं विशेष रूप से उस सिंदूर बेचने वाले महान भाई से माफ़ी मांगता हूँ जो सिंदूर बेचकर माँ-बहनों के मांग को सिंदूर से सज़ाये रखता है। मैंने आवेश में आकर उसके सिंदूर की डिबिया को जमीन पर फेंक दिया था। सिंदूर बेचने वाले भाई प्लीज.....’

“चलो भगवान को बहुत-बहुत शुक्रिया करो। सकरा के मरने के बाद, किसी माँ-बहन की मांग सूनी नहीं पड़ेगी। क्योंकि सकरा ने अपनी पत्नी की हत्या पहले ही कर दी थी।”

सिंदूर बेचने वाले की आवाज-“सिंदूर ले लो... । सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर..”।

सिंदूर वाला खुश था। सकरा के मरने के बाद, अब उसके सिंदूर की बिक्री कभी नहीं घटेगी।

मोतिया का वर्षों कोई पता नहीं चल सका था। मोतिया के जाने के बाद भी उस गाँव की महिलाओं के कानों में अक्सर सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर.. की आवाज गूंजती रहती थी। सिंदूर.., सिंदूर.., सिंदूर....।



विषाक्त कार्य संस्कृति

(यह लेख श्री प्रदीप कु. प्रमाणिक द्वारा रचित "टॉक्सिक वर्क कल्चर" का हिंदी रूपांतरण है।)



शैलेन्द्र कुमार
सहायक निदेशक
(रा.भा.)

वर्तमान परिदृश्य में आप अपने आस-पास किसी से पूछें - क्या आप खुश हैं? मेरा विश्वास करें कि उनमें से अधिकांश धीमी आवाज़ में जवाब देंगे... बस चल रहा है... या सब ठीक ठाक ही है...

चाहे व्यक्ति पर लक्ष्मी कितनी भी मेहरबान क्यों न हो या वह जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त कर रहा हो, फिर भी आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि आज की पीढ़ी खुश नहीं है। सबसे बड़ी वेदना

यही है कि यह सत्य है और यही सत्य है।

वर्तमान समाज में नवीन स्फुटित युवा पेशेवरों, अधिकारियों, भले ही उनकी स्थिति अथवा आय जो भी हो, उनके द्वारा आत्महत्या के कई मामले समाचार अथवा अन्य माध्यमों से प्राप्त होते हैं। ये घटनाएँ निश्चित रूप से यह साबित करते हैं कि वर्तमान जीवन उतना आसान नहीं है जितना आकर्षक और प्रदीप्तिमान यह प्रतीत होता है। अधिकांश मामलों में यह देखा जाता है कि विषाक्त कार्य संस्कृति, कर्मचारियों का चुपचाप पीड़ित होना ही अत्यधिक तनावपूर्ण परिस्थितियों में जीवन जीने का एक प्रमुख कारण बनता है। शांति की तलाश में कई लोग नौकरी बदलते रहते हैं। यहाँ तक कि एक विभाग से दूसरे विभाग, एक शहर से दूसरे शहर में तबादला भी ले लेते हैं लेकिन उनका तनाव कम नहीं होता। यह केवल आपके कार्यस्थल पर ही नहीं होता है बल्कि तनाव आपके साथ रहता है, आपके साथ चलता है और आपके खुशहाल परिवार में प्रवेश कर जाता है। परिवार व दोस्तों के साथ सुखद क्षणों का आनंद लेने से बहिष्कृत कर एक पूरे माहौल को एक असहज स्थिति में परिवर्तित कर देता है।

विषाक्त कार्य संस्कृति के संकेत:

आप हमेशा उदास, हतोत्साहित, सुस्त महसूस करते हैं, कुछ तनाव संबंधी बीमारियों जैसे रक्तचाप, मधुमेह, जोड़ों के दर्द, भूलने की बीमारी, भूख की कमी, खुशी की कमी, मुस्कराहट, हंसी, एकांत में रहना, पार्टियों या समारोहों से बचना, आक्रामक व्यवहार, छोटी-छोटी बातों पर चिल्लाना आदि से पीड़ित हैं।

कारण

आप पहले से ही तनाव में हैं, आप मानसिक रूप से परेशान हैं, दुखी हैं और शायद अपने कार्यस्थल पर जो कुछ हुआ है उससे बहुत नाराज हैं। यहां यह भी ध्यान दें कि यात्रा संबंधी परेशानियों की बात नहीं की जा रही है जिसका सामना आप रोज़ाना कार्यालय/कार्यस्थल

जाते समय या घर वापस आते समय करते हैं।

तनाव का स्तर आपकी खुशी को इस हद तक खत्म कर देता है कि आप अपनी पत्नी या पति या यहाँ तक कि अपने प्यारे बच्चे पर भी मुस्कराना भूल जाते हैं। मानसिक विकारों के बढ़ते मामले जैसे कि अत्यधिक आक्रामक व्यवहार, सड़क पर दौड़ना, अपने सहकर्मियों, परिवार के सदस्यों के साथ बहस करना, अपने बेटे या बेटी को पीटना या शारीरिक रूप से प्रताड़ित करना रोज़मर्रा की दिनचर्या बन गई है। यह चलन इतनी तेज़ी से सभी को अपनी गिरफ़्त में ले रहा है कि मानसिक स्वास्थ्य पर नए अध्ययन व अनुसंधान समय की मांग बन गए हैं।

इस विषय पर आगे कदम बढ़ाने से पहले आइए देखें कि विषाक्त कार्य संस्कृति क्या है और कार्यस्थलों पर विषाक्त कार्य संस्कृति के क्या कारण हैं..??

सरल शब्दों में विषाक्त का अर्थ है एक पदार्थ या रसायन जो स्वस्थ शरीर को विषयुक्त कर देता है या आसपास के वातावरण को असुविधाजनक, असहनीय, अस्वस्थ, जहरीला, घातक और अरुचिकर बना देता है और यह आपको इससे बचाव के लिए तुरंत विषाक्त पदार्थ के प्रभाव से दूर रहने के लिए मजबूर करता है।

जब हम विषाक्त कार्य संस्कृति के बारे में बात करते हैं तो वास्तव में विषाक्त कार्य संस्कृति स्पष्ट रूप से आपके कार्यस्थल की अस्वस्थ, असुविधाजनक, असहनीय कार्य स्थितियों के बारे में बताती है। जहाँ रहना या कार्य को जारी रखना संभव नहीं होता है। लेकिन क्या यह पहले नहीं था? वास्तव में यह सर्वदा से था। लेकिन आपके कार्यालय या व्यवसाय के आकार की परवाह किए बिना कार्यस्थलों में विषाक्तता की डिग्री, पेशेवर या व्यक्तिगत रूप से हमारे जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

आखिर आजकल उद्योग क्षेत्र या अन्य कार्यस्थलों पर विषाक्त कार्य संस्कृति में वृद्धि के क्या कारण हैं?

क) कैरियर की दौड़ में तेज़ी से आगे बढ़ने की इच्छा, अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों या गुरुओं, अपने आइकॉन या साथियों द्वारा बचपन से ही प्रेरित होकर जहाँ आपको अपनी पढ़ाई, अपने खेल, अपनी पाठ्यचर्या गतिविधियों में हर जगह उत्कृष्टता प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसके लिए हम प्रयास तो कर सकते हैं परंतु हम सभी को प्रत्येक स्थान पर शीर्ष पर ही होना है। यही समस्या की जड़ बन जाती है।

ख) अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों या जीवनसाथी से ज़्यादा



कमाने की इच्छा, अपने पड़ोसियों, चचेरे भाइयों, अपने सहकर्मियों, अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने का दबाव इन सब में दबकर हम सब ईमानदारी और निष्ठा का मार्ग भूल चुके हैं।

आपके करियर या जीवन का उद्देश्य बदल जाता है। आपके जीवन का रंग भाव सबसे आगे रहने की लालसा और लालच द्वारा नियंत्रित होता है। जब आपकी नैतिकता, सिद्धांत आपके एजेंडे से गायब हो जाते हैं, तो आपको पता ही नहीं चलता कि आप कब एक अलग व्यक्ति बन गए हैं। एक व्यक्ति जिसका उद्देश्य सफेद या काले में भेद-भाव किए बिना धन-संपत्ति इकट्ठा करना है।

- ग) आपके कार्यस्थल पर या यहां तक कि आपके परिवार में भी अगर आप संयुक्त परिवार में रहते हैं या जिस समाज में आप रहते हैं, वह अपना असर दिखाना शुरू कर देता है। सबसे पहला संकेत ईर्ष्या है, वह बॉस का पसंदीदा क्यों है या किसी को पदोन्नति या वेतन वृद्धि क्यों मिलती है या बैठकों या पार्टियों या दोपहर के भोजन या चाय के ब्रेक के दौरान इकट्ठा होने के दौरान उसकी सराहना क्यों की जाती है?
- घ) सबसे आम कारक जो मायने रखता है वह बहुत कुछ हो सकता है जैसे आपकी जाति, धर्म, आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि यहां तक कि आपकी त्वचा का रंग या रूप भी। ये सब चर्चा के विषय बन जाते हैं।
- च) वरिष्ठ प्रबंधकों, एच.आर. या नियोक्ताओं के साथ आपकी निकटता आपके कार्यस्थल पर प्रतिद्वंद्वियों या यहाँ तक कि दुश्मनों की संख्या बढ़ा सकती है, जिससे किसी भी साधारण शांतिप्रिय, प्रगतिशील युवा पेशेवरों के लिए यह बहुत अधिक विषाक्त हो सकता है। साथ ही ये विषाक्त कार्य संस्कृति का शिकार भी हो सकते हैं।
- छ) आपके सकारात्मक गुण भी विकास में बाधा बनते हैं। वास्तव में ईमानदारी, निष्ठा, परिश्रम, आपका सहायक स्वभाव, आपकी सॉफ्ट स्किल, समय की पाबंदी, बेहतर प्रदर्शन जैसे आपके सकारात्मक गुण संगठन के भीतर आपके विकास में बाधा बन सकते हैं। कई बार अच्छे कर्मचारी भी इस विषाक्त कार्य स्थिति के कारण नौकरी छोड़ना पसंद करते हैं।
- ज) आपकी पाठ्यतर गतिविधियाँ या उपलब्धियाँ भी आपके कार्यस्थल को विषाक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि अन्य कार्मिक कभी-कभी आपकी उपलब्धियों से निराश और ईर्ष्यालु महसूस करते हैं।

विषाक्त कार्य संस्कृति का वर्गीकरण:

व्यापक रूप से इसे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

- क) मानवीय व्यवहार जैसी अमूर्त कारक जैसे आपके सहकर्मियों के साथ पारस्परिक संबंध, विशेष रूप से आपके वरिष्ठों के साथ आपका मानवीय स्वभाव, आपकी सहानुभूति, आपकी ईमानदारी, निष्ठा, आपके सॉफ्ट स्किल्स इन सब गुणों से भी अन्य सहकर्मी आपसे नफरत करते हैं।
- ख) मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने स्पष्ट रूप से इन अपमानजनक व्यावहारिक कार्य स्थितियों का आपके शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य से संबंध स्थापित किया है। जिसके कारण रक्तचाप, दिल का दौरा, मनोभ्रंश, अरुचि, कामेच्छा, व्यवहार में आक्रामकता, यहां तक कि इनसे दूर जाने के लिए शराब की लत भी हो सकती है। परंतु आप इससे जितना दूर होना चाहते हैं यह उतना ही आपको जकड़ लेता है। यह एक दलदल रूपी स्थिति उत्पन्न करता है। एक और कारक है हालांकि यह दुर्लभ रूप में पहले भी था लेकिन आजकल यह एक प्रवृत्ति बन गई है जिसे स्वीकार्य या स्वस्थ नहीं कहा जा सकता है और वह है अपने सहकर्मियों से यौन संबंध की मांग करना। इनमें ज्यादातर मामलों में अपने कनिष्ठ महिला सहकर्मियों को कुछ खास लाभ प्रदान करने के लिए यौन संबंधों की मांग करना है।

आज ज्यादातर संगठन, चाहे वह कॉर्पोरेट हो, छोटा कार्यालय हो, शैक्षणिक संस्थान हो, अस्पताल हो या होटल हो, फिल्म, टीवी या मॉडलिंग उद्योग हो, खेल हो, राजनीति हो, जहां भी महिला-पुरुष कर्मचारी एक साथ काम करते हैं, आपको ऐसी चीजें बहुत आम मिलेंगी। अधिकांश मामलों में महिलाएं जीवन यापन को बचाए रखने के लिए सबकुछ सहन करती हैं इसे छुपाती हैं और परिस्थिति को स्वीकार करती हैं। हालांकि कभी-कभी तो महिलाएं भी इस दुष्चक्र का हिस्सा बन जाती हैं। लेकिन कई महिलाएं अपनी नौकरी, अपने पेशेवर नैतिकता और अपने परिवार की प्रतिबद्धताओं के प्रति ईमानदार होती हैं। वे ऐसे प्रलोभनों के आगे नहीं झुकती हैं। इसलिए उन्हें अप्रत्यक्ष अपमान का सामना करना पड़ता है, जिससे कार्यस्थल उनके लिए विषाक्त हो जाता है।

आगे हम निम्नलिखित कारकों की ओर इशारा कर रहे हैं जो किसी भी संगठन में विषाक्त कार्य संस्कृति को जन्म देते हैं:

1. वरिष्ठ कार्मिकों या सहकर्मियों का अपमानजनक व्यवहार: यह उन प्रमुख कारणों में से एक है जो काम को अप्रिय, तनावपूर्ण बनाते हैं और विषाक्त कार्य संस्कृति को जन्म देते हैं।
2. अत्याधिक या अवास्तविक व्यावसायिक उद्देश्य/लक्ष्य: यह दूसरी सबसे प्रचलित कार्यशैली है जो कार्यस्थल को विषाक्त बनाती है।



3. पूर्वाग्रही मानसिकता अथवा दृष्टिकोण के आधार पर वरिष्ठ कार्मिकों या मानव संसाधन प्रबंधकों द्वारा खराब मूल्यांकन विषाक्त कार्य संस्कृति को बढ़ाता है।
4. धीमी कैरियर वृद्धि: किसी भी संगठन में सेवा करते समय, व्यक्ति समय के साथ पद में वृद्धि की उम्मीद करता है। लेकिन अगर आपको इसमें कमी लगे या यह बहुत धीमी लगती है, तो आप बिना किसी देरी के बाहर निकल जाते हैं।
5. वेतन या प्रोत्साहन का अनियमित भुगतान: हर किसी को समय पर पैसे की जरूरत होती है, लेकिन अगर उन्हें वक्त पर पैसे नहीं मिलते हैं तो यह कार्मिकों को हतोत्साहित करता है।
6. विभाग, अनुभाग या पदों में बार-बार बदलाव: कई बार आपका बॉस अधीनस्थों के साथ विभिन्न प्रकार के प्रयोग करते रहते हैं और कभी-कभी जूनियर को दंडित करने के लिए, टेबल, विभाग, अनुभागों को बदलते रहते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि आपको अपने बॉस की शक्ति का एहसास हो।
7. हायर एंड फायर पॉलिसी: यह एक चलन है, ज्यादातर लोगों के लिए नौकरी के अवसरों की कमी ने इस नीति को कुछ उद्योगों में सबसे पसंदीदा बना दिया है। खासकर बैंकिंग, बीमा, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों, ई-कॉम ऐसे क्षेत्र हैं जहां काम करना उपयुक्त नहीं रह जाता।
8. स्टार्ट-अप: सभी नवीन नौकरी चाहने वालों के लिए सावधान करने वाला शब्द है 'स्टार्ट अप'। हालांकि युवाओं को चाहिए कि किसी भी नवीन संगठन में शामिल होने का फैसला करने से पहले, सुनिश्चित करें कि आप उनकी साख की जांच कर लें क्योंकि अधिकांश कर्मचारी अगले 3-4 महीनों में ठगा हुआ महसूस करते हैं जब उन्हें समय पर भुगतान नहीं किया जाता है, कोई कार्य शेड्यूल नहीं होता है, कोई उचित छुट्टी नियम नहीं होता है, कोई पीएफ या अन्य सरकारी अनिवार्य नियमों का पालन नहीं किया जाता है। ऐसे मामलों में आपको अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता होती है और जल्द से जल्द बाहर निकलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।
9. आंतरिक राजनीति, बहुत उदार प्रशासन, अनियंत्रित गपशप आदि भी कई कारकों में से एक होते हैं। बहुतेरे ऐसे कार्यालय होते हैं जहां वरिष्ठ कार्मिक अपनी इंद्रियों की तुलना में कानों पर भरोसा करते हैं।
10. पुराने कर्मचारियों के प्रति लापरवाह प्रबंधन दृष्टिकोण जबकि नए कार्मिकों पर अत्यधिक कार्य का दबाव भी विषाक्तता को जन्म देता है।
11. व्यक्तिगत जीवन के प्रति सम्मान की कमी: कुछ नियुक्ता महसूस करते हैं, कर्मचारी उनके गुलाम हैं जिनका कोई व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन नहीं है। कर्मचारियों को देर रात

तक काम करना पड़ता है। बीमार माता-पिता या परिवार के सदस्यों की देखभाल करने के लिए आवश्यकता होने पर कोई छुट्टी नहीं मिलती।

12. कार्य निष्पादन मूल्यांकन या दंड के लिए कार्यालय में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी।
13. पदोन्नति, स्थानांतरण आदि के लिए कोई समयबद्ध मूल्यांकन का न होना।
14. बेहतर प्रदर्शन करने वालों के लिए कोई पुरस्कार, सम्मान या प्रशंसा या प्रोत्साहन का अभाव।
15. वरिष्ठ कार्मिकों के साथ संचार चैनलों की कमी।
16. भाषा, रूप या पहनावा यहाँ तक कि आपके लंच पैक या टिफिन बॉक्स की सामग्री भी आपके जीवन को दफ़्तरों में नरक बना देती है जहाँ कभी-कभी आपको घृणा महसूस होती है।
17. महिला केंद्रित टीम सहित PoSH प्रावधानों जो कहीं अधिक गंभीर मुद्दों को देखता है, उसके अभाव में भी कई विसंगतियाँ होती हैं। ज्यादातर मामलों को तो रिपोर्ट भी नहीं किए जाते हैं। अधिकांश मामलों में महिला कर्मचारी वैसे मामलों को बढ़ने से रोकती हैं, अनदेखा करती हैं या टालती हैं, जिससे उनकी व्यक्तिगत छवि या परिवार को नुकसान पहुँचता हो।

विषाक्त कार्य संस्कृति से छुटकारा पाने के उपाय:

इसे मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

क. परिस्थितियों का नियंत्रण में होना: आपके नियंत्रण में जब कोई कर्मचारी विशेषकर महिला कर्मचारी, आपके कार्यस्थल पर कुछ ऐसी चीजें पाता है जो आपको असहज कर रही हैं, तो अपने करीबी दोस्तों या सहकर्मियों को इसमें शामिल करें और इसे उच्च अधिकारियों के ध्यान में लाएँ जिससे कि वे इसपर उचित कार्रवाई कर सकें।

ख. परिस्थितियों का अनियंत्रित होना: यदि उनका दृष्टिकोण सहयोगात्मक नहीं है, तो आप पुलिस या श्रम विभाग से शिकायत कर सकते हैं या यदि आप डरे हुए हैं तो चुपचाप ऐसी विषाक्त कंपनी से बाहर निकल जाएँ ताकि आपका सम्मान, जीवन की शांति और आपके परिवार में शांति बनी रहे।

कृपया ध्यान दें कि आपने कुछ कर्मचारियों के बारे में पढ़ा होगा जो अपने कार्यालय में उत्पीड़न को बर्दाश्त नहीं कर पाए, वे इस घटना को अपने परिवार के साथ साझा नहीं कर सके, आत्महत्या कर ली। कृपया ऐसा कभी न सोचें। आपका जीवन इस विषाक्त नौकरी से अधिक कीमती है। बेहतर होगा कि आप ज़िंदगी की जंग समझ कर लड़ें और यह साबित करने के लिए वापस आएँ कि यह अंत नहीं है। बल्कि यह एक दूसरा अवसर है यह साबित करने का कि आप इस विषाक्त संगठन या कैरियर से बेहतर संगठन या कैरियर के हकदार हैं।

हिंदी फिल्मों का सामाजिक प्रभाव: स्त्री दशा के परिप्रेक्ष्य में



इंद्र कुमार झा
व. लेखापरीक्षा
अधिकारी

हिंदी फिल्मों का भारतीय समाज पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है। दुर्भाग्य की बात है कि देश के आम नागरिकों एवं दर्शकों के दिमाग में बैठा दी गई है कि फिल्मों का काम दर्शकों का मनोरंजन करना है एवं इसका कोई सामाजिक सरोकार नहीं है। हिंदी फिल्मों से दर्शकों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना बढ़ी है। हिंदी फिल्मों ने विदेशियों और अहिंदी भाषियों को भी हिंदी सीखने पर मजबूर कर दिया है। भले ही वे खुलकर धाराप्रवाह हिंदी बोलने- लिखने में सक्षम नहीं हों, इसके बावजूद वे हिंदी गानों का मुखड़ा अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के साथ-साथ हिंदी फिल्मों के संवाद सीखने में रुचि दिखाते हैं। हिंदी फिल्मों के चलते विदेशियों में भारत को जानने की उत्सुकता बढ़ी है और वे भारत का रुख करने लगे हैं।

आज से करीब तीन हजार वर्ष पूर्व भरतमुनि द्वारा रचित संस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में भरतमुनि ने कहा है कि नाट्य कर्तव्यपरायण लोगों को कर्तव्य सिखाता है। वह मूर्खों को बुद्धि और विद्वानों को ज्ञान देता है। नाट्य विभिन्न भावों से ओत-प्रोत है और विभिन्न स्थितियों का चित्रण करता है और उससे साहस, मनोरंजन तथा प्रसन्नता के साथ-साथ मार्गदर्शन भी प्राप्त होता है।

नाट्यकला में अभिनय के माध्यम से भावों को व्यक्त किया जाता है और वही फिल्मों में भी भावों को अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रकार नाट्यकला और फिल्म एक दूसरे के पूरक हैं। 1913 में भारत में दादा साहेब फाल्के ने राजा हरिश्चन्द्र नामक पहली फीचर फिल्म बनाई। उन्होंने जो रास्ता दिखाया उसपर बाद में कई प्रतिभावान और समर्पित फिल्म निर्माता चले। उन्होंने अपने फिल्मों के माध्यम से सामाजिक, स्त्री सुधार, राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने वाले फिल्मों का निर्माण कर लोगों में चेतना फैलाई। शुरुआत से ही सामाजिक प्रभाव वाली फिल्मों के माध्यम से जैसे 'सावकारी पाश', 'अछूत कन्या', 'बालयोगिनी', 'धरती के लाल', 'रोटी', 'पड़ोसी', 'आदमी' आदि फिल्मों से शुरू होकर 'तारे जमीं पर', 'टॉयलेट एक प्रेम कथा', 'पीपली लाइव', 'सितारे जमीं पर' जैसी फिल्में बनीं।

हिंदी फिल्मों में महिला प्रधान फिल्में भी बनी हैं और साठ के दशक से शुरुआत होकर ये सिलसिला अब तक चल रहा है। इन महिला प्रधान फिल्मों ने महिलाओं की स्थिति में जबरदस्त सुधार लाया और महिलाएं बेड़ियों से मुक्त होकर हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिला को देवी और पूजनीय बताया गया जबकि हकीकत इससे कोसों दूर है। फिल्मों में भी उसके प्रति ऐसा ही व्यवहार होता रहा है। सितारा बनने तक की यात्रा के अनुभव कटु होते हैं। सितारा हैसियत जाते ही सब कुछ बदल जाता है।

भारतीय समाज में स्त्री और पुरुष के लिए दोहरे मापदंड हैं और सिनेमा उद्योग में भी यह कायम है। किसी भी कालखण्ड में महिला अभिनेत्रियों को अभिनेताओं के समान मेहनताना नहीं मिला, भले ही वे नरगिस, नूतन, मीना कुमारी, हेमा मालिनी, श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित जैसी विलक्षण अभिनेत्री क्यों न हो।

कुछ फिल्मों में महिला अभिनेत्रियों के सशक्त अभिनय से सजी हुई हैं जिसे शिद्ध से की गई भावपूर्ण अभिनय ने उन फिल्मों को और उनके किरदारों को अमर कर दिया है। इस कड़ी में पहला नाम मदन इंडिया का आता है। सामंती उत्पीड़न और गरीबी के बीच पिस रही एक मेहनतकश औरत राधा के किरदार को नरगिस ने अपने अभिनय से जीवंत कर दिया है। उसके चरित्र में नारीवादी चमक और आक्रामकता है जो कठिन फैसले खुद लेती है और उसके परिणाम के लिए तैयार रहती है। वह व्यवस्था के हाथों पराजित होने से मना कर देती है। दूसरी फिल्म 'साहब बीबी और गुलाम' में छोटी बहू अर्थात् मीना कुमारी का किरदार हिंदी सिनेमा के इतिहास में सबसे मुखर किरदार रहा है। तीसरी फिल्म 'गाइड' की रोजी (वहीदा रहमान) उस स्त्री का प्रतीक है जिसके सपने पर बेड़ियां हैं। रोजी खुद से लड़ती ऐसी पात्र है जो द्वंद्व में फंसी है। चौथी फिल्म 'चक दे इंडिया' में ग्यारह आम लड़कियां अपने छोटे-छोटे सपनों और साधारण जिंदगियों के साथ अपने मूल भाव में उपस्थित हैं।

एक दौर था जब फिल्मों में महिलाओं का किरदार भी पुरुष द्वारा ही निभाया जाता था। भारत की प्रथम व्यवसायिक फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' में तारामती की भूमिका पुरुष कलाकार अन्ना सांलुके ने निभाई। 1917 में बनी 'लंका दहन' में अन्ना सांलुके ने राम के साथ सीता का चरित्र भी निभाया। बाद में महिलाएं अभिनेत्रियों के रूप में सामने आना शुरू कीं, किंतु प्रारंभिक दौर में महिलाओं का फिल्मों में आना अच्छा नहीं माना जाता था। बाद में अच्छे संभ्रांत परिवार की लड़कियां भी फिल्मों में आकर कैरियर बनाने लगीं। यहां तक कि कई अभिनेत्रियां तो शादी के बाद भी अपनी दूसरी पारी में बेहतरीन फिल्में दीं। अभिनेत्री नूतन ने शादी के बाद 'छलिया', 'सूरत और सीरत', 'दिल ही तो है', 'तेरे घर के सामने', 'बंदिनी', 'सरस्वती चंद्र' जैसी कई बेहतरीन फिल्में शादी के बाद ही कीं। इसी प्रकार, अभिनेत्री शर्मिला टैगोर ने शादी के बाद अपनी दूसरी पारी में 'अमर प्रेम', 'अमानुष', 'चुपके-चुपके', 'सफर', 'दाग', 'मौसम', 'खुशबू' जैसी फिल्में दीं। अभिनेत्री नूतन अपनी ठोस स्त्रीवादी उपस्थिति और अपार सफल स्त्री प्रधान फिल्मों से भी सुपरस्टार का दर्जा नहीं प्राप्त कर सकीं। माधुरी दीक्षित, हेमा मालिनी एवं श्री देवी की नृत्य में निपुणता और अनगिनत फिल्मों में दमदार अभिनय के बावजूद उन्हें सुपरस्टार का दर्जा नहीं दिलवा सकीं। मीना कुमारी की आंसूओं भी किरदार की बहुलता और दुखांत फिल्मों में भी उन्हें ट्रेजडी क्वीन का दर्जा नहीं दिलवा सकीं। इसके विपरित अभिनेताओं को सुपरस्टार और ट्रेजडी किंग का दर्जा दिया गया।



लोकप्रिय हिंदी फिल्मों भारतीय समाज के शहरी मुखड़े को दिखाता है जिसे सामाजिक एकीकरण और भारतीय संस्कृति का उदार चेहरा कहा जाता है।

आजकल यही चलन में आ गया है कि पूरी तरह नायकों के कंधे पर टिकी फिल्मों में एक नायिका को रख लिया जाए, जो नायक के साथ कुछ गाने गा सके और अपनी बोल्ट छवि प्रस्तुत करे। इसके लिए उन्हें फिल्म के शुरू होने से पहले ही बता दिया जाता है।

शांताराम ने 1937 में 'दुनिया न माने' फिल्म बनाई थी जिसमें एक ऐसी अनाथ लड़की की कहानी है जिसे पढ़े-लिखे होने के बावजूद उसके रिश्तेदार रूपए-पैसे लेकर छलपूर्वक एक उम्र दराज आदमी से ब्याह देते हैं। लड़की विरोध करती है किंतु सामाजिक अनुशासन के कारण उसकी सुनवाई नहीं होती।

इसके बाद विमल राय की 'परिणीता' से लेकर 'बंदिनी' तक फिल्मों की लंबी श्रृंखला है जिसमें हमें संवेदना और अंतर्द्वंद्व के अनेक फलसफे देखने को मिलते हैं। मैं खुद स्त्री प्रधान फिल्मों का शौकीन रहा हूँ। रांची के रोस्पा टावर स्थित दूकान से पुरानी फिल्मों की सीडी/डीवीडी लेकर वीसीडी पर फिल्में देखकर अपने शौक को पूरा किया हूँ। शरतचंद्र के उपन्यास पर आधारित 'परिणीता', 'बिराज बहू' और 'देवदास' थी। इनमें से 'परिणीता' और 'देवदास' फिल्म को अन्य निर्देशकों ने भी बनाया। 'परिणीता' फिल्म की ललिता का जीवन उसके अपने सपनों और आकांक्षाओं से इतर पारिवारिक विडंबनाओं, कृपा और सदाशयता पर निर्भर है। इसी तरह बिराज बहू की नायिका बिराज का सुंदर होना ही उसके लिए अभिशाप बन जाता है। विमल राय की फिल्में 'बंदिनी', 'सुजाता', 'दो बीघा जमीन' अलग-अलग धरातल पर स्त्री संवेदना की पड़ताल करती हैं। 'दो बीघा जमीन' फिल्म में नायक की पत्नी गांव में रहकर अपने घर, पुरखों, अपनी इज्जत सब को बमुश्किल बचाते हुए एक अलग तरह से समय का निर्वाह कर रही है।

'बंदिनी' में परिस्थितियों और विचलन से भरे जीवन में अपराधिनी बन गई कल्याणी की कहानी है। इस फिल्म में एक स्त्री का जीवन, उसकी इच्छाएं और फैसले उसे जेल की सलाखों के पीछे से अपने अतीत की ओर लौटाते हैं।

फिल्म में कल्याणी का चरित्र ऐसा है जहां पीड़ा उसकी सहचरी तो है लेकिन वह उसे कमजोर नहीं करती। वह नियति की बंधक है और खुद ही नियति से मुक्त होने का फैसला लेती है।

विमल राय की फिल्मों के संपादक और उनके सहायक ऋषिकेश मुखर्जी ने उन्हीं की परंपरा को आगे समयानुसार विस्तार दिया। ऋषिकेश मुखर्जी की 'अनुपमा', 'आशीर्वाद', 'मेम दीदी', 'अनुराधा', 'मिली', 'खुबसूरत' जैसी फिल्मों में हम स्त्री का परिप्रेक्ष्य अलग-अलग बिंबों में देखते हैं।

अनुपमा एक ऐसी युवती की कहानी है जिसका जन्म ही उसके लिए अभिशाप बन जाता है क्योंकि जन्म के वक्त ही उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। पिता हमेशा बेटी को उसके जन्म को अपनी पत्नी के मृत्यु का कारक मानता है और उससे नफरत करता है।

'अनुराधा' फिल्म में भावपूर्ण ढंग से यह दिखाया गया है कि बहुत सारे स्वभाविक समझौतों को करते हुए एक स्त्री अपनी पहचान में से बहुत कुछ खो देती है। फिल्म 'मेम दीदी' में ललिता पवार का किरदार उनकी छवि के विपरीत बहुत संवेदनशील गढ़ा गया है।

यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि विमल राय, ऋषिकेश मुखर्जी जैसे फिल्मकार जो हिंदीतर क्षेत्रों से आए थे, ने देश के जनमानस की भाषा हिंदी को ही अपने कला का माध्यम बनाया और कालजयी फिल्मों का निर्माण कर देश को अलग ही संदेश दिया।

समांतर सिनेमा के दौर में फिल्मकार श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर', 'निशांत', 'मंथन' और 'भूमिका' में स्त्री विमर्श ही केंद्र में है। 'भूमिका' फिल्म अभिनेत्री हंसा वाडकर के जीवन पर ही केंद्रित थी जिसे स्मिता पाटिल ने अपनी उत्कृष्ट अभिनय से अविस्मरणीय बना दिया। श्याम बेनेगल ने बाद में 'मम्मो', सरदारी बेगम' और 'जुबेदा' जैसी स्त्री प्रधान फिल्में बनाई जो स्त्री किरदारों की अलग-अलग पड़ताल करती हैं।

मेरी पसंदीदा अभिनेत्री मीना कुमारी रही हैं जिनकी बहुत सारी फिल्मों को मैंने यूट्यूब, टीवी, डीवीडी पर देखा। उनकी आवाज में इतनी प्यास, इतनी कसक और इतनी तड़प थी जैसे कोई रेगिस्तान को ताउम्र पार करता रहा.... प्यास में भटकता। उनकी आँखें जब बोलती, शब्द बेमानी हो उठते। उनकी आँखों में इतनी करुणा थी, इस कदर रूलाने वाली और पाकीजगी से आकंठ लबालब कि कठोर दिलवाला भी सहम जाए।

फिल्म "साहब बीबी और गुलाम" के गाने "न जाओ सैंया..." में उनकी जो अभिव्यक्ति है वह अभिनय की अंतिम मिसाल है। सिर्फ आँखों के अभिनय से जटिल संप्रेषण की कला का अप्रतिम उदाहरण है। उनकी अभितीत फिल्मों "पाकिजा", "कोहिनूर", "बैजू बाबरा", "परिणीता", "बंदिश", "शारदा", "दिल अपना और प्रीत परायी", "मैं चुप रहूंगी", "आरती", "काजल", "चित्रलेखा", "मंझली बहू", "चंदन का पालना", "पिंजरे का पंछी" आदि में हमें भारतीय स्त्री के अनेक रंग मिलते हैं।

आजादी के पूर्व से लेकर आज के युग में भी सामाजिक क्रांति और उत्थान के क्षेत्र में हिंदी फिल्मों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। धर्मनिरपेक्ष भारतीय समाज के गठन में भी फिल्मों की भूमिका महत्वपूर्ण है। हिंदी फिल्म आज भी भारतीयता की बात करता है। अब सिनेमा में ऐसे विषयों को शामिल किया जा रहा है जो पहले वर्जित थे और जिनपर अभी भी प्रिंट मिडिया में विचार विमर्श नहीं किया जाता।

सामाजिक पूर्वाग्रहों और विषमताओं को दूर करने के प्रयास भी इस विधा के जरिए शुरू से किए जा रहे हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भारतीय जन भावनों के मापने का सही पैमाना लिखित साहित्य से ज्यादा हिंदी फिल्म से ही सिद्ध हुआ है। यह माध्यम भारतीय जनमानस में गहराई तक पैठ बना चुका है।

प्रशंसा पत्र

हि.क./लेख/प.पा./2024-25/

1/994198/2025

महालेखाकार (ले व ह), केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम-695001



OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/

दिनांक 03-06-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखवर (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,
झारखण्ड, राँची

महोदय/महोदया,

विषय : राजभाषा गृह पत्रिका 'उदयाचल' के 42वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।
संदर्भ : आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 30.05.2025

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी ई-पत्रिका 'उदयाचल' के 42वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री इंद्र कुमार झा का लेख 'श्राप या वरदान-विधि का विधान', श्री दिलीप कुमार मिश्रा की कविता 'सुथ पकड़कर माई का', श्री शंभू शरण भारती की कविता 'वृद्धाश्रम', श्री अमित कुमार रवि का लेख 'भोजन की बर्बादी: एक गंभीर समस्या', सुश्री रीतिवत् मोनी का लेख 'आंतरिक शक्ति अर्थात् इम्यूनिटी' एवं डॉ. शिप्रा शालिनि का लेख 'वाणी' आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं ।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका 'उदयाचल' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिंदीकक्ष/पत्रिकाओंकीपावती/2024-25/36(2)

1/1004771/2025



ಮಹಾಲೇಖಾಕಾರ (ಲೆ. ವ. ಹ.) ಕರ್ನಾಟಕ, ಭಾರತೀಯ
ಅರ್ಥಶಾಸ್ತ್ರೀಯ ಪರೀಕ್ಷಾ ವಿಭಾಗ
ಮಹಾಲೇಖಾಕಾರ (ಲೇಖಾ एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department



सं. म.ले.(ले.व.ह.)/हि.क./2025-26/63

दिनांक :10.06.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखवर (लेखापरीक्षा) का कार्यालय
झारखण्ड, राँची

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "उदयाचल" के 42वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "उदयाचल" के 42वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री अजित कुमार तिवारी का लेख- 'जिम्मेदार लड़के', श्री शैलेन्द्र कुमार का लेख- 'अनुवादवाला', श्री शंभू शरण भारती की कविता- 'वृद्धाश्रम', श्री सदानन्द नरकर की कविता- 'ये जिंदगी दुबारा मिले न मिले', डॉ. श्री मंजेश परासर की कहानी- 'बाजी' प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
<https://cag.gov.in/ae/karnataka/en>

सं.लेप.11(हिंदीकक्ष)/पत्रिका/2023-24

1/1007640/2025

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनन्तपुरम - 695 001



OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.11/हिंदी कक्ष/ पत्रिका/2025-26

दिनांक : 12-06-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखंड, राँची

महोदय,

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित छमाई राजभाषा पत्रिका "उदयाचल" के 42वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहस्र धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है । सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर, श्री अजित कुमार तिवारी द्वारा रचित लेख 'जिम्मेदार लड़के', श्री अमर आनंद मिश्र द्वारा रचित 'नीम का पत्ता' तथा श्री दिलीप कुमार मिश्रा द्वारा रचित कविता 'हाथ पकड़ कर माई का', श्री सदानन्द नरकर जी द्वारा रचित कविता 'ये जिंदगी दोबारा मिले ना मिले' अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)/हिंदी कक्ष

हिंदीकक्ष/समीक्षा/4-10/2023-24/

1/1033586/2025

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) PUNJAB & U.T.
CHANDIGARH-160017

सं.- रा.भ.अनु./पत्रिका समीक्षा/10/25-26/

दिनांक- 02.07.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)
झारखंड, राँची

विषय: कार्यालय की अर्धवार्षिक ई-पत्रिका 'उदयाचल' के 42वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'उदयाचल' के 42वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

पत्रिका में श्री शंभू शरण भारती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'वृद्धाश्रम', श्री अजित कुमार रवि, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'भोजन की बर्बादी : एक गंभीर समस्या', तथा श्री सुबोध कुमार, कनिष्ठ अनुवादक की रचना 'तमशा' विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका को सुरक्षित एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिचर ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

यह पत्र उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899

ई-मेल / e-mail : agakerala2@cag.gov.in
वेबसाइट / Website : <https://cag.gov.in/ag2/kerala/en>

फैक्स / Fax – 0471-2332022



प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में राज्य लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक का आयोजन



राज्य लेखापरीक्षा सलाहकार बोर्ड के सदस्य का स्वागत करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते डॉ. मंजेश परासर, सहायक निदेशक (राजभाषा)



नराकास की बैठक में श्री सदानंद नस्कर, उप महालेखाकार द्वारा दीप प्रज्ज्वलन



प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन